Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

3238
910.4
3238 भ

CC-0. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

भारत-भ्रमण

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

राज्य संग्रहालय पुस्तकालय, लखनऊ
क्रम संख्या 3238
प्राप्ति तिथि 23/7/66
State Museum, Library, Lko.

राज्य संग्रहालय पुस्तकालय लखनऊ

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

भारत-भ्रमण

लेखक
डॉ० भगवतशरण उपाध्याय

प्रकाशक
सर्वोदय-साहित्य-प्रकाशन
गोलघर, वाराणसी

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

प्रकाशक
सर्वोदय-साहित्य-प्रकाशन
गोलघर, वाराणसी

910.4
3 ऋ

सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन
प्रकाशक : सर्वोदय-साहित्य-प्रकाशन
मूल्य : ~~एक रुपया~~
दिसम्बर सन् १९६३

पुनर्मूल्यित मूल्य
१-५०

मुद्रक
जीवन-शिक्षा-मुद्रणालय
गोलघर, वाराणसी

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कश्मीर

कश्मीर हिमालय की प्रिय घाटी है जिसे प्रकृति ने अपने हाथों सँवारा है। संसार भ्रमण करने वाले यात्री से अगर पूछा जाय कि उसने प्रकृति का ऐसा सौन्दर्य भूमंडल में और कहीं भी देखा है तो उसे बताना कठिन हो जायगा। करा-कोरम की बर्फीली पर्वतमाला के साये में घाटियाँ और जंगल, वन और झील बिखरे पड़े हैं। सही कश्मीर को "मोतियों में जड़ा पन्ना" कहा गया है। पर्यटकों के लिए तो कश्मीर स्वर्ग है।

उत्तर में कराकोरम की श्रृंखला के बीच सिन्ध नदी कश्मीर का परकोटा बनती है, दक्खिन में पीरपंजाल और जम्मू है, पूरब में लद्दाख और तिब्बत है और पश्चिम में चित्राल और अफगानिस्तान है। झेलम घाटी और श्रीनगर के भीतर से होकर बहती है। कश्मीर में पाँच-पाँच देशों की सीमाएँ मिलती हैं—पाकिस्तान, अफगानिस्तान, सोवियत रूस, चीन और भारत की। गिलगित नदी के पार पामीर पहाड़ों की "दुनिया की छत" है जो रूस में है और जिससे होकर आमू दरिया बहती है।

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कश्मीर की सदा की राजधानी श्रीनगर झेलम के दोनों ओर बसा है। नदी के ऊपर नगर में सात-सात पुल हैं। नगर मन्दिरों और मस्जिदों से भरा है। नदी के तीर अनेकानेक घाट हैं और नदी की धाराएँ जो अनेक दिशाओं में बह गयी हैं तो लगता है कि जैसे उस धारा पर वेनिस उतर आया हो। नदी में महलनुमा नावें रहती हैं जिन्हें शिकारा कहते हैं। लोग दूर-दूर से आकर इन्हीं शिकारों में महीनों पड़े रहते हैं, जब चाहते हैं लंगर उठाकर जहाँ चाहा चले जाते हैं।

कश्मीर बगीचों और झीलों का देश है। बगीचों में संसार के सबसे मीठे और सुन्दर सेब होते हैं। देश की सुन्दरता मुगल बादशाहों की नजर पर छा गयी थी और उन्होंने बड़ी लगन से उसे अपने हाथों सजाया। अकबर, जहाँगीर, शाहजहाँ सभी को कश्मीर की खुशनुमा घाटी बहुत प्यारी थी। अनेक सुन्दर बाग उन्हीं के यहाँ लगवाये हुए हैं। नंगे खड़े गगनचुंबी पहाड़ों के सामने डल झील से लगे शालीमार और निशात के मनोहर बाग हैं, नन्दन सरीखे, जहाँ वसन्त देर तक अटका रहता है। डल के तट पर ही चिनार के दरख्तों से भरा-भरा प्रसिद्ध नसीम बाग है, ठंढी बयार का बगीचा, और पास ही चश्मे शाही है जिसका शीतल जल पीकर घूमने वालों का मन छक जाता है।

कश्मीर झीलों का देश है। छोटी-बड़ी सैकड़ों झीलें घाटी में बिखरी पड़ी हैं जिन पर कमलों ने वन छाये रहते हैं। डल, बूलर और मानसबल उनमें प्रधान हैं। बूलर

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

भारत की मीठे जल की सबसे बड़ी झीलों में से है, मानसबल अपनी अभिराम कमल की कलियों के लिए जगत्प्रसिद्ध है, अचलबल में एक बड़ा-सा चश्मा है और कोकरनाग तो अपने स्वास्थ्यकर और रोगमुक्त कर देने वाले सोतों से भरा है। झीलों में गर्मियों में जब कमल खिलते हैं, प्रकृति अँगड़ा उठती है, लोग नौका-विहार करते हैं, जलक्रीडा और स्नान करते हैं। जाड़ों में जब वे जम जाती हैं, लोग उन पर दौड़ते और खेलते हैं।

जाड़ों के खेल के लिए तो भारत में कश्मीर के जोड़ की कोई जगह नहीं। गुलमर्ग की चोटी, ८,७०० फुट ऊँची है, खेलों के लिए असाधारण सुन्दर। स्कीइंग (फट्टों के सहारे सरकने, दौड़ने, कूदने का खेल) स्केटिंग (खड़ाऊँ पहन कर दौड़ने और नाचने का खेल) आदि के लिए गुलमर्ग आदर्श-स्थल है। स्वास्थ्य की दृष्टि से भी वह चोटी अत्यन्त अभिराम है। खिलेनवर्ग वनस्पतिशास्त्र के पंडितों और नये पौधे इकट्ठा करने वालों का स्वर्ग है और पहलगाँव घाटी के सुन्दर-तम स्थानों में है। पहाड़ों से घिरा पहलगाँव कश्मीर जाने वाले घुमक्कड़ो के खेमों से भर जाया करता है। वहीं से होकर अमरनाथ को राह गयी है। अमरनाथ भारत के पवित्रतम तीर्थों में है। एक सँकरी गुफा से होकर शाश्वत दंडवत् हिमराशि के दर्शन हैं। उसी दंड को लोग शिव मानकर मस्तक झुकाते हैं।

कश्मीर यक्षों का देश है। अनेक कश्मीरी पंडितों के

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कुल 'यख' कहलाते हैं। कालिदास की अलका चाहे काल्पनिक रूप से कैलास पर रही हो पर उसका वर्णन इसी यक्षों के देश कश्मीर का है। कालिदास कश्मीर के थे और उस अभिराम घाटी के लिए उन्हें ममता होनी ही चाहिये थी। कश्मीर ने संस्कृत भाषा को एक से एक बढ़कर साहित्यकार दिये। पिछले काल के पंडित तो अधिकतर वहीं के थे। अलंकारशास्त्र तो प्रायः सारा का सारा कश्मीरी पंडितों की लेखनी का ही परिणाम है। कश्मीरी पंडित कल्हण ने ही बारहवीं सदी के मध्य अपनी 'राजतरंगिणी' लिखी जो भारत के साहित्य में इतिहास के रूप में अकेली है।

कश्मीर पर पहले हिन्दू राजाओं, करकोटकों, उत्पलों और लोहरों ने राज किया, फिर मुसलमानों और अन्त में डोंगरों ने। अशोक का ही बसाया हुआ श्रीनगर कहा जाता है। पीछे कुषाण राजाओं का उस पर अधिकार हुआ। कनिष्क ने वहीं बौद्धों की चौथी संगीति बुलायी थी। कुछ काल हूणों का भी उस पर राज रहा। कश्मीर का सबसे महान् राजा ललितादित्य मुक्तापीड था, जिसने एक ओर तो पामीरों के तुखारिस्तान और दरद देश को और दूसरी ओर यशोवर्मन के कन्नौज को जीता। उसकी दिग्विजय इतिहास-प्रसिद्ध है। उत्पलों के अन्त में रानी दिद्दा हुई, भारत की पहली हिन्दू रानी, संसार की दबंग रानियों में से एक, जिसने अपने अधिकार से देश पर शासन किया। गद्दी के लोभ से उसने अपने पति और बेटों तक को मरवा डाला और आधी

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सदी तक राजसुख भोगा। उसी के समय महमूद गजनवी ने भारत पर हमला किया था। उसने कश्मीर की ओर भी रुख किया पर उस घाटी के पहाड़ों और बीहड़ के मारे उसे हार कर लौट जाना पड़ा।

आज भी कश्मीर में जहाँ-तहाँ उसके प्राचीन गौरव के चिन्ह इमारतों के खँडहर के रूप में बिखरे पड़े हैं, हिन्दू मन्दिर, बौद्ध विहार सभी। लद्दाख के पूरबी जिले में बौद्ध विहार हैं, तिब्बती मठ से ही छिपे-ढके। श्रीनगर के मस्तक पर हजार फुट की ऊँचाई पर शंकराचार्य का मन्दिर है। ललितादित्य मुक्तापीड का बनवाया प्रसिद्ध मार्तण्ड मन्दिर अपनी भारतीय और ग्रीक शैली में आज भी अपनी भग्न विशालता लिये खड़ा है। डल के तट की मस्जिद हजरतबल, कश्मीर की सबसे बड़ी सन् १४०४ की बनी जामा मस्जिद और वर्गाकार मस्जिद शाह हमादान उस घाटी की आलीशान इमारतों में से हैं।

कश्मीर में झेलम के तीर केसर (जायफ्रान) के खेत हैं। कहते हैं कि एक बार अकबर बाहशाह ने प्रसन्न होकर बीरबल से कुछ माँगने के लिये कहा तो उसने कुछ खेत माँगे। बादशाह चकित हो गया कि आखिर गाँव-जागीर छोड़ वीरबल कुछ बीघे खेत क्यों माँग रहा है। आखिर देना स्वीकार कर लेने के बाद उसका राज खुला जब वीरबल ने श्रीनगर के केसर के खेत माँग लिये। इनसे बाहशाह को खासी आमदनी थी। केसर कातिक में फूलती है और क्यारियाँ उनके

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

झड़े पराग से लाल हो जाती हैं।

कश्मीरी कलावन्त हाथ की कारीगरी में बेजोड़ हैं। हाशिये की कढ़ाई का ऊनी काम, धातु और लकड़ी का काम, रेशम और कालीन के काम वे अचरज के करते हैं। कश्मीरी शालों का बाजार संसार में अपना सानी नहीं रखता। पश्मीना के कढ़े हुए शाल अत्यन्त कीमती और बेनजीर होते हैं। उनके रंग और डिजाइन कश्मीर के अपने होते हैं जिनका राज उस घाटी के खूबसूरती के धनी कश्मीरी कारीगर ही जानते हैं। उन्नीसवीं सदी के यूरोप में तो इन शालों की माँग इतनी बढ़ी कि इनकी कीमत हजारों में हो गयी थी। हर साल श्रीनगर में वहाँ की कारीगरी की नुमायश होती है। वहाँ की कला का श्रीनगर में एक राजसंग्रहालय भी है जहाँ वहीं की बनी अचरज की चीजें संगृहीत हैं।

पर अफसोस कि उस केसर उगाने वाले और पश्मीने के अचरज के शाल काढ़ने वाले देश के बसने वाले अत्यन्त गरीब हैं। इन शाल-दुशालों के स्पर्श से पुलकित होने वाले संसार के श्रीमानों को इसका आभास तक नहीं कि उनके उस ऐश्वर्य के निर्माता कश्मीरी कलावन्त अपना वह सोना बेच आटे की कन के लिए तरसते हैं।

●

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

उत्तर भारत

उत्तर भारत का विस्तार बड़ा है। उत्तर भारत कोई राजनीतिक नाम नहीं है, वर्णन की सहूलियत मात्र के लिए यह नाम रख लिया गया है। इसमें कुलू-काँगड़ा की घाटियाँ हैं, शिमले-मसूरी-नैनीताल के गिरिनगर हैं, पंजाब-उत्तरप्रदेश के प्रान्त हैं। भारत के अत्यन्त प्राचीन, प्राचीनतम, नगर इसी भूभाग में हैं। हिमालय से विन्ध्याचल तक, रावी से घाघरा तक, बदरी-केदारनाथ से बलिया तक।

सतलज और व्यास, गंगा और जमुना, सरस्वती और घाघरा, चम्बल और बेतवा इसी मध्यदेश में बहती और उसे उर्बर बनाती हैं। बड़े-बड़े साम्राज्य इन नदियों के तीर, इस प्रदेश में उठे और गिरे। राम और कृष्ण, वाल्मीकि और व्यास और बुद्ध, चाणक्य और चन्द्रगुप्त, उदयन और अकबर इसी भाग में हुए जिन्होंने अपने करतबों से इस देश में जस का विस्तार किया। बुद्ध के जीवन से पवित्र, बौद्धों के चार प्रधान तीर्थों में से तीन—कपिलवस्तु, सारनाथ और कसिया यहीं हैं, और यहीं हैं भारत के ये प्रख्यात नगर—अमृतसर,

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दिल्ली, आगरा, मथुरा, लखनऊ, कन्नौज, कानपुर, प्रयाग, काशी।

पूरबी पंजाब में दिल्ली के पश्चिम वह पवित्र कुरुक्षेत्र है जहाँ महाभारत का महायुद्ध हुआ था। वही भाग धर्मक्षेत्र भी कहलाता है। क्योंकि पास ही सरस्वती और दृशद्वती नाम की प्राचीन वैदिक काल की वे पावन नदियाँ बहती हैं जिनके तट पर निरन्तर यज्ञ करके आर्यों ने उस भूमि को ब्रह्मर्षिदेश कहा था। यही देश आर्यावर्त की बीजभूमि था। कुरुक्षेत्र की सीमा में ही पानीपत के मैदान में भारत की कुछ लड़ाइयाँ लड़ी गयीं जिन्होंने इस देश का इतिहास बदल दिया। पृथ्वीराज ने इसके पास ही तलावड़ी में शहाबुद्दीन को धूल चटायी, वहीं अगले साल गोरी ने चौहान नरेश को परास्त कर उत्तर भारत जीता। वहीं बाबर ने दिल्ली की सल्तनत जीती। हेमू ने मुग़लों से खूनी टक्कर ली, वहीं मराठों की शक्ति के सूर्य को अब्दाली का राहु ग्रास कर गया।

गंगा-जमुना के बीच के निचले द्वाब में पंचाल पड़ता है। महाभारत-काल में राजा द्रुपद वहाँ के स्वामी थे, उनकी बेटी द्रौपदी ने पाँचों पांडवों को पति के रूप में वरा था। पांचालों की राजधानी अहिच्छत्रा बरेली जिले के रामपुर में खोद निकाली गयी है, पूरबी पांचालों की राजधानी काम्पिल्य थी जिसकी याद कम्पिला आज भी दिलाती है। उपनिषत्काल में जब जनक विदेह और महर्षि याज्ञवल्क्य उपनिषदों के ज्ञान का प्रचार कर रहे थे तभी पंचालों की ज्ञान-परिषद् भी क्रियाशील

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

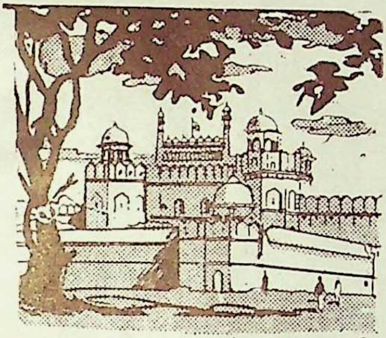

दिल्ली का ऐतिहासिक "लालकिला"

संसार की सुंदरतम घाटियाँ कुल्लू
और काँगड़ा

विक्टोरिया मेमोरियल कलकत्ता

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

थी। राजा प्रवाहण जैबलि उस परिषद् का प्रधान था।

इसी प्रदेश का हस्तिनापुर (मेरठ के पास) कौरव-पांडवों की राजराधी था। जब गंगा की बाढ़ से वह नगर नष्ट हो गया तब राजा निचक्षु ने इलाहाबाद के पास जमुना के किनारे कौशाम्बी को अपनी राजजानी बनाया। कौशाम्बी में बुद्ध ने उपदेश दिया और राजा उदयन ने वहीं अपने चरित किये। उज्जैन से प्रद्योत की कन्या वासवदत्ता का हरण कर उदयन ने वहीं जमुना में विहार किया था। इसी कौशाम्बी में समुद्रगुप्त की विजयवाहिनी को नागराजाओं ने मिलकर राह रोकी थी और उस गुप्त सम्राट् ने उनका वह संघ तत्काल तोड़ दिया था। उत्तरप्रदेश का गौरव महान् है। उसका इतिहास अत्यन्त शालीन रहा है, देश का अधिकतर आदर्श गंगा-जमुना की इसी घाटी में पला और बढ़ा है।

कुलू काँगड़ा

शिमले से पश्चिम हिमाचल की धौलाधरमाला है, इस देव-पर्वत का श्वेतमुकुटा उस बर्फ को रेखा के नीचे संसार की दो सुन्दरतम घाटियाँ हैं, कुलू और काँगड़ा, सेबों से लदे हुए बागीचे, चाय के पौधों से हरे-भरे पहाड़ी ढाल, पर्वत की चोटियों पर बने राजपूत राजाओं के पहाड़ी गढ़, जो कभो अजेय थे—ये गौरव हैं, कुलू और काँगड़े की घाटियों के। अनेक प्राचीन हिन्दूमंदिर ईंटों के बने, अनेक पहाड़ों में कटे आज भी वहाँ की जनता के विश्वासभाजन हैं। काँगड़ा, जो गिन्दरनगर, चम्बा, धर्मशाला, डलहौजो और कुलू उस दिशा

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

के दर्शनीय स्थानों में प्रधान हैं जहाँ पंजाब की अपार जनता हर साल जलते मैदानों से भागकर गर्मियों में पनाह लेती हैं। उनकी छटा तब देखते ही बनती है।

काँगड़ा ढाई हजार फुट ऊँची पहाड़ी पर बसा है। नीचे बाणगंगा की बर्फ की छिछली स्वच्छ धारा है। काँगड़ा से उसकी छटा निहार आँखें निहाल हो जाती हैं। पास की पहाड़ी चोटी पर एक पुराना राजपूत किला है। चोटी पर वह ऐसा लगता है कि पक्षी है, अभी पर मार कर उड़ जायगा। थोड़ी ही दूर पर गिन्दरनगर है जहाँ नदी का पानी रोक कर बिजली पैदा करने का घना प्रयत्न हो रहा है। पास की पहाड़ी पर आँखें रम जाती हैं। काँगड़ा के उत्तर-पश्चिम तनिक हटकर डलहौजी का प्रसिद्ध गिरिनगर है, ६,६७० फुट ऊँचा, गर्मियों में अत्यन्त आकर्षक। डलहौजी और चम्बा के बीच का दृश्य इतना मनोहर है कि उसका बखान नहीं किया जा सकता। सड़क संसार के सुंदरतम वनों से होकर गयी है और नजर जहाँ पड़ती है बस वहीं रुक जाती है। बैजनाथ का पहाड़ों में कटा मंदिर काफी प्राचीन है और उत्तर भारत के मंदिरों में अपनी शैली में अकेला है।

कुलू और काँगड़ा गर्मियों में जितने सुहावने हैं, फलों में भी उतने ही सम्पन्न हैं। सेब और नासपाती विशेषकर उगाये जाते हैं, वैसे जंगली फलों की तो कोई इन्तहा नहीं है। चम्बा की रियासत में अनेक प्राचीन अभिलेख मिलते हैं। वहाँ के नर-नारी इतने सुन्दर हैं कि प्रसिद्ध कला समीक्षिका डा० स्टेला

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

क़ामरिश का तो कहना है कि वहाँ के आधे निवासी जब चाहें यूरोप की सौन्दर्य-प्रतियोगिता में सफल हो सकते हैं। कुलू-काँगड़े के लिए नीचे के मैदानों से बराबर बसें दौड़ती रहती हैं।

शिमला

शिमला अभी तक भारत की ग्रीष्म राजधानी रही है। अभी भी वह पंजाब और हिमाचल प्रदेश की राजधानी है। अब कालका के पास पंजाब की नयी राजधानी चंडीगढ़ में बन रही है। शिमले के लिए कालका से रेल चलती है और साँप की चाल घूमती-फिरती शिमले पहुँचती है। राह का दृश्य बड़ा मनोरम है। मोटर से भी वहाँ पहुँचा जा सकता है। राह में धरमपुर का यक्ष्मा का सैनेटोरियम मिलता है। थोड़ी ही दूर पर कुत्ता-स्यार आदि जानवरों के काटे के इलाज के लिए कसौली में अस्पताल है। शिमला हिमालय की निचली शृंखला में ७००० फुट की ऊँचाई पर बसा है। वहाँ सबसे अधिक ऊँचाई जाखू की है, ८००० फुट।

शिमले का दृश्य भी बड़ा सुंदर है। बर्फ से ढकी पर्वत-मालाएँ एक के बाद एक आसमान तक उठती चली गयी हैं। ढाल पर शिमला बसा है, बड़ा और छोटा शिमला। सड़कें अत्यन्त खूबसूरत हैं, टहलने के लिए उनसे अच्छी सड़कें नहीं हो सकतीं। मशोब्रा औमहासू के बनों तक सड़कें चली गयी हैं। दोनों ओर के दृश्य बड़े लुभावने हैं। पहाड़ी घुमक्कड़ नरकंडा और कोटगढ़ तक ४०--५० मील चले जाते हैं। रात

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

में जब बिजली के लाखों बल्ब सहसा जल उठते हैं तो हैफा और हांगकांग की छटा शिमले में उतर आती है।

भारत के सुंदरतम गिरिनगरों में मसूरी भी गिना जाता है। उसकी औसत ऊँचाई ६००० से ७००० फुट के बीच है, वैसे लाल टीबा प्रायः ८००० फुट तक पहुँच गया है। मसूरी लोगों को बहुत प्रिय है और पंजाब, दिल्ली, उत्तरप्रदेश से तो लोग आते ही हैं, गुजरात और हैदराबाद से भी पहाड़ों के शौकीन वहाँ आने से नहीं चूकते।

वहाँ सड़क तो वैसे एक ही है, जिस पर सुबह शाम-लोग चलते-घूमते रहते हैं, और मई के आखीर और जून के शुरू में तो उस एक माल रोड पर घूमने वालों के बदन से बदन छिलने लगते हैं। वही सड़क बगल की पहाड़ी घूमकर आ जाती है और कैमल्स बैंक रोड कहलाती है क्योंकि उस पहाड़ की शक्ल दूर से बैठे ऊँट की पीठ-सी लगती है।

मसूरी हिमालय की निचली पर्वतमाला सिबालिक में पड़ती है। पास ही छोटे-बड़े झरने हैं, कम्पनी बाग है। जाड़ों में वहाँ बर्फ पड़ती है और गर्मियों में आसमान साफ रहने पर पीछे की बर्फीली रेखा स्पष्ट दिखाई पड़ती है। देहरादून से डेढ़-दो घंटे में मोटर से पहुँचा जा सकता है।

नैनीताल

नैनीताल, उत्तरप्रदेश की कभी की गर्मियों की राजधानी, ६३५० फुट ऊँचा है। मसूरी में ढलान ज्यादा है पर नैनीताल सपाट पठार पर बसा है, बड़ी सुन्दर झील के

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

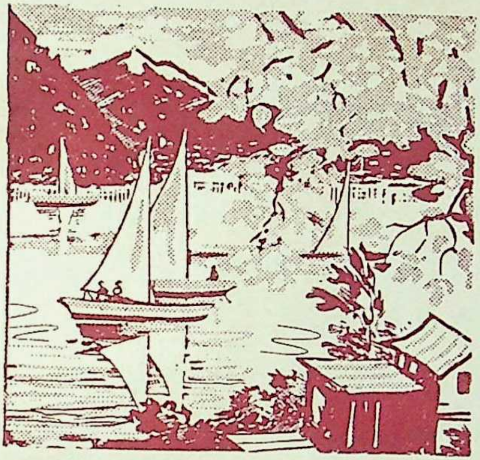

नैनीताल की मनोहारी झील

उदयपुर की जयसमंद झील
राजस्थान का स्वर्ग

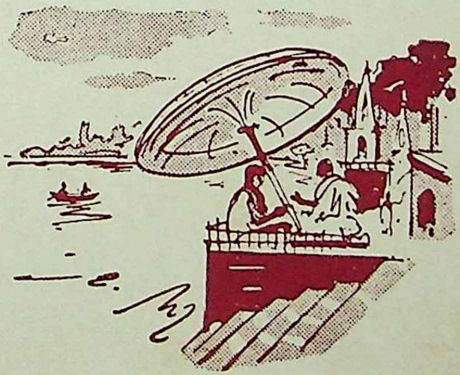

बनारस में गंगा के घाट

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

किनारे। झील अत्यन्त आकर्षक हरे पहाड़ों से घिरी है। काठगोदाम से होकर वहाँ जाते हैं।

अलमोड़ा वहाँ से थोड़ी दूर पर है। वहाँ से पच्छिमी हिमालय की अनेक ऊँची चोटियाँ दिखाई पड़ती हैं। अनेक लोग प्रसिद्ध पिंडारी ग्लैशियर वहाँ से जाते हैं।

देहरादून से थोड़ी ही दूर पर चकराता, लैंसडाउन आदि भी कुछ दूसरे गिरिनगर हैं। अलमोड़े की ओर रामगढ़, रानीखेत आदि अनेक स्थान गर्मी में आराम करने वालों के लिए बड़े आकर्षक बन गये हैं। स्वयं अलमोड़े में भुआली सेनोटोरियम है और थोड़ी ही दूर पर ही ताकुला में उत्तरप्रदेश की सरकार ने लेखकों के लिए कुछ जमीन दे दी है, जहाँ गर्मियों में अनेक साहित्यकार जाने लगे हैं।

अमृतसर

अमृतसर सिक्खों का प्रधान और पवित्र नगर है। पंजाब में भारत की उत्तर-पच्छिमी सीमा पर पाकिस्तान से लगा हुआ है। उसे सिक्खों के चौथे गुरु रामदास ने वहाँ का पवित्र तालाब खुदवाते समय बनवाया था। गुरु अर्जुनदेव ने गुंबजदार मन्दिर तालाब के बीच में बनवाया जो २०४ फुट लंबे संग-मरमर के चबूतरे से घिरा हुआ है। मन्दिर के गुम्बज को ताँबे की चद्दर से ढँकवाकर महाराजा रणजीत सिंह ने उस पर सोना चढ़वा दिया।

मन्दिर में रेशमी वितान के नीचे "ग्रन्थ साहब" रखे हुए हैं। पास ही गुरु का बाग है जिसके बाबा अटल स्तंभ में गुरु

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

नानक के जीवन की घटनाएँ चित्रित हैं।

दिल्ली

दिल्ली, या सही-सही नयी दिल्ली भारत की राजधानी है। दिल्ली को भारत की राजधानी होने का गौरव आज करीब आठ सौ साल से, ग्यारहवीं सदी से ही प्राप्त है।

दिल्ली सात-सात बार बसी और उजड़ी है और उसकी विविध बस्तियों के आलीशान खंडहर नयी और पुरानी दिल्ली के आसपास अब भी खड़े हैं। वैसे तो महाभारत में भी उसके पुराने पूर्वज इन्द्रप्रस्थ का नाम मिलता है जो पांडवों की राजधानी कही गयी है, पर ऐतिहासिक दिल्ली को जमुना के किनारे वास्तव में शायद तोमरों ने बसाया। अनंगपाल की दिल्ली पहले विग्रहराज बीसलदेव के हाथ आयी फिर उसमें पृथ्वीराज ने राज किया। पृथ्वीराज की दिल्ली के खंडहर और महल की आँगन की दीवारें कुतुब की छाया में खड़ी हैं। उसी आँगन में चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य का विजयस्तंभ खड़ा है जिस पर गुप्तकालीन ब्राह्मी में उसकी प्रशस्ति खुदी है। प्रायः डेढ़ हजार साल जाड़े-बरसात में खड़े रहते भी कभी उसमें जंग नहीं लगी।

पृथ्वीराज की दिल्ली को ही कुतुबुद्दीन ने फिर से बसाया और वहाँ प्रसिद्ध लाट कुतुबमीनार खड़ी की जो अल्तमस के समय पूरी हुई। ऐसी सुन्दर मीनारें संसार में कम हैं। पास ही गयासुद्दीन तुग़लक का बनवाया तुग़लकाबाद है। दिल्ली नये सिरे से अलाउद्दीन के समय तुग़लकाबाद के भी पहले

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

बसी थी जहाँ उसका चमकता हुआ सिरी नाम का महल खड़ा हुआ। फिरोज़शाह तुग़लक ने तुग़लकाबाद को उसके निर्माता के नगर बनते ही मर जाने के कारण अशुभ मानकर छोड़ दिया और पास ही फिरोजाबाद नाम से उसने अपनी नयी दिल्ली बसायी। थोड़ी ही दूर पर गुलाबी पत्थर का बना हुमायूँ बादशाह का सुंदर मक़बरा है। ये सब स्थान दिल्ली के दक्खिन और दक्खिन-पश्चिम में हैं। आज की दिल्ली या पुरानी दिल्ली शाहजहाँ की बनवायी हुई है जिसका सही नाम शाहजहानाबाद है।

लालकिला और उसके आलीशान संगमरमर के महल, जामा मस्जिद, शहरपनाह, बाजार आदि शाहजहाँ के ही बनवाये हुए हैं। किला स्वयं एक नगर है, उसमें अनेक इमारतें हैं। दरबारे खास और आम तो ग़ज़ब के सुन्दर हैं, वहीं एक दीवार पर फारसी शेर लिखा है जिसका मतलब यह है कि ज़मीन पर अगर कहीं बहिश्त (स्वर्ग) है तो यहाँ है, यहाँ है। रंगमहल, हमाम, मोती मस्जिद, मुमताजमहल आदि कुछ और प्रसिद्ध इमारतें भी उसी किले में खड़ी हैं।

लालकिले से फतहपुरी मस्जिद तक चाँदनीचौक का विस्तार है। सड़क खासी चौड़ी है, थोड़ी दूर पर एक फौव्वारा है, कुछ और आगे चाँदनीचौक का ऊँचा घंटाघर था जो अब गिर गया है। यह सड़क किसी जमाने में संसार की सबसे घनी और रफ्तह सड़क थी। आज भी वहीं नगर के जौहरियों की दुकानें हैं। दक्खिन ओर प्रसिद्ध और विशाल

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

गुम्बजों, बुर्णियों वाली जामामस्जिद है। सौन्दर्य में इससे सुंदर मस्जिदें दुनियाँ में कम हैं। इसका फैला आँगन ४५० वर्गफुट है। मुस्लिम काल का अभिराम नमूना है यह मस्जिद।

नयी दिल्ली अंग्रेजों की बनवायी हुई है, लार्ड अरविन बेलिंगटन के जमाने में अभी हाल बनी है। यह संसार की सबसे नवीन, सबसे सुन्दर राजधानी है। इसकी सड़कें लम्बी और चौड़ी हैं, दोनों ओर छतनार वृक्ष खड़े हैं, बीच-बीच गोल चौराहे हैं। एक ओर पार्क के चारों ओर गोलबाजार है, कनाट सरकस, दूसरी ओर सरकारी दफ्तर, लोकसभा आदि हैं। लोकसभा की इमारतें गोल हैं। पास ही सचिवालय की आमने-सामने दो विशाल इमारतें हैं। उनके बीच की सड़क के एक सिरे पर राष्ट्रपति का भवन है, दूसरी ओर सड़क सामने के फैले मैदान में खड़े इंडिया गेट की ओर चली गयी है।

जमुना के दाहिने किनारे पर प्रसिद्ध राजघाट पर महात्मा-गांधी की समाधि है। अत्यन्त सुन्दर पार्क के बीच पत्थर से पटी समाधि है जिस पर लोग फूल चढ़ाते हैं। वह समाधि दिल्ली की पवित्रतम भूमि है। पास ही जमुना कलकल बहती है।

आगरा

उसी जमुना के तीर आगरा बसा है। अकबर से शाहजहाँ तक मुगल बादशाहों ने अधिकतर वहीं से राज किया। बाबर ने उसे जीता था और उसी के पुराने किले में छिपे ग्वालियर के राजा ने अपने परिवार की रक्षा के बदले

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

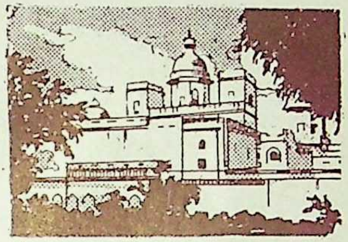

बृहत् इमारतों के शहर लखनऊ की छत्तर मंजिल

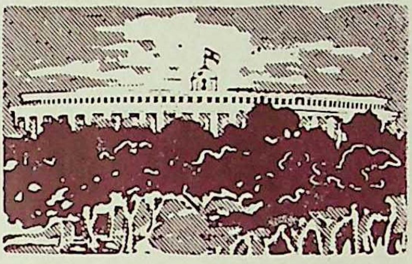

दिल्ली का संसद भवन

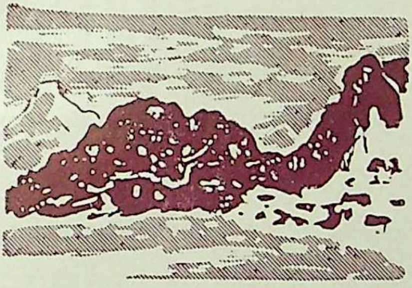

मसूरी की प्रसिद्ध ऊँट के पीठ जैसी "कैमलसबैक" सड़क

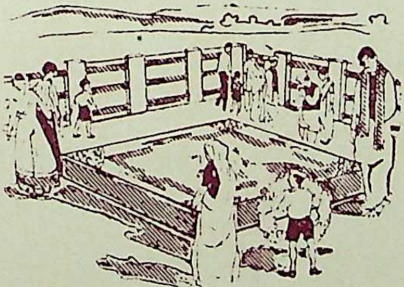

दिल्ली में यमुना नदी के राजघाट पर महात्मा गांधी की समाधि

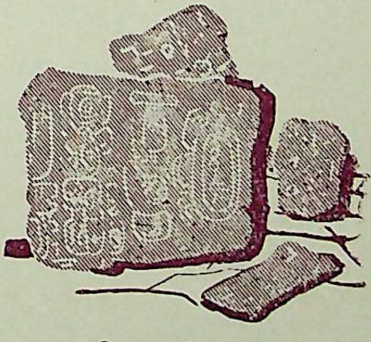

चम्बा रियासत में प्राप्त प्राचीन अभिलेख

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

हुमायूँ को जगत्प्रसिद्ध हीरा कोहेनूर भेंट किया। अकबर को आगरा बड़ा प्यारा था। वहाँ का सुन्दर किला और अनेक महल उसी ने बनवाये। बाद जहाँगीर और शाहजहाँ ने भी सुन्दर इमारतों से उसे भरा पूरा।

पर जिस इमारत के साथ आगरे का नाम भी अमर हो गया है वह है संसार का आश्चर्य ताजमहल। वह शाहजहाँ का बनवाया हुआ उसकी मलका मुमताजमहल का मक़बरा है। संसार के कोने-कोने से यात्री उसे देखने आये हैं और देखकर ठगे से रह गये हैं। उस-सी अनमोल देखनेवालों को निहाल कर देनेवाली दूसरी इमारत दुनिया में नहीं है। कुछ अजब नहीं जो वह संसार के सात आश्चर्यों में गिना गया हो। ताज शुद्ध श्वेत संगमरमर का बना है, लंबे-चौड़े संगमरमर के चबूतरे पर। चारों कोनों पर चार ऊँची मीनारें हैं, बीच में मज़ार है, विशाल गुंबज के नीचे, जैसे किसी ने मन का सपना संगमरमर में गढ़कर रख दिया हो। वहीं शाहजहाँ की अपनी कब्र भी है। अत्यन्त आकर्षक जालियों से छन-छनकर प्रकाश समाधि में सोई हुई आत्माओं तक पहुँचता है। दीवारों में कीमती पत्थरों की जड़ाई का असाधारण काम है। सामने सरो के पेड़ों से भरा मुगल बागवानी का सुंदर नमूना एक बाग है और उसके बाहरी द्वार से जो छटा चाँदनी रात में ताज की दीख पड़ती है उसका बयान नहीं हो सकता। अठारह-बीस साल में करोड़ों रुपयों के खर्च से हज़ारों मजदूरों की मिहनत से ताज बनकर खड़ा हुआ था। पर जिसके शरीर

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

को रखने के लिए संसार की यह सबसे सुंदर इमारतें बनीं उसने स्वयं उसे न देखा, उसकी शालीनता को न जाना।

अकबर का बनवाया आगरे का किला भी कुछ साधारण नहीं। सतरह फुट ऊँची उसकी दीवारें हैं, अठपहलो बुर्जियाँ हैं, करीब डेढ़ मील लंबे परकोटे हैं। भीतर अनेक आँगन हैं, द्वार के भीतर द्वार हैं, दीवाने खास और आम हैं, मस्जिदें और महल हैं, जहाँगीरी महल भी अकबर का बनवाया है। उसके लाल पत्थर में गज़ब के कटाव का काम हुआ है। बेलें और उनकी टहनियाँ ज़िन्दा को लजा देती हैं। शमाँ बुर्ज़ की अठपहलो इमारत में अनेक बेशकीमती पत्थर जड़े हुए हैं। संगसाज ने चितेरा बनकर पत्थरों में तस्वीर लिख दी है, कोमल और मनहर। सफेद संगमरमर की शाहजहाँ की बनवायो मोती मस्जिद अपनी खूबसूरती में बेजोड़ है।

सामने, नदी पर, नूरजहाँ के पिता एतमादुद्दौला का मकबरा है। औरंगज़ेब द्वारा कैद कर लिये जाने पर शाहजहाँ ने अपनी बेटी जहानारा के नाम से जामा मस्जिद बनवायी थी। वह भी कुछ कम दर्शनीय नहीं है। नगर से पाँच मील दूर सिकन्दरा है जहाँ अभिराम बगीचे में महान् बादशाह अकबर की सादी, पर आकर्षक, कब्र है, पर उसके सादेपन में भी ग़ज़ब की शालीनता है, सुरुचि उसपर बरसे पड़ती है।

सीकरी

आगरे से २६ मील की दूरी पर फतहपुर सीकरी के महल हैं। सन्त सलीमशाह चिश्ती ने वहीं अकबर के "वंश"

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

होने की भविष्यवाणी की थी जिससे सलीम जहाँगीर का जन्म हुआ। अकबर ने उसी की यादगार में यह नगर बनाया। पास ही बाबर से राणासाँगा की भीषण लड़ाई हुई थी।

नगर जीता-जागता खँडहर है। लगता है जैसे नगर सोया पड़ा हो। इतने अभिराम महल, इतनी आलीशान इमारतें जबसे बनीं प्राय: तभी से सूनी हैं, जैसे नगर का जीवित शरीर शापग्रस्त होकर जड़ पत्थर बन गया हो। सालों अकबर ने उसमें दरबार किया था, वहीं उसने अपने प्रसिद्ध धर्म दीनेइलाही का आरंभ किया था जो लोगों की असहिष्णुता से इतिहास की कहानी बन गया। पानी की कमी के कारण अकबर को वह इतनी सुरुचि, इतनी कीमत, इतनी मिहनत से बनवाया नगर छोड़ना पड़ा था। कितने दर्द से अकबर ने उसे छोड़ा होगा यह सीकरी की हवा से ज़ाहिर है, दर्द की कराह जैसे उसके पत्थर-पत्थर से निकल रही हो।

मस्जिद का दरवाजा ऊँचाई में संसार में दूसरा है पर सुघराई में पहला। सही उसका नाम बुलन्द दरवाजा है। जैसे वह बुलन्द है वैसे ही आकर्षक भी है। पीछे उसके जामा मस्जिद है। उसी में दर्शनीय जाली के भीतर सीपी जड़े वितान के नीचे सलीमशाह चिश्ती की कब्र है। दीवाने खास की शालीन इमारत जैसे नाना धर्मों के पंडितों के शास्त्रार्थ से आज भी गूँज रही है। जोधाबाई का महल हिन्दू करीगरी का नमूना है और पचीसी-महल की फर्श में लाल वर्गाकार

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

पत्थर की पटिया जड़ी हैं। अकबर उन्हीं पर गोटी की जगह लड़कियाँ बैठकर पचीसी खेला करता था।

मथुरा

जमुना के ही तीर प्राचीन मथुरा बसा है, जल से लगा हुआ, जैसे जल से ही उठ खड़ा हुआ हो। मथुरा अत्यन्त प्राचीन नगरी है, काशी-प्रयाग की तरह प्राचीन, दिल्ली-आगरे से कहीं पुरानी। कभी वह शूरसेन जनपद की राजधानी थी। रामायण, महाभारत, भागवत और पुराणों में बार-बार उसका उल्लेख हुआ है। कृष्ण के चरित से उसकी रज पावन हुई है। आज भी उसकी जमीन से एक से एक सुंदर मूर्तियाँ निकलती जाती हैं जिनसे प्रगट है कि करीब दो हजार साल पहले कुषाण राजाओं के समय वह नगर कला का कितना महान् केन्द्र था। बौद्धों और जैनों के वहाँ स्तूप मिले हैं जिनके चारों ओर दौड़नेवाली रेलिंगों पर एक से एक सुंदर मूर्तियाँ कोरी गई थीं।

इन मूर्तियों का एक कीमती संग्रह वहाँ के अजायबघर में है। पत्थर और मिट्टी की हजारों सुंदर मूर्तियाँ प्राचीन मथुराकला को प्रगट करती हैं। कभी उस नगर ने सारे भारत को बुद्ध की पूजनीय मूरतें दी थीं। एक खड़ी बुद्ध-मूर्ति आज भी वहाँ के संग्रहालय में है जिसकी जोड़ की मूर्ति संसार में दूसरी नहीं। नगर मन्दिरों से भरा पड़ा है, उनकी बुर्जियाँ दूर से ही यात्री को निहाल कर देती हैं। मथुरा आज भी हिन्दुओं का महान् तीर्थस्थान है।

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

पास ही वृन्दावन, गोकुल, बरसाना, नन्दगाँव आदि कृष्ण के जीवन से सम्बन्धित नगर और गाँव हैं। सूरदास, मीरा आदि अनेक दूसरे सन्त इन स्थानों में कृष्ण का चरित गाते हुए विचरते थे। वृन्दावन में भी अनेक नये-पुराने मंदिर हैं। एक तो दक्षिणी शैली में बना विशाल गोपुरवाला विष्णु का मंदिर आज भी वहाँ पूजा का केन्द्र है। नगर से बाहर एक मध्यकालीन विशाल मंदिर अपूर्ण ही खँडहर बन गया है।

कानपुर

कानपुर गंगा के किनारे बसा नया शहर है। देखते ही देखते यह नगर इतना बड़ा बन गया है। चमड़े के काम का तो वह असाधारण केन्द्र है। वैसे वहाँ सूती और ऊनी कपड़े की भी मिले हैं। उस नगर का महत्व विशेषकर उसके उद्योग-धन्धों के कारण है। इधर पन्द्रह वर्षों में उसकी आबादी बढ़कर प्रायः दूनी हो गई है।

कानपुर वैसे तो हाल का बसा नया नगर है पर सन् सत्तावन की गदर में उसकी ख्याति खूब बढ़ी थी। उसी जिले में उस विद्रोह के प्रधान नेता नानाजी पेशवा हुए थे, बिठूर में। पास ही संस्कृत रामायण के रचियता महर्षि वाल्मीकि का आश्रम भी बताया जाता है जहाँ राम से तजी जाने पर सीता ने शरण ली थी और जहाँ लव-कुश का जन्म हुआ था।

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

लखनऊ

कानपुर से करीब पचास मील उत्तर-पूरब अवध के नवाबों का नगर लखनऊ है, उत्तरप्रदेश की राजधानी। लखनऊ गोमती के तीर पर बसा बागों और महलों का नगर है। नवाबों में कितनी कलाप्रियता और सुरुचि थी यह इस नगर को इमारतों से प्रगट है। दूर से ही उसकी मस्जिदों, इमामबाड़ों और छत्तार-मंजिलों की बुर्जियाँ अपनी खूबसूरती और बुलन्दी का इजहार करती हैं। इन इमारतों में प्रधान इमामबाड़े हैं। बड़े इमामबाड़े का हाल १६२ फुट ऊँचा और ५४ फुट चौड़ा है। छोटा हुसेनाबाद का इमामबाड़ा बड़ी नाजुक इमारत है। छत्तरमंजिल में कभी बेगमों का निवास था, केसरिया रंग का कैसरबाग नवाबों को कभी विशेष प्रिय था। उसकी बारादरी देखने ही लायक है। वहीं एक महल में अब मूर्तियों का संग्रहालय है।

लखनऊ बड़ा खूबसूरत शहर है। नदी पर तीन पुल हैं। हज़रतगंज में शाम को बड़ी रौनक रहती है। वहीं धारा-सभा की इमारतें, सचिालय आदि हैं। पास ही चिड़िया-खाना है। लखनऊ में चिकन और जरी का काम बड़ा सुन्दर होता है। चाँदी की चीजें भी नायाब बनती हैं। वहाँ के मिट्टी के खेलौने भी अपनी नज़ाकत और खूबसूरती के लिए मशहूर हैं।

इलाहाबाद

इलाहाबाद गंगा-जमुना के संगम पर बसा है। उसका

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

यह नाम पीछे पड़ा। पहले उसका नाम प्रयाग था। आज भी अनेक लोग उसे प्रयाग ही कहते हैं। प्रयाग उसका नाम तीरथराज होने से पड़ा। पहले आर्य लोग सरस्वती के तट पर बसते और यज्ञ-हवन करते थे। बाद में जब वे पूरब की ओर आ बसे तब उन्होंने प्रयाग को ही अपने यज्ञ-हवन, पूजा-पाठ का केन्द्र बनाया और वहाँ विशेष याग-यज्ञ होने के कारण उसका नाम ही प्रयाग पड़ गया। वहाँ आ जाने पर भी आर्यों को सरस्वती के तट की याद बनी रही और उन्होंने प्रगट गंगा-जमुना के संगम के साथ अप्रगट सरस्वती का भी संगम मानकर उसे त्रिवेणी कहा।

उसका वह त्रिवेणी संगम बड़े महत्व का है। वहाँ बारह वर्ष में एक बार कुंभ का बड़ा मेला होता है जिसमें लाखों नर-नारी स्नान को जाते हैं। वहीं हर पाँचवें साल राजा हर्षवर्द्धन महामोक्ष-परिषद् किया करता और अपनी सारी संपत्ति दान में दे दिया करता था। चीनी यात्री हुएन-त्सांग ने उसका वह दान एक बार अपनी आँखों देखा था। संगम से लगा विस्तृत बालू का मैदान है।

वहीं अकबर का सन् १५७५ में बनवाया किला है। किले के भीतर प्रसिद्ध अक्षयवट और अशोक का स्तंभ है। उसी स्तंभ पर अशोक की शांतिमूलक और समुद्रगुप्त की युद्धमूलक प्रशस्तियाँ हैं। समुद्रगुप्त की प्रशस्ति से उसकी विजयों और भारतीय इतिहास के गुप्त सम्राटों के सुनहरे युग पर प्रकाश पड़ता है।

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सामने गंगापार, झूसी है, काफी पुराना स्थान। चन्द्रवंशी ऐल राजाओं की राजधानी प्रतिष्ठान झूसी को ही बताया जाता है। आज वह बस एक गाँव है पर वहाँ कुछ पुरानी ऐतिहासिक चीजें भी मिली हैं। कुछ विद्वानों का विचार है कि अकबर के दरबारी राजा बीरबल वहीं के थे।

बनारस

बनारस या काशी भारत का प्राचीनतम जीवित नगर है, गंगा के बाएँ तट पर बसा, प्रायः तीन हजार साल पुराना। हिन्दुओं का वह सबसे पुराना तीर्थ है। वहाँ आज भी छोटे-बड़े हजारों मन्दिर हैं और दूर से ही उनके कलश-कँगूरे दीख पड़ते हैं। अपने लम्बे जीवन में काशी अनेक बार लुटी और उसके मन्दिर बरबाद हुए। वहाँ का सबसे विख्यात मंदिर विश्वनाथ का है।

बनारस के घाट बड़े सुन्दर हैं, तट पर अनेक रजवाड़ों के महल हैं। वहाँ का प्रसिद्ध घाट दशाश्वमेध भारतीय इतिहास में गौरव का स्थान माना जाता है। जिन भारशिव नाग राजाओं ने विदेशी कुषाणों से शक्ति छीन ली थी उन्होंने उसे हरा-हराकर इसी घाट पर दस अश्वमेध किये थे जिससे उस घाट का दशाश्वमेध नाम पड़ा। उस घाट के पास ही जयपुर के राजा जयसिंह ने नक्षत्रों की गति जानने के लिए मानमंदिर नाम की वेधशाला बनवा दी थी जो आज भी वहाँ खड़ी है।

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

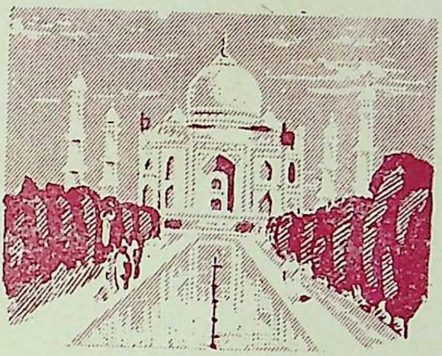

मुमताज बेगम की याद में बनवाया हुआ
शाहजहाँ का ताजमहल

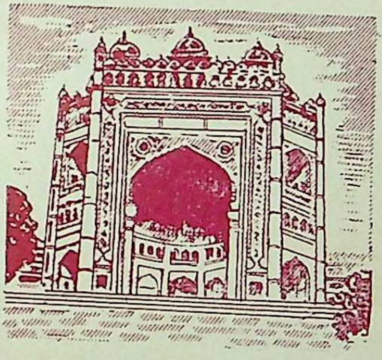

फतेहपुर सीकरी का बुलन्द दरवाजा

किला स्थित इलाहाबाद का 'अक्षयवट'
कुम्भस्नानका प्रसिद्ध त्रिवेणी संगम

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

काशी किसी काल विद्या का केन्द्र थी। अभी हाल तक दूर-दूर से संस्कृत पढ़ने के लिए श्रद्धालु विद्यार्थी वहाँ आते थे। काशी में अब हिन्दू विश्वविद्यालय बन जाने से उसकी वह लुटी सरस्वती लौट आई है। नगर में भी अनेक संस्कृत की पाठशालाएँ हैं और हजारों ऐसे विद्यार्थी हैं जो वहाँ केवल संस्कृत पढ़ने आया करते हैं।

काशी के पक्के महाल की गलियाँ बहुत सँकरी हैं और उनकी स्थिति में आज सैकड़ों साल से कोई अन्तर नहीं पड़ा है। उन्हीं सँकरी गलियों में विशालकाय साँड़ डोला करते हैं, पर बड़े शान्त जो किसी को चोट नहीं पहुचाते। शिव का वाहन होने से शिव की इस काशीपुरी में उन्हें कोई छेड़ता भी नहीं।

काशी का गंगा-प्रवाह बड़ा सुन्दर है, छोटी नावों पर उस धारा में बहना बड़ा सुहावना लगता है। त्यौहारों अथवा वैसे भी सन्ध्या-प्रातः अनेक लोग इन नावों में डोला करते हैं। चाँदनी रात में नौका-विहार तो अत्यन्त आकर्षक लगता है।

काशी अपने पीतल के बर्तनों और रेशमी वस्त्रों के लिए ढाई हजार वर्षों से प्रसिद्ध है। बुद्ध के समय के जातकों में लिखा है कि व्यापारी पाँच-पाँच सौ बैलगाड़ियों में बर्तन और रेशम के वस्त्र लादे देश-विदेश जाया करते थे। आज भी वहाँ ये दोनों रोजगार खूब चलते हैं। बनारसी रेशम का

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

काम, कारचोबी और जरी के काम वहाँ खूब होते हैं और संसार में सर्वत्र उनकी माँग है।

सारनाथ

सारनाथ काशी के पास ही है, करीब चार मील उत्तर। वह स्थान भी करीब ढाई हजार पुराना है। बौद्धों का वह महातीर्थ है। पहले वहाँ हरिनों का वन था, मृगदाव, जहाँ ज्ञान प्राप्त करने के बाद भगवान् बुद्ध ने पहली बार अपने धर्म का उपदेश दिया था। •उस उपदेश को धर्म-चक्रप्रवर्तन कहते हैं। उस मुद्रा में कोरी वहाँ और अनेक दूसरे स्थानों में बुद्ध को मूर्तियाँ मिली हैं। बुद्ध ने वहाँ जिस स्थान पर निवास किया था उसे मूलगन्धकुटी-विहार कहते थे। उसी नाम से महाबोधि सोसाइटी ने सारनाथ में एक सुन्दर विहार बनवा दिया है। उसकी दीवारों पर बुद्ध के जीवन-सम्बन्धी अनेक भव्य चित्र बने हुए हैं। जापानी सरकार ने अपने चित्रकार भेजकर इन्हें बनवाया था।

अशोक ने वहाँ की यात्रा करके वहाँ स्तूप बनवाया था। पीछे गुप्तकाल में भी वहाँ स्तूप बने। धमराजिका और विशाल धमेख स्तूप तो वहाँ आज भी खड़े हैं। वहीं अशोक ने अपना प्रसिद्ध पत्थर का पालिश किया हुआ स्तंभ भी खड़ा किया था जिसका मस्तक चार बैठे सिंहों का है। यह सिंह-मस्तक इतना चिकना है कि धातु का बना लगता है। शेरों की नसें और शिराएँ साफ चमकती हैं और उनपर पालिश ऐसी है कि दर्शक अपना मुँह उसमें देख सकता है।

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

यही सिंह-मस्तक अब अपने राष्ट्रीय सरकार का मुद्रांक है।

सारनाथ में अब अनेक चोनी आदि मन्दिर बन गये हैं। चीनी मन्दिर तो अत्यन्त आकर्षक है। पास ही प्राचीन शैली में बनी स्कूल की इमारत है। सारनाथ का पुरातत्त्वसंग्रहालय प्राचीन विहारों की रीति से बना है। यह संग्रहालय भारत के बड़े महत्व के संग्रहालयों में है। बुद्ध की धर्म-चक्रप्रवर्तन की मुद्रा में बैठी गुप्तकाल की प्रसिद्ध मूर्ति वहीं है। वहीं अशोक के स्तंभ का विख्यात सिंह-मस्तक भी है।

सारनाथ से ही बौद्ध धर्म और संघ का विकास हुआ था। वहीं बुद्ध के पहले उपदेश से धर्म की नींव पड़ो और वहीं अपने साथ के पाँच परिव्राजकों को बौद्ध भिक्षु बनाकर बुद्ध ने बौद्धसंघ का भी आरम्भ किया। पहला गृहस्थ भिक्षुयश काशी के सेठ का पुत्र था जो अपने सात साथियों के साथ संघ में शामिल हो गया था। उसके माता-पिता बुद्ध के पहले उपासक बने।

सारनाथ को काशी से एक बड़ी सड़क जाती है जिस-पर अब लगातार बस्ती बसती चली जा रही है। थोड़े ही दिनों में काशो और सारनाथ में काई भेद नहीं रह जायगा। अब भी दोनों के बीच बराबर बसें दौड़ती रहती हैं।

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

यह राजस्थान है

यह राजस्थान है, सूरमा देश। नाम लेते इतिहास आँखों पर चढ़ जाता है। अफ्रीका के रेगिस्तान सहारा का विस्तार। जितनी ही बीहड़ भूमि, उतने ही बीहड़ आदमी। आदमी कि फौलाद—पिघला तो पानी, जमा तो वज्र।

एक लाख तीस हजार वर्ग मील। तपती रेत, नाचती मरीचिका—चप्पा-चप्पा पानीपत, कण-कण रक्त से सना, जर्रा-जर्रा जौहर। मालवा की ढाल-सा हरा-भरा मेवाड़, अरावली का गौरव, दिलेरी की आन, दक्खिन की ओर गुजरात के द्वार अजमेर-आबू तक। उधर सिन्ध की हिन्दी सीमा जोधपुर जहाँ पानी को प्यास लग जाय, जैसलमेर-बीकानेर कि पाले को काठ मार जाय, जैपुर, कोटा-बूँदी, अलवर-भरतपुर कि जिनने खड्ग से कीरत लिखी।

छरहरा डीलडौल, नुकीली नाक, ऊँचा माथा। जिस्म से चिपकी कच्छानुमा धोती, सटी मिरजई, कसी पगड़ी। कमर से लटकती तलवार, मुट्ठी में कसा भाला। दोनों ओर सँवारी दाढ़ी, चढ़ी मूँछें, ताँबे का रंग—बाँका राजपूत, कि

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

देखे तो केहरी दुम दबा ले, कि चले तो गजराज राह छोड़ दे।

छरहरी काया, सुथरा रंग, साँचे में ढले अंग। छाती पर कसी चोली, कमर में फैला घाघरा, माथे पर प्रकाशपुंज-बोरला, सिर पर आँचल। झुको तो आँचल भींग जाये, छेड़ो तो सिंहिनी गरज उठे। उमा-सी पावन, केसरिया-राजपूती आन की रहस्य राजपूतनी।

यह चित्तौर है, विन्ध्याचल की भुजा पारियात्र की शक्ति का प्रतीक, अरावली के माथे पर गौरव का टीका। चिपटे मैदान में सहसा चमक उठनेवाला यह चित्तौरगढ़—गुहिलौतों के जस का पताका—सदियों सूना रहा है। तब से जब से प्रताप ने उसे तजा, जब से मेवाड़ के गडिया राणा के प्रण का गौरव रखने के लिए आज चार सौ साल से नगर-मकान छोड़ गाड़ियों में ही फिरते रहे हैं, और राणा के कौल के राखनहार आजादी के वे बन्दे आजादी के बाद ही आज गढ़ में वे लौटे हैं, गढ़ फिर से आबाद हुआ है।

तीन बार गढ़ बरबाद हुआ, तीन बार आजादी की कीमत दिलेर मेवाड़ियों ने अपने खून से चुकाई, तीन बार चिता पर चढ़कर नारी ने अस्मत के भाले पर जौहर का तिलक किया। गढ़ की चट्टान-चट्टान बलि की वेदी बन गई। अनेक जयमल, अनेक पत्ता, आजादी के अनेकानेक दीवाने जिनका नाम इतिहास तक नहीं जानता, अब मुठी भर खूनी चट्टानों के लिए कुर्बान हो गये। इन्हीं चट्टानों से उठा था

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

रणबाँकुरा साँगा जिसके घायल शौर्य की कथा बियाने की राहें कहती हैं, सीकरी की हवाएँ, फरगना की तलवारें। बाबर के तोपची उस्तानली की रुमी तोपें आज चुप हैं, पर एक हाथ, एक आँख, अस्सी घाववाले उस मेवाड़ी सूरमा की आवाज आज भी उस वियाबाँ के खँडहरों में बुलन्द है। और आज भी चितौरगढ़ में खड़ा है राणा कुंभा का वह बेनज़ीर कीर्तिस्तंभ जो मालवा और गुजरात की सम्मिलित सेनाओं पर विजय की यादगार है और जिसकी ऊँचाई को लाँघ जानेवाली अगर कोई चीज़ है तो बस वही कि हवा में बसी रानी पद्मिनी की रज। सती के सुहाग के सिन्दूर से अगिन की लपटें लाल हो गई थीं।

गढ़ के पास ही नगरी है, माध्यमिका, जिसकी राह पच्छिम की विजयिनी सेनाएँ प्राचीन काल में तब तक पूरब जाती रहीं जब तक गुहिल ने, बापा रावल ने, चित्तौर खड़ाकर उस पच्छिमी दीवार की अर्गला न मीच दी।

और थोड़ी ही दूर पर वह नाथद्वारा है जहाँ अनेक सन्तों की वाणी सुरक्षित है, जहाँ वल्लभ के उल्लास ने सूखे दर्शन को आनन्द का योग दिया था, जहाँ मीरा की काँपती रोमचक आवाज़ उठकर दिशाओं में भर गई थी। और उससे भी पवित्र पास की वह दुर्गम घाटी है, हल्दीघाटी, जहाँ मुट्ठी भर कुलीन राजपूतों के मुट्ठी भर उपेक्षित अकिंचन भील तीरन्दाज़ों ने, आज़ादी की नोक से साम्राज्य का छत्र छेद दिया था, जहाँ गुमराह भाई ने भाई को भेंटकर स्वामिभक्त

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

चेटक की समाधि को आँसुओं से गीला कर दिया था।

पीछे पहाड़ी परकोटे में बन्द, घने जंगलों के बीच मेवाड़ की दूसरी राजधानी है, उदय सिंह की बसाई, उदयपुर, पूरब का वेनिस। नगर की नई लुनाई में पुराने गौरव की साँस बसी है। हरी पहाड़ियों की घाटी में द्वीपोंभरी नीली झील के किनारे उदयपुर अभिराम खड़ा है। इन्हीं द्वीपों के जल की सतह से उठे संगमरमर के सफेद महलों पर सुबह का सूरज सोना बिखेर देता है। तट की पर्वतमाला पर बसे नगर के सामने महाराणा का महल है, पूरबी वैभव से भरा, दीवारों की पच्चीकारी में मयूराकृतियां धारे, फर्श की सुंदर डिज़ाइनों से भरा-पुरा छत की बगीचियों से हरा-भरा, वह मनोरम राजप्रासाद।

द्वीप के महल जगमन्दिर ने कभी बाप के बाग़ी शाहज़ाद खुर्रम—शाहजहाँ को पनाह दी थी, जैसे पहले चित्तौर ने रूपमती के एकान्त प्रियतम बाज़बहादुर को दी थी, पीछे जैसे उदयपुर ने औरंगज़ेब के बेटे अकबर को दी। पास ही जगनिवास है, अपनी बगीचियों का जाल फैलाये, मकरन्द मदी मधु-मालती लिये।

पर राजस्थान का कश्मीर तो उदयपुर से तीस मील पर जयसमन्द है, भारत की सुंदरतम झीलों में से एक। नदियों का बहाव रोककर बनी है यह, मानवश्रम और सुरुचि की अभिराम परिचायक है।

उधर दक्खिन की ओर अजमेर है, अजमेर-मरवाड़, सही

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

राजस्थान से बाहर, पर कभी के राजपूताने का मरकज जिसे चौहान अजयराज ने बसाया था। वहीं से चलकर विग्रहराज वीसलदेव ने कनौज के सामन्त तोमरों से वह दिल्ली छीन ली थी, जिसे विलासी पृथ्वीराज ने स्नेह से सजाया, जो तब से भारत की राजधानी बनी है। तारागढ़ का किला अकबर ने बनवाया। पर उससे कहीं अधिक महत्व की वह झील है, आना सागर, आठ सौ साल पहले आना की बनवाई। वहाँ ढाई दिन का झोपड़ा है, जिसकी चट्टानों पर विग्रहराज का संस्कृत में लिखा 'हरकेलि-नाटक' खुदा है। मुइनुद्दीन चिश्ती की प्रसिद्ध कब्र—'दरगाह-ख्वाजा साहब' भी वहीं है। उसी चिश्ती की दुआ का परिणाम था जोधाबाई का जहाँगीर। मुसलमानों के इस पवित्र तीर्थ अजमेर-शरीफ से बस सात मील पर ही हिन्दुओं का प्रख्यात पुष्कर तीर्थ है।

अजमेर के पच्छिम-दक्खिन आबू है, अब बम्बई में गुजरात-राजपूताने की सरहद; साढ़े तीन हजार फुट ऊँचाई पर बसा जैनियों का तीरथ। कभी वहीं वशिष्ठ ने यज्ञ द्वारा गुर्जरों-हूणों का शुद्धकर परिहार, परमार आदि अग्निकुलीय राज-पूतों को जन्म दिया था। सिरोही की सीमा में वहीं दिलवाड़ा में, जैन-मन्दिर हैं, संगमरमर के अचरज, शिल्प के शृंगार। उनकी दीवारों पर, छतों में, खंभों पर अद्भुत चित्र कटे हैं। आँखें देखते—छक जाती हैं, नजर पक जाती है पर चित्रों की संख्या नहीं चुकती। डिजाइनों के जंगल हैं वे, एक से एक भिन्न, एक से एक सुखकर।

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

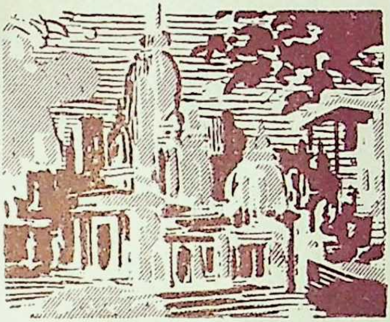

मुहम्मद गजनी द्वारा लूटा गया सोमनाथ का वैभवशाली मंदिर

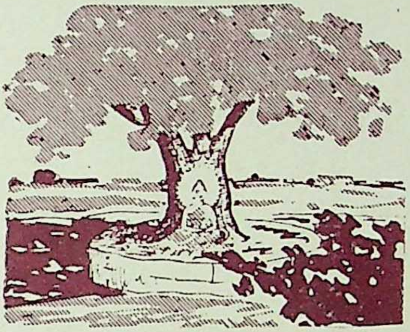

बोधगया का वह पीपल वृक्ष जहाँ भगवान् बुद्ध को ज्ञान हुआ था

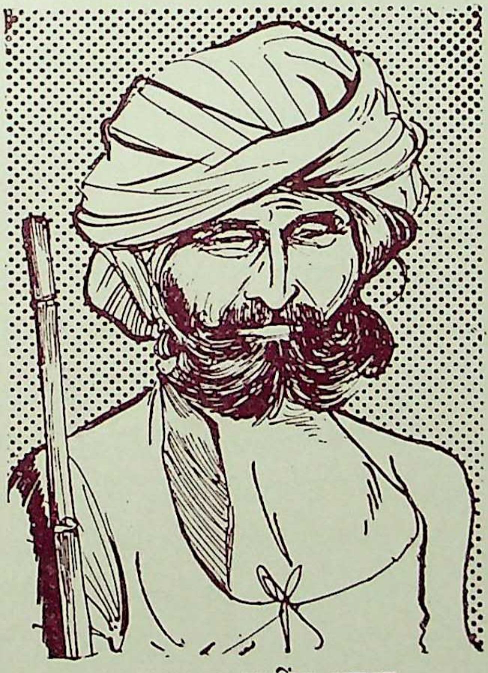

राजस्थान का नर-सिंह—राजपूत

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

पूरब में कोटा-बूँदी है, और पूरब, अलवर-भरतपुर। कोटा चंबल के किनारे शहरपनाह के भीतर बसा है। कवि कालिदास ने इस चर्मण्वती नदी की बड़ी महिमा गायी है। झील के तट पर वह उम्मेद भवन है, पुराना राजमहल, नया उस दूसरी ओर है। राजाओं की समाधियों की अनेक छतरियाँ मुगल शिल्प के मनहर नमूने हैं। कोटा से २८ मील पच्छिम, बूँदो है, पहाड़ियों से घिरो। शहरपनाह के दरवाजे खासे खूबसूरत हैं। झील के किनारे का महल राजस्थान के महलों में अनोखा है। कोटा-बूँदो के राजपूतों ने कितनी ही बार लोहे से लोहा बजाया था। बूँदी के छत्रसाल ने कभी शाहजहाँ की बेटी जहाँनारा को मोह लिया था। सीकरी की दीवारों के साये में, गहराती रात की तनहाई में, दोनों के मर्म परस्पर छू गये थे, उनके मन, डह गई थी काया; पर न तो राजा शाहजादी को छू सकता था, न शाहजादी सल्तनत के कानून तोड़ सकती थी और छत्रसाल ने जहाँनारा के भाई दारा की रक्षा के लिए सामूगढ़ की लड़ाई में जूझकर शाहजादी के प्यार का अहसान चुकाया।

अलवर का विस्तार भी पहाड़ो है। किले के नीचे भरा सरोवर है, समुन्नत प्रासाद। भरतपुर निकट ही आगरे से लगा हुआ है, दीग के पुराने महलों के समीप। भरतपुर के किले ने अंग्रेजों के दाँत खट्टे कर दिये थे और कभी उसके जाटों ने दिल्ली पर कब्जा कर लिया था। मथुरा की रक्षा के लिए उसके राजाओं ने बार-बार प्राणों का सौदा किया।

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

जैपुर अठारहवीं सदी का मनोरम नगर है। तीन ओर महलों-किलों की बनी पहाड़ी है, एक ओर मैदान—परकोटे लौट-लौट नगर को परिक्रमा करते हैं। विशेष योजना से बना है नगर। मकान एक से हैं। शिल्प हिन्दू-मुस्लिम संस्कृति का नमूना है। बीच का हवा महल बारजों के ऊपर बारजा उठाये आसमान चूमता है। नगर के निर्माता जयसिंह ने देश की अनेक जगहों में मानमंदिर नाम को काल-तिथि बताने-वाली वेधशालाएँ बनवायीं।

सात मील की दूरी पर ही पहाड़ों में बसा अम्बर का महल खड़ा है, सूना, पर मानसिंह-जोधाबाई का जस उजागर करने-वाला। १६०० ई० का जैगढ़ का वह किला, लगता है, जैसे जंगल-पहाड़ में एकाकी शिकार की ताक में अहेरी दम साधे खड़ा हो।

अनेकानेक अनमोल राजस्थानी चित्र जैपुर की कलम से लिखे गये, जो आज देश-विदेश में भारत का गौरव बढ़ा रहे हैं। नाद और वाणी की अजस्र बहती धाराओं को भी कला-वन्तों ने राग-रागिनियों के रूप में वर्ण और रेखा की सीमाओं में बाँध दिया। कानों को आँखें मिलीं, आँखों को कान मिले।

जोधपुर का मजबूत परकोटे से घिरा नगर पहाड़ी पर बसा है। सात दरवाजों से होकर किले में जाना होता है। इन्हीं दरवाजों को धरमात की लड़ाई से हारकर भागे जसवन्त सिंह के सामने उसकी रानीं ने बन्द करा दिया था। महल अन-मोल रत्नों से भरा है, राजस्थानी चित्रों से, हरबे-हथियारों से।

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

पास ही कैलाना और बासमन्द को आकर्षक झीलें हैं। स्वयं नगर के भीतर गुलाबसागर के जल में नये-पुराने महलों, मंदिरों के कलश-कंगूरे झिलमिल काँपते हैं। जोधपुर पाकिस्तान की सिन्धी सीमा पर है।

नगर से पाँच मील उत्तर मन्दार है, प्राचीन मारवाड़ की राजधानी। गुर्जर प्रतिहारों ने वहीं से उठकर मालवा और कन्नौज जीता था और बङ्गाल-बिहार छोड़ प्रायः सारे उत्तर भारत पर अधिकार कर लिया था। महमूद गज़नी की चोट कन्नौज में उन्हें ही सहनो पड़ी थी। उस मंदार को १३८१ई. में राठौड़ राव चुंड ने जीतकर जोधपुर के राजकुल का आरंभ किया था।

बीकानेर भी पाकिस्तान की सीमा पर है। पन्द्रहवीं सदी के अन्तिम दिनों में बसा, परकोटे की सुरक्षा में, याद है बीकानेर की यात्रा। अग्नि-परीक्षा थी वह। ऐसी याद है कि न तो यात्रा भूली जा सकती है, न नगर। मई का महोना, डहकते दिन, सुलगती रातें और उड़ती रेत! जो रेल के भीतर बदन पर इंच-इंच बैठ जाय! हजार झाड़े; पर जैसे जिन्दा दर गौर—और रेल की लाइन जिसे मजूर रेत हटाकर निरन्तर नंगी करते रहे तब कहीं पहिये उस पर डगरे!

सुबह सरदार की विदुषी रानी का बुलावा आया। कुमार आकर गाड़ी में ले गया। महल ऊँचा, लाल ईंट के रंग का, मोटे परदों से घिरा! निःसंदेह परम्परा की असूर्यम्पश्या नारी का अन्तःपुर। पर रानी जो देखी तो आँखें निहाल हो गयीं।

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

ऊँची छरहरी रानी, मान-धनी राजपूतों के गौरव-सी ही, मीरा की झलक जैसे मूर्तिमती हुई। राजपूतनी का राष्ट्रीय लेबास। रानी उठी, आवभगत की, बैठी, फिर उठी, चाय के समान से लदी मेज की ओर बढ़ी! वह खड़ी गतिमती शालीनता! वर्दी पहने अनेक परिचर दौड़ पड़े। रानी का शालीन हाथ उठा, परिचर जहाँ के तहाँ खड़े रह गये। अतिथि को प्लेट रानी ने स्वयं परसा, औरों को परिचरों ने। फिर उसने विनय और विद्या की एकत्र परम्परा बाँध दी। लगा, ऐसी ही कोई रही होगी, जिसने हुमायूँ को राखी भेजी थी।

आज भी याद है, चित्तौर का वह गढ़, दिलवाड़ा का। वह मन्दिर! अम्बर का वह दुर्ग! और मेवाड़ी नारीत्व की किरण-सी वह रानी!

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

वह सिन्धुपर्यन्त का देश

यह पश्चिम का भारत है—आबू से अरबसागर तक, कच्छ-काठियावाड़ से कर्नाटक तक। पश्चिमी घाट के पहाड़ उत्तर से दक्खिन को चले जाते हैं, उत्तर में पूरब की ओर झुकते हुए। उपजाऊ हरे-भरे मैदान, सह्याद्रि, दर्दुर-नीलगिरि, मलयाद्रि की पहाड़ी जंजीर के चरणों में लोटते हैं! उनकी परम्परा टूटती नहीं! आगे समुन्दर तक धान के लहलहाते खेत, पीछे सफेद कपास उपजाने वाली काली मिट्टी, जो बम्बई, अहमदाबाद, भड़ोंच की कपड़े की मिलों को खुराक पहुँचाती है। पहाड़ की चोटियों पर वीर मराठों के पुराने उजड़े किले, टूटे गढ़, बाँके दुर्ग, जिनके तेवरों में दिलेरी की लहर है, जिनकी कहानी में दर्द है पर कहीं लचक नहीं, समर्पण की आजिज़ी नहीं।

रहने वाले कच्छी, काठियावाड़ी, गुजराती, मराठे, पारसी और पूरब में पश्चिमी राजस्थान के परे के सिरोही आदि के राजपूत। राजपूतों, पारसियोंको छोड़ बाकी अधिकतर गेहुएँ रंग के मझोले क़द के लोग। कच्छी सिन्धियों से मिलते-जुलते हलके ताँबे के रंग के जैसे काठियावाड़ी भी; गुजराती गेहुएँ से गोरे तक; मराठे गहरे गेहुएं से डहकते लाल तक; पारसी

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

शुद्ध गोरे, सफेद तक; गुजरातियों के चौकोन चेहरों से भिन्न लम्बे चेहरे, ऊँची नाकवाले। पढ़े-लिखे गुजराती, पारसी लम्बे कोट नीची, धोती, किश्तीनुमा टोपी पहनते हैं। पारसी लम्बा कोट, ऊँची टोपी, पैंट, मराठे लम्बा कोट, और धोती, मराठी पगड़ी पहनते हैं। किसान ज्यादातर ऊपर फैंटे की पगड़ी, सटी मिरज़ई और कच्छी धोती पहनते हैं। विशेषकर पश्चिमी गुजराती कच्छ काठियावाड़ में। गुजराती, कच्छी, काठिया-वाड़ी नारियाँ नीचे घाँघरा, ऊपर चोली पहनती हैं; पारसी नीचे साड़ी, ऊपर ब्लाउज; और मराठी ऊपर चोली, नीचे सकच्छ धोती, लाँगवाली। आहार, ज्वार-बाजरे से चावल तक। काम उनके—खेती, मजूरी, उद्योग, व्यापार।

बम्बई

यह बम्बई है, पुराना बन्दर, पर बहुत पुराना नहीं, यही कुछ पांच सौ बरस का! छोटे-छोटे टापुओं का बन्दर, तट ताड़ों और नारियलों से ढका! दोनों ओर पहाड़ी ऊँचाइयों पर उठता हुआ भारत का समुद्री द्वार है बम्बई!

कभी छोटा-सा मछली-मार गाँव था यह मुंबई; मछुओं की बस्ती! जो आज संसार के सबसे बड़े, सबसे व्यस्त बन्दरगाहों में गिना जाता है। इसकी ज़िन्दगी की कहानी मज़े की है। वास्कोदागामा के कालिकट के बंदर में लंगर डालते ही पुर्तगालियों ने भारत के पश्चिमी-पूर्वी-समुद्रों पर अधिकार कर लिया। अरबों का व्यापार छिन्न-भिन्न हो गया। मिस्री और गुजराती सुल्तानों ने तेवर बदले; पर उनके शामिल बेड़ों को

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

पुर्तगालियों ने अरबसागर में पछाड़ दिया और वे उस सागर के स्वामी बन बैठे। गुजरात के सुल्तान को मजबूर होकर सन् १५३४ ई० में बम्बई का बन्दर भी उन्हें दे देना पड़ा। उधर सवा सौ साल बाद इंग्लैंड के राजकुमार चार्ल्स ने जो ब्रागांज़ा की कैथरीन को ब्याहा तो पुर्तगाल के राजा ने बम्बई उसे बेटी के दहेज में दे दिया।

पर इंग्लैण्ड में बम्बई का कुछ विशेष महत्त्व न था और चार्ल्स दूसरे ने उसे ईस्ट इण्डिया कम्पनी को केवल डेढ़ सौ रुपये सालाना मालगुजारी पर दे डाला। उस काल उसमें सात टापू थे, दलदल से भरे। दलदल सुखाकर अनन्त श्रम और व्यय से आज का बम्बई महान् नगर बना। देशी जहाज़ तट के समुन्दर में मँडराने लगे, विदेशी जहाज़ दूर-दूर से माल लाने-माल ले जाने के लिए वहाँ लंगर डालने लगे। स्वयं बंबई देखते ही देखते व्यापार और पुतलीघरों का महान् नगर बन गया। महलों, अटारियों, होटलों का यह नगर संसार के बड़े से बड़े नगरों से होड़ करने लगा। तीस लाख से अधिक नागरिक इस नगर में रहते हैं और रात-दिन जल की धारा की तरह जनता का प्रवाह उसकी सड़कों पर बना रहता है। शाम को चौपाटी, मरीन-ड्राइव और जुहू की छटा देखते ही बनती है। सहसा करोड़ों-अरबों बिजली की बत्तियाँ जल उठती हैं और लकदक नारियों की चमकीली पोशाक, उनके जिस्म में जड़े रतन-जवाहर चमक उठते हैं।

व्यापार का केन्द्र फोर्ट है, किले के आसपास की भूमि।

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

पहाड़ी सिलसिले, कम्बाला और मलाबार पहाड़ियों पर रज-वाड़ों-श्रीमानों के महल हैं, पारसियों-मारवाड़ियों के—देश के करोड़पतियों के। उनमें अगाध दौलत अटी पड़ी है, लक्ष्मी का चंचला नाम वहाँ कोई खास माने नहीं रखता। लक्ष्मी अगर चलती भी है तो वहीं, मलाबार-कम्बाला हिल के एक महल से चल दूसरे महल में जा बसती है।

प्रसिद्ध 'लटकते बाग' वहीं हैं, वहीं पारसियों का शांति का स्तम्भ है। इन पहाड़ियों की चोटियों, महलों की छतों से नगर का दृश्य अनमोल दीखता है, विशेषकर रात में जब बम्बई अपने बिजली के असंख्य डूबते-उतराते तारों से आकाश की छटा धारण कर लेता है।

प्रिंस ऑफ वेल्स संग्रहालय और आर्ट-गैलरी में कला का निवास है। नये-पुराने अनमोल चित्र, अनुपम मूरतें, आदमी की कारीगरी के अभिराम-नाम-नमूने वहाँ ठसे पड़े हैं। देश-विदेश से शिल्पकला की वस्तुएँ छाँटकर मुँहमाँगे दामों खरीद कर लायी गयी हैं। बंबई के धन की मात्रा इनसे और भी बढ़ जाती है।

अपोलो बन्दर में ही अधिकतर यात्री वाले जहाज़ ठहरते हैं। वहीं "भारत का द्वार" है, द्वारनुमा इमारत। सुंदर और शालीन महालक्ष्मी का मन्दिर भी दर्शनीय है और महालक्ष्मी के घुड़दौड़ के मैदान में तो राजा नल और युधिष्ठिर के दाव शर्मा गये हैं, बेशुमार दौलत बाजी में हाथों-हाथ बदल गयी है।

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

ब्रेबोर्न स्टेडियम में जगत्प्रसिद्ध क्रिकेट का मैदान है। नायडू, हज़ारे, मन्कड, मर्चेंट, अमरनाथ ने अपने करतब से उसकी जमीन को जस दिया है। नित्य संसार के किसी न किसी कोने से आयी क्रिकेट की टीमें यहाँ उतरी रहती हैं और संसार रेडियों से मिनट-मिनट की कारगुजारी ललचाये कानों सुनता रहता है। वहाँ तैरने के खुले तालाब हैं जिनमें बड़ी ऊँचाइयों से लोग कूदा करते हैं।

शान्ताक्रूज के स्टेशन से बस दो मील की दूरी पर हवाई अड्डे के सामने बम्बई का अत्यन्त लोकप्रिय समुद्र-तट जुहू है। लंबा-चौड़ा बालू का पीताभ मैदान, जिस पर समय-समय से ज्वार की धाराएँ टूटकर चूर-चूर हो जाया करती हैं, नहाने वालों से अक्सर भरा रहता है। बाहर के नहाने वालों के लिए तो कोई दिन कोई समय नहीं है, पर बंबई वाले अधिक-तर सप्ताह का अन्त वहीं मनाते हैं। तट के हल्के-फुल्के बंगलों में तब रात-रात भर ताश की पार्टियाँ चलती हैं। बंबई से ६ मील दक्खिन-पूरब छतनार हरियाली से ढँका एक छोटा-सा टापू है, एलिफेंटा। आठवीं सदी के शिल्पियों ने अपने कला-विलास के लिये यह मनोरम सागरवर्ती स्थल चुना। पहाड़ी दीवार में कटे पाँच मंदिर वहाँ हैं जिनमें अनेक देव-मूर्तियाँ हैं। सबसे दर्शनीय मूर्ति एक ही चट्टान में कटी उन्नीस फुट ऊँची त्रिमूर्ति की है—ब्रह्मा, विष्णु और शिव की एक साथ।

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

लोनावला

बंबई के बाहर वह पश्चिम का देश सुन्दर दर्श-नीय स्थानों से भरा-पुरा है। आज से प्रायः सवा दो हजार साल पहले के चट्टान काटकर बनाये काले और माजा के प्रसिद्ध बौद्ध गुहा-मन्दिर वहीं हैं, बंबई से करीब सौ मील के भीतर ही। ये कला-मन्दिर युग-कला के अद्भुत नमूने हैं, आंध्र-सात-वाहनों की कीर्ति के परिचायक। लोनावला से वहाँ के लिए सीधी मोटर रोड चली गयी है। लोनावला बंबई से कोई अस्सी मील पर हैं, आकर्षक सरोवरों-झीलों से भरा, जहाँ गर्मियों में लोग अक्सर मन बहलाने, पिकनिक करने चले आते हैं।

पूना

पूना कभी पेशवाओं की राजधानी था। आज भी वह मराठों का गढ़ है। पुराने महलों और पार्कों से वह भरा है। खोज और शिक्षा का वह नगर असामान्य केंद्र है। देश का अकेला नारी विश्वविद्यालय पूना में ही प्रतिष्ठित है। इति-हास उस नगर का गौरवमय है। शिवाजी के निवास से कभी वह पावन हुआ था। मुग़ल सेनापति शाइस्ता खाँ को वहाँ शिवाजी से चोट खाकर हाथ का पंजा पीछे छोड़ भागना पड़ा था। पीछे जिन बाजीराव आदि पेशवाओं की मराठी सेनाओं ने बंगाल-पंजाब तक से चौथ वसूल की, उनका केन्द्र इस पूना में ही था। पूना क़रीब दो हजार फुट ऊँची पथरीली जमीन पर बसा है, बंबई से ११९ मील पर। भारत की सबसे तेज़

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

चलने वाली गाड़ी "दकन क्वीन" वह राह केवल तीन घंटों में तय कर लेती है।

सूरत

सूरत की मूरत जिसने न देखी, उसका जीवन अकारथ गया—यह पुरानी कहावत आज भी अर्थ रखती है। नर-नारी सुन्दर और सभ्य हैं। नगर दर्शनीय है, ताप्ती के मुहाने पर बसा। साढ़े पाँच मील के परकोटे से नगर घिरा है। परकोटे में बारह द्वार हैं। नगर पुराना है, मध्यकालीन।

समुन्दर सूखकर पश्चिम को सरक गया है, इससे जहाजों को कुछ दूर ठहरना पड़ता है। मुगलों के समय पश्चिमी तट का यह, सूरत, प्रधान बंदरगाह था। मक्का के लिए जहाज वहीं से जाते थे। कहलाता भी वह "मक्का का दरवाजा" था। मुगलों से इजाजत लेकर पहले-पहल वहीं अंग्रेज़ों और पुर्तगालियों ने अपनी तिजारती आढ़तें और कोठियाँ बनायीं। शिवाजी ने औरंगजेब से खीझकर दो-दो बार सूरत को लूटा था। आज भी सूरत में समृद्ध व्यापारियों का निवास है। एक ओर उन्हीं अंग्रेजों-पुर्तगालियों की पुरानी उजड़ी कोठियाँ हैं, दूसरी ओर आज की नयी कपड़े की मिलें हैं। सूरत का पुराना गढ़ नदी के तीर आज भी खड़ा नगर के पुराने गौरव का इतिहास कह रहा है। सूरत बम्बई से १६३ मील उत्तर है।

बीजापुर

बीजापुर बंबई से काफी पूरब है। कभी वहाँ आदिलशाही सुल्तानों का प्रताप था। सोलहवीं सदी में वह

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

रियासत प्रबल हुई। पहले तो वहाँ के सुल्तानों ने मुग़लों से सफल लोहा लिया, फिर मुगलों और मराठों, दोनों की इकट्ठी चोट से वह बर्बाद हो गया। शिवाजी का साम्राज्य अधिकतर बीजापुर की ही भूमि पर खड़ा हुआ। शिवाजी के पिता शंभाजी बीजापुर के ही जागीरदार थे।

आज बीजापुर का महत्त्व उसकी इमारतों से है। हिन्दू-मुस्लिम दोनों शिल्पों ने मिलकर वहाँ इमारतों का रूप सँवारा है। मुहम्मद आदिलशाह का मक़बरा गोल-गुंबज भारत के मक़बरों में लासानी है। छ सौ वर्गफुट के चबूतरे पर वह बना है। चारों कोनों पर चार बुर्जियाँ हैं सात-सात मंजिली। बीच में वह विपुल गुंबज है जिसके लिए शिल्प की दुनिया में उसको इतनी ख्याति है। गुंबज का व्यास १२४ फुट है, दुनिया में दूसरा। मकबरे में उसकी बुर्जियों और गुंबज में अद्भुत प्रतिध्वनि होती है।

बीजापुर में इस गोल गुम्बज के अलावा दूसरी भी आलीशान इमारतें हैं, जैसे—किला, सतमंजिली, इब्राहिम, आदिलशाह की मस्जिद और मकबरा। गगन-महल नाम का वहाँ के सुल्तानों का राजमहल भी बड़ा भव्य था; पर आज तो बस उसका वह ९० फुट ऊँचा मेहराब दरवाजा ही रह गया है, जिससे बीजापुर का आख़िरी सुल्तान विजयी औरंगजेब के सामने लाया गया था। दकन की ये रियासतें मिट तो गयीं, पर उन्होंने भी मुगल-साम्राज्य की नींव हिला दी। बीस बरस औरंगजेब दकन में उनसे जूझता रहा और अन्त में उसे

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दिल्ली-आगरे की कब्र नसीब न हुई, दौलताबाद के पास दकन में ही दफन होना पड़ा।

अहमदाबाद

अहमदाबाद गुजरात का हृदय है—गुजराती संस्कृति का गढ़। पच्छिमी समुन्दर से दिल्ली-आगरे जाने वाले राजमार्ग पर वह पड़ता था, जैसे आज भी बंबई की रेल उधर से ही राजस्थान होती हुई दिल्ली आती है। आगरे के मुगल बादशाह से सूरत में तिजारती कोठियाँ बनाने की इजाज़त लेने के लिए अंग्रेज, डच और पुर्तगाली सौदागरों ने उसी राह आगरे की यात्रा की थी। उन्होंने उस नगर की बड़ी तारीफ की है। सर टामस रो भी उसके प्रशंसकों में से था। उसने उसे लंदन के बराबर बताया है।

अहमदाबाद करीब साढ़े पाँच सौ साल पुराना नगर है। १४११ ई० में बसा था। साबरमती के तीर बसा वह नगर भारत के प्रमुख नगरों में से है। पश्चिमी भारत के उद्योग का तो वह केन्द्र ही है। उसमें कपड़े की अनेक मिलें हैं।

अहमदाबाद की इमारतें भी भारत के हिन्दू-मुस्लिम एकजाई शिल्प के नमूने हैं। गुजराती शैली के महलों, मस्जिदों, मकबरों और मन्दिरों की वहाँ भरमार है। वहाँ की जामा मस्जिद अपनी सुघराई के लिए सारे एशिया में मशहूर है। उसको बने आज सवा पाँच सौ साल हो गये। पास ही सुन्दर जालियों के लिए प्रसिद्ध तीन दरवाजे हैं। पर जालियों का कटाव

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

जितना सुन्दर सीदी सैयद की मस्जिद में है, उतना और कहीं नहीं। वृक्ष, पौधे, लताएँ जैसे उस कटाव में झूम उठी हैं; पत्थर, शिल्पियों के हाथ में पीतल के तार बन गये हैं। रानी सिप्री की मस्जिद भी अपनी खूबसूरती में एक ही है।

पर अहमदाबाद का महत्त्व केवल उसकी मिलों या आलीशान इमारतों से ही नहीं है। कभी वह भारतीय स्वराज्य-वादियों का काशी था। महात्मा गांधी ने सेवागाँव के पहले वहीं अपना सत्याग्रह-आश्रम बनाया था। देश के अनेक नेताओं को अभिमान है कि वे उस आश्रम में रह आये हैं। पर अपनी आन के लिए महात्मा को उसकी ममता छोड़ते भी देर न लगी। वहीं से उन्होंने नमक का कानून तोड़ने के लिए अपना इतिहास-प्रसिद्ध डंडी-मार्च किया था। उन्होंने प्रण किया कि जब तक वे स्वराज्य न ले लेंगे, साबरमती आश्रम नहीं लौटेंगे। और वह यशस्वी महात्मा फिर वहाँ नहीं लौटा। आज भी वह आश्रम अहमदाबाद में साबरमती के तीर उजाड़ पड़ा है।

बड़ौदा

बड़ौदा भी ठेठ गुजराती केन्द्र है। अभी हाल तक वह गायकवाड़ राजकुल की राजधानी था। सयाजीराव गायकवाड़ भारत के रजवाड़ों में अपनी उदारता और प्रगतिशीलता में बेजोड़ थे। उनके दादा ने नेपोलियन को मिस्र जीतने पर उससे राजनीतिक खत-किताबत की थी। उसी राजा ने नेपोलियन का ताज भी प्रायः तिरपन लाख में खरीदा; जो वहाँ राजमहल के संग्रहालय में आज भी सुरक्षित है।

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

नगर विश्वामित्री नदी के तीर पर बसा है, विशाल और मनोहर महलों, इमारतों और पार्कों से भरा ! नगर नया है, सड़कें उसकी खूब चौड़ी हैं, साफ-सुथरी। चिड़ियाखाना, अजायबघर, भारतीय और पश्चिमी चित्रों का संग्रहालय आदि दर्शनीय हैं। लक्ष्मीविलास महल स्वयं हिन्दी सरासानी शिल्प का नमूना है, साथ ही बेशकीमती रत्नों और कला के आदर्शों का भी वहाँ असाधारण संग्रह है।

बड़ौदा के ओरियण्टल "प्राच्य-विद्या" इन्स्टिट्यूट में संस्कृत की अनेक बहुमूल्य हस्तलिपियाँ सुरक्षित हैं। अनेक पिछले सालों में प्रकाशित भी होती रही हैं। विश्वामित्री के तीर-तीर करीब १२५ एकड़ भूमि घेरे वहाँ का सार्वजनिक पार्क चला गया है। मकरपुर महल का नजरबाग भी अत्यन्त आकर्षक है। नज़रबाग महल के रतन-जवाहरात का संग्रह बेजोड़ है। नेपोलियन का ताज भी वहाँ रखा है। सूरसागर झील का सौन्दर्य भी देखते ही बनता है। पच्छिम के नगरों में कम नगर बड़ौदा के से सुंदर हैं। आदमी की कला ने उसे वह दिया है, जो प्रकृति न दे सकी थी।

पालिताना

पालिताना अपने जैन-मन्दिरों के लिए प्रसिद्ध है। वहाँ ८६३ जैन-मन्दिर हैं। इतनी संख्या में जैन-मन्दिर एक स्थान में शायद और कहीं नहीं हैं। मन्दिर वहाँ की प्रसिद्ध और पवित्र शत्रुञ्जय पहाड़ी पर बने हैं। जैनों के पाँच पवित्र पहाड़ हैं, शत्रुञ्जय भी इन्हीं में से एक है। वहाँ के मन्दिरों में

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

से अनेक तो काफी प्राचीन हैं, हिन्दूकाल के ग्यारहवीं सदी के बने। पालिताना में अनेक पुण्य अवसरों पर जैन साधुओं और गृहस्थों का समुद्र उमड़ आता है।

सौराष्ट्र

सौराष्ट्र काठियावाड़ का प्राचीन नाम है, जो आज फिर प्रयुक्त होने लगा है। गुजरात के पच्छिम और कच्छ के दक्खिन, समुद्र में केकेड़े-सी घुसी हुई उसकी स्थिति है। उसमें अनेक समृद्ध नगर हैं। समुद्र के तट पर अनेक बन्दर भी हैं। समुद्र के छिछले पानी से मोती निकाले जाते हैं। गीर के जंगल में सिंह हैं। वस्तुतः सारे भारत में बस वहीं सिंह बच रहे हैं। अब उन्हें ले जाकर उत्तरप्रदेश के जंगलों में भी रखने पर विचार किया जा रहा है। भारत से सिंहों की नस्ल खत्म होती जा रही है, इसलिए भारत सरकार बचे हुए सिंहों की रक्षा करने और उनकी संस्था बढ़ाने की कोशिश में है।

सौराष्ट्र का प्रधान नगर जामनगर है, हाल का बना। वहाँ एक रेडियम इन्स्टिट्यूट और ग्रह-दर्शन के लिए वेधशाला है। जामनगर रेशमी और कारचोबी के काम के लिए विख्यात है। राजकोट सौराष्ट्र की राजधानी है। झीलों की रौनक से नगर बड़ा सुहावना लगता है। पोरबन्दर, जैसा नाम से प्रगट है, अरब सागर के तट का बन्दरगाह है। किसी समय अफ्रीका, अरब और दूसरे पच्छिमी देशों से उसका घना व्यापार चलता था। गर्मियों में अनेक लोग वहाँ की सुहावनी आबहवा लेने

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

जाते हैं। नगर अब इसलिए और विख्यात हो गया है कि वह भारतीय राष्ट्रीयता के पिता महात्मा गांधी की जन्म-भूमि है।

सौराष्ट्र के पच्छिम-उत्तर में प्रसिद्ध पावन द्वारिका बसी है, सागर के तीर। महाभारत और भागवत में लिखा है कि कंस को मारने के बाद मगध के सम्राट और कंस के ससुर जरासन्ध के मारे कृष्ण को मथुरा छोड़कर पच्छिम जाना पड़ा था। तभी उन्होंने द्वारिका नगरी का निर्माण कराया। इसी द्वारिका से कृष्ण, उद्धव आदि से मथुरा की गोपियों के पास सन्देश भेजते रहे थे; पर मथुरा कभी गए नहीं। द्वारिका के पास से समुद्र कुछ हट गया है, जिससे समुद्री जहाजों को कुछ दूर ही रुक जाना पड़ता है।

सोमनाथ भी प्राचीन स्थान है। इसे सौलंकी चालुक्यों ने बनवा रखा था। अपनी शिल्पकला के लिये वह दूर-दूर तक विख्यात था। उसके खंडहरों से उसकी भव्य कला और विशालता का पता चलता है। महमूद ग़जनी ने मन्दिर ढहा दिया था और उसकी मूर्ति तोड़ डाली थी। मन्दिर में राजाओं और श्रीमानों द्वारा सदियों से चढ़ाई गई बेइन्तहा दौलत थी, महमूद वह सब लूट ले गया।

ऐतिहासिक दृष्टिकोण से सौराष्ट्र में सबसे अधिक महत्व-पूर्ण स्थान गिरनार है। गिरनार पर्वत पर अनेक मन्दिर हैं। मन्दिरों में कटाव का काम खूब हुआ है, जो जैन-मन्दिरों की विशेष शैली प्रगट करता है। उसी गिरनार पर्वत की एक

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

चट्टान पर महामना अशोक का प्रसिद्ध शिलालेख है, आज से कोई सवा दो हजार साल पुराना। अशोक के सौराष्ट्र के गवर्नर ने वहीं दो नदियों को बांधकर एक सुन्दर झील बनवा दिया था। करीब चार सौ साल बाद शकराज रुद्रदामा के शासन-काल में उस झील के बाँध टूट गये। वहीं लिखवाये अपने अभिलेख में रुद्रदामा बड़े गर्व से कहता है कि बगैर अपनी प्रजा पर उस निमित्त नया कर लगाये उसने अपने खर्च से वह बाँध फिर से बँधवा दिया। वह लेख संस्कृत गद्य की पहली सुन्दर शैली प्रस्तुत करता है। किस प्रकार विदेशियों ने भारतीय संस्कृत अपना ली थी, इसका यह लेख असाधारण उदाहरण है। रुद्रदामा के करीब तीन सौ बरस बाद प्रसिद्ध गुप्त सम्राट स्कन्दगुप्त विक्रमादित्य ने वहीं तीसरा काव्यमय शिलालेख खुदवाया। वह भी उसी झील की मरम्मत से संबंध रखता है। गिरनार पर्वत के पास ही उसके कुछ पूरब जूनागढ़ का प्राचीन नगर है, जहाँ वहाँ के राजाओं का बनवाया हुआ ऊपरकोट का गढ़ है। गढ़ के भीतर-बाहर अनेक प्राचीन ऐतिहासिक वस्तुएँ हैं और उसके चारों ओर बौद्ध गुफाओं की भरमार है। भारतीय इतिहास में ऊपरकोट और गिरनार का बड़ा महत्व है।

आबू

माउण्ट आबू अजमेर के पच्छिम-दखिन राजस्थान और गुजरात सीमा पर है। वैसे तो अजमेर मरवाड़ का अबतक अपना स्वतन्त्र राज्य था और वह उचित ही अब राजस्थान

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

में मिला लिया गया है, पर स्वयं माउन्ट आबू के आसपास की जनता भी राजस्थानी संस्कृति में सजी-धजी है। प्राचीन-काल में वह स्थान गुजरात के राजाओं के अधिकार में था; पर पिछली अनेक सदियों से उसपर सिरोही के राजपूत शासन करते थे। वहाँ के मन्दिरों में दर्शन के लिये जानेवाले मुसाफिरों से सिरोही राज्य कर भी वसूल करता था।

माउन्ट आबू का प्राचीन नाम अर्बुद है, जो अरावली पहाड़ों के सिलसिले के पास ही ४५०० फुट ऊँची एक चोटी है। बम्बई जाने वाली रेलवे के आबूरोड से प्रायः बारह मील दूर मोटर रोड से चलकर हम माउन्ट आबू पहुँचते हैं, जो भारत के गिरिनारों में अपना विशेष सौंदर्य रखता है। स्थान अत्यन्त सुन्दर है और उसके ऊपर की झील तो असाधारण आकर्षक है।

दो ही तीन मील की दूरी पर दिलवाड़ा के प्रसिद्ध जैन-मन्दिर हैं, सर्वथा संगमरमर के बने। अपनी कटाई और डिज़ाइनों की परंपरा के लिये इस देश के शिल्प में अनुपम। करीब ग्यारहवीं सदी के गुजराती राजाओं के मन्त्रियों ने उन्हें बनवाया था। निकट के ही जंगलों में अचलेश्वर का विख्यात मन्दिर भी है।

अजन्ता

प्राचीन भारतीय चित्रकला का ऐश्वर्य अजन्ता के गुफा-मन्दिरों में भरा पड़ा है। अजन्ता गाँव के पास ही ये गुफाएँ हैं, जिन्हें मनुष्य के धीरज और श्रम ने पहाड़ों में काटकर

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

बारहदरियों का रूप दे दिया है। अजन्ता की गुफाएँ सह्याद्रि "पच्छिमी घाट" की पहाड़ियो में हैं और बम्बई से ६-७ घण्टों में पूरब रुख सफर करके वहाँ पहुँचा जा सकता हैं। अभी तक वे हैदराबाद के राज्य में थीं, अब महाराष्ट्र में हैं। राह जो वहाँ पहुँचते हैं, प्रायः जंगल में छोटा सा मैदान, उसमें बहता एक नाला और उसके ऊपर अर्द्ध-चन्द्राकार २१ गुफाएँ। इनमें २४ बौद्ध भिक्षुओं के रहने के हाल और कमरे हैं और पूजने के लिये पाँच चैत्य मन्दिर, जिनमें बुद्ध की मूर्ति पधराई हुई है। एक-एक हाल में अनेक छोटी समाधि और रहने के कमरे बने हैं। हाल को दीवारें छत-तक अभिराम चित्रों से भर दी गई हैं। ये चित्र संसार के सुन्दर-तम चित्रों में गिने जाते हैं। बुद्ध के जोवन से संबंध रखने वाले अनेक चित्र हैं। उनका सौंदर्य और सादगी अकथनीय है, उनमें जैसे जोवन लहरा रहा है। इन चित्रों का असर लंका और चोन के चित्रों पर पड़ा। चीन में तुन हुआंग की सैकड़ों गुफाओं में अजन्ता की ही देखादेखी बौद्ध चित्र बने। एशिया के अनेक देश अजन्ता की कला के ऋणी हैं।

अजन्ता के चित्रों की ही भाँति अत्यन्त सुन्दर वहाँ की मूरतें भी हैं, जो कुछ बाहर (अधिकतर बाहर ही हैं) चट्टानों में ही काट लो गई हैं।

अजन्ता की गुफाएँ आज से कोई सवा दो हजार वर्ष पहले अशोक के ही समय काटी जाने लगी थीं और उनका चित्रण चालुक्यों के समय सातवीं सदी ईसबी तक

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

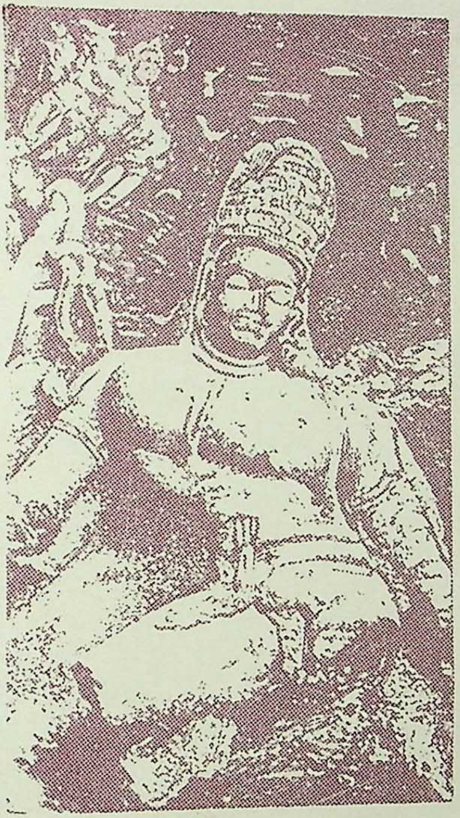

एलीफेंटा की शिलपकला का नमूना—देवमूर्तियाँ

प्रसिद्ध अशोक-स्तंभ

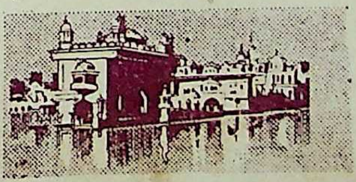

अमृतसर का स्वर्णमन्दिर

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

होता रहा था। अधिकतर चित्र गुप्तों के समय भारतीय इतिहास के सुनहरे युग में बने। पहले अजन्ता के पहाड़ मौर्यों के राज में थे, फिर शुंगों के शासन में आये, फिर आन्ध्र सातवाहनों के, पुनः गुप्तकाल के समकालीन वाकाटकों के और अन्त में चालुक्यों के। और शुंगकाल यानी ईसा से पहले दूसरी सदी से लेकर ईसा की सातवीं सदी तक लगातार चित्र लिखे जाते रहे। कितना धन और कितना श्रम इन खड़े पहाड़ों को खोदकर हाल और मन्दिर बनाने में लगा होगा, इसका अन्दाज़ कुछ अधूरी गुफाओं को देखकर लगाया जा सकता है। प्राचीन काल के चित्रों में अजन्ता के चित्र सबसे सुन्दर हैं।

एलोरा

अजन्ता की गुफाओं से ७५ मील पच्छिम उसी सह्याद्रि के सिलसिले में एलोरा की अजन्ता की सी ही पहाड़ में कटी ३९ गुफाएँ हैं, बौद्धों, जैनों और हिन्दुओं तीनों की। पर प्रधानता इन गुफाओं में हिन्दू-मन्दिरों की है। अजन्ता और एलोरा की गुफाओं में विशेष फर्क यह है कि जहाँ अजन्ता में चित्रों की प्रधानता है, वहाँ एलोरा में मूर्तियों की है। एलोरा की गुफाएँ अधिकतर आठवीं-नवीं सदियों की हैं। इनमें प्रधान शिव का कैलास-मंदिर है, राष्ट्रकूट राजाओं का बनवाया हुआ। इसमें से करीब तीस लाख हाथ पहाड़ काटा गया है, इतना कि इसके अन्दर सारा ताजमहल मय उसके आँगन व बगीचे के रख दिया जा सकता है। कुछ अजब नहीं

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कि ये मंदिर और सजीव-सी ये मूर्तियाँ उस काल की दकन की कला के लासानी नमूने हैं। कुछ आश्चर्य नहीं कि कैलास की गणना संसार के आश्चर्यों में की जाती हो।

कैलास के अलावा दूसरी गुफाओं की दीवारों, खंभों आदि पर भी गजब का कटाव है। लगता है कि जब कला-वन्त मूर्तियों को रतन-जवाहरात के गहनों से सजा चुके फिर भी उनकी अनन्त संपदा जो बच रही तो उन्होंने उन्हें इन खम्भों पर बिखेर दिया।

देवगिरि

एलोरा औरंगाबाद के जिले में पड़ता है, औरंगाबाद से कुछ पूरब। एलोरा और औरंगाबाद के बीच की राह में ही देवगिरि है, यादवों की राजधानी। वहाँ उनका बनवाया चक्करदार सीढ़ियों वाला पुराना किला है। किले के ऊपर जल वगैरह सभी आवश्यक साधन हैं, जहाँ महीनों बैठकर रक्षा की जा सकती थी। घुमावदार सीढ़ी के ऊपर एक बड़ा सा तवा है, जिस पर पहले आग सुलगा दी जाती थी और सुरंग की सीढ़ियों पर चढ़ती शत्रु-सेना धुएँ से घुटकर मर जाती थी। दूसरी ओर खड़ा पहाड़ था; पर इतने सुरक्षित किले को भी चालाकी से अलाउद्दीन खिलजी ने सर कर लिया था।

मुहम्मद तुगलक ने राजधानी को शत्रुओं से बचाने के लिये दिल्ली छोड़ इस देवगिरि को राजधानी बनाया और उसका नाम भी दौलताबाद रख दिया था; पर उसका वह

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

प्रयत्न असफल हो गया और उसे लौटकर राजधानी दिल्ली में ही रखनी पड़ी। अरब घुमक्कड़ इब्नबतूता ने भी देवगिरि की सुंदरता का वर्णन किया है।

दौलताबाद से औरंगाबाद की राह में औरंगजेब की बेगम रबिया दुरानी की 'बीबी का मकबरा' और स्वयं औरंगजेब का अपना मकबरा 'राजा' पड़ता है। औरंगजेब दकनी रियासतों से लड़ता वहीं मरा था और वहीं दफनाया गया था। उसका मकबरा ठीक ताजमहल की नकल में बना है सादे पत्थरों का।

नासिक

नासिक बंबई से पूरब इटारसी की राह में गोदावरी के तीर बसा है और बड़ा पुण्यतीर्थ माना जाता है। गोदावरी को वहाँ गंगा भी कहते हैं। नासिक बड़ी सुन्दर पर्वतमाला की छाया में बसा है। उसी पर्वतमाला में आन्ध्र सातवाहन राजाओं की खुदवाई हुई अनेक गुफाएँ हैं, जिन्हें 'लेण' कहते हैं। उन्हीं गुफाओं में उन राजाओं की विजयों के वृत्तान्त प्राकृत में खुदे हैं।

गोआ

गोआ पच्छिमी समुद्रतट पर बंबई के दखिन और मलावार के उत्तर पुर्तगालियों का प्रसिद्ध बन्दर है। पन्द्रहवीं सदी के अन्त में वास्कोदागामा ने समुद्र की राह अफ्रीका का फेरा लगाकर भारत का पता लगाया था। तभी से पुर्तगालियों

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

का उस समुद्र पर अधिकार हो गया था। १५१० ई० में उन्होंने गोआ पर अधिकार कर लिया और पचास-पचपन साल बाद उसे इधर के सारे पुर्तगाली इलाकों की राजधानी बना दिया। पुराने गोआ के खण्डहर आज भी खड़े हैं, जो अपनी पुरानी यादगार अब भी कायम रखे हैं और एक युग तक कायम रखेंगे।

पूरब का देश

पूरब का देश प्रायः हजार मील लम्बा है, हिमालय के उत्तर प्रदेश के छोर से दार्जिलिंग तक, हिमालय से छोटा नागपुर के पठार तक। यह पानी का देश है, अनेक नदियों का जल उसमें बहता है। आकाश का जल मूसलाधार वहाँ बरसता है। इस बीच के देश में राजमहल आदि की एकाध नीची पहाड़ियों को छोड़कर एक रोड़ा कंकड़ तक नहीं। बस उपजाऊ मिट्टी और लहलहाते धान के खेत हैं। इसके पच्छिमी भाग में राजगृह और पाटलिपुत्र के साम्राज्य खड़े हुए हैं और अनेक प्रसिद्ध पंचायती राज्यों ने इतिहास बनाया है। जहाँ जनक और याज्ञवल्क्य, महावीर और बुद्ध ने ज्ञान का उपदेश किया है, अशोक ने भाई-चारे के संदेश दिए हैं। वहीं महाभारत के जरासन्ध ने पहला प्राचीन साम्राज्य खड़ा किया, चन्द्रगुप्त और चाणक्य ने वहीं से अपना राजनीतिक तथा गुप्त सम्राटों ने अपने यश और वैभव का विस्तार किया, और वहीं पाणिनि और पतंजलि ने अपने व्याकरण लिखे।

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

बोधगया

बोधगया दखिन बिहार में गया से करीब सात मील पर है। गया और पटना के मिलने से प्राचीन मगध बनता है। गया पितरों के श्राद्ध के लिये आज भी देश का सबसे पवित्र तीर्थ है और सारे भारत से लोग वहाँ अपने पितरों को पिंडदान करने जाते हैं। बोधगया बौद्धौं का सबसे महान् तीर्थ है ! वहीं सिद्धार्थ गौतम को ज्ञान मिला, जिससे वे बुद्ध कहलाये और वह स्थान पीछे बोधगया कहलाया !

वहां एक पीपल का वृक्ष है, जिसके नीचे बुद्ध आसन मारकर बैठे थे और आत्म-ज्ञान-लाभ किये थे। थोड़ी ही दूर पर उरुबेला नाम का गाँव था, जहाँ से तब कुछ नर्तकियाँ नाचती-गाती चलीं, ज़ब बुद्ध अपने ध्यान में बैठे थे। उन्होंने गाया कि देखो, बीणा के तारों को बहुत ढीला न करो, नहीं तो वह बजेगी नहीं; तार टूट जाएँगे और वीणा नहीं बजेगी। बस बुद्ध ने उसी सुझाव से अपने ज्ञान का गुर पा लिया, जो अत्यन्त विलास और अत्यन्त तप के बीच का मार्ग है पीपल और उसके नीचे का आसन आज भी दिखाये जाते हैं। यह पीपल, उस पीपल की, जिसके नीचे बुद्ध बैठे थे, सन्तान है। मूल पीपल को सातवीं सदी में बंगाल के राजा शशांकने कटवाकर उसकी जड़ में अंगार रखवा दिये, कि मूल फिर न पनपे, पर जिन्दगी, कि, मारे नहीं मरती ! पेड़ फिर पनप उठा। पास ही अशोक ने एक मन्दिर बनवा दिया था, जिसकी भूमि बोधगया के आज के विशाल मन्दिर के नीचे दबी पड़ी

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

है। उसके पास ही पत्थर का परकोटा ईसा-पूर्व दूसरी सदी यानी कोई सवा दो हजार वर्ष का बना आज भी सुरक्षित है। उसकी रैलिंग पर भी साँची और बरहुत की स्तूप-रैलिंगों की ही तरह मूरतें उभरी हुई हैं। आज का बोधगया का मन्दिर भी हजार साल से ज्यादा पुराना है। ग्यारहवीं सदी में तो उसकी मरम्मत हुई थी। बड़ा विशाल मन्दिर है वह, भारत के प्राचीनतम विशाल मंदिरों में से एक! उसका विमान-शिखर १८० फुट ऊँचा है, कुतुब की लाट से बस जरा ही छोटा। स्तंभों के ऊपर टिके पूरबी द्वार से उसके विमान-शिखर की ओर पहुँचा जाता है। मन्दिर अत्यन्त भव्य और शालीन है।

राजगिरि

बिहार की चप्पा-चप्पा जमीन पावन और ऐतिहासिक है। गया की उत्तरी पहाड़ियों में बराबर की गुफाएँ हैं, गुफाएँ क्या हैं! गुफा मन्दिर हैं, जिनकी दीवारें पालिश द्वारा दरपन की तरह चमका दी गई हैं। आजीविक साधुओं के रहने के लिए उन्हें अशोक ने खुदवाया था। उस काल का उनमें एक लेख भी है। बुद्ध, गया जाते समय इधर ही से राजगिरि की पहाड़ियों से उतर गये थे।

पहाड़ियों के पार, और उत्तर राजगिरि है, पटने से करीब सवा सौ मील दक्खिन। राजगिरि का पुराना नाम राजगृह है, उससे भी पुराना गिरिवज्र। महाभारत के समय यही गिरिवज्र जिसका अर्थ है पहाड़ी बस्ती, जरासन्ध की राजधानी था। फिर बुद्ध के समकालीन राजा बिंबसार ने उस पुराने नगर के

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

बाहर अपने महल बनवाये, जिससे वहाँ एक नया नगर ही बस गया—राजगृह। उसे पत्थर के परकोटे से घेर दिया गया, जिसके अनेक टूटे भाग आज भी बच रहे हैं। किलेबन्दी की इतनी प्राचीन इमारत इस देश में दूसरी नहीं है। पीछे पहाड़ों में प्रायः तभी की एक बारादरी है, जिसे जरासंध की बैठक कहते हैं।

राजगिरि में महावीर और बुद्ध ने अनेक बार उपदेश किये थे। वहीं से अजातशत्रु ने अपने साम्राज्य का विस्तार किया था और वैशाली के पंचायती संघ राज्य को जीतकर हिमालय तक की भूमि पर उसने राज किया था। राजगिरि में गरम पानी के अनेक सोते हैं।

नालन्दा

राजगिरि की पहाड़ियों के साये में ही नीचे के मैदान में नालन्दा का विहार था, प्राचीन संसार का सबसे बड़ा विश्व-विद्यालय। वहाँ एक से एक महापण्डित रहते थे और वहाँ अत्यन्त प्रतिभावान् विद्यार्थियों का ही प्रवेश हो पाता था। संसार के अनेक देशों से आकर वहाँ विद्यार्थी ज्ञान प्राप्त करते थे। चीनी यात्री हुएन-त्सांग और ईत्सिग ने वहीं रहकर पढ़ा था। वहाँ के छात्रों की संख्या हुएन-त्सांग ने करीब दस हजार बताई है। उनके ६ मंजिले छात्रावासों के खंडहर वहाँ आज भी खड़े हैं। वहाँ खुदाई में मिली चिजों की रक्षा और दर्शन के लिये पुरातत्व-विभाग ने एक संग्रहालय बनवा दिया है।

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

और अब तो प्राच्यविद्या के अध्ययन और खोज के लिये वहाँ एक विद्यालय भी खुल गया है।

विहार और सुल्तानगंज

नालन्दा के पास ही बिहार शरीफ है, मुसलमानों का तीर्थ। वहीं पाल राजाओं के समय बौद्ध-ज्ञान का एक और केन्द्र था, उड्डुन्तपुरी का विहार। वहाँ भी बौद्ध पंडित रहते और भिक्षुओं को पढ़ाते थे। भारत के दसवीं-ग्यारहवीं सदी के विद्यालयों में उसकी भी ख्याति थी। बारहवीं सदी के अन्त में नालन्दा के साथ ही उड्डुन्तपुरी का भी नाश हो गया।

सुल्तानगंज भागलपुर में है। भागलपुर को तब चम्पा कहते थे, जो अंग देश की कभी राजधानी रही थी। उसे जीतकर राजगृह के राजा विंबसार ने अपने राज्य में मिला लिया था। सुल्तानगंज का प्राचीन नाम विक्रमशिला है। गंगा की बीच धारा में एक पहाड़ी टापू है, उसी पर और तट पर भी विक्रमशिला का प्रसिद्ध विहार था, जिसकी प्रसिद्धि नालन्दा विश्वविद्यालय की ही तरह थी और जहाँ देश के कोने-कोने से भिक्षु जाकर विद्याध्ययन करते थे। विक्रमशिला के अनेक विद्वान भिक्षुओं ने चीन और तिब्बत जाकर बौद्ध धर्म का प्रचार किया था और वहाँ की भाषाओं में अपनी धर्म-पुस्तकों के अनुवाद किये थे। आज भी गंगा की विमल धारा में वह टापू कुछ नए मंदिर सिर से उठाये खड़ा है।

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

पटना

पटना विहार प्रान्त की राजधानी है। उसका पुराना नाम पाटलिपुत्र है। भारत की वह करीब हजार साल तक राजधानी रहा था, मगध की राजधानी जिसके राजा नन्दों की सेना से डरकर विश्वविजयी सिकन्दर की विजयवाहिनी व्यास के तट पर हथियार डाल लौट गई थी। मगध की यह राजधानी तब के भारत की राजधानी थी और तब चन्द्रगुप्त मौर्य और अशोक के समय उसने अफगानिस्तान के काबुल-कन्दहार और हिन्दुकुश से दखिन हैदराबाद-मैसूर तक और पश्चिम-पूरब में सागर तक की भूमि पर शासन किया था।

अजातशत्रु के पोते उदयी ने राजगृह से उठकर गंगा और सोन के कोने में उसे बसाया था। वही फिर देश की राजधानी बना। बुद्ध के समय ही अजातशत्रु ने वहाँ एक कोट बनवा दिया था और बुद्ध ने उसे बढ़ते हुए गाँव के उत्कर्ष की भविष्यवाणी की थी। उसी पाटलिपुत्र में शूद्र नन्दों, मौर्यो, शुंगों, कण्वो, गुप्तों आदि ने राज्य किये। वह पुराना नगर गंगा और सोन के कोने में करीब नौ मील लंबा और डेढ़ मील चौड़ा बसा था। नये नगर पटना सिटी के पूरबी भाग के नीचे वह प्राचीन नगर दबा सा है। कुम्रहार गाँव में सिटी के पास जो खुदाई हुई, उसमें चन्द्रगुप्त और अशोक के महलों के कुछ पत्थर और नगर के परकोटे की लकड़ी के कुछ भाग निकले हैं, जिससे सेल्यूकस के राजदूत मेगस्थनीज़ के लिखे वृत्तान्त की सत्यता प्रमाणित हो जाती है। पाटलिपुत्र का नाम

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

पटना मध्यकाल में पड़ा। उसका पच्छिमी भाग बाँकीपुर हाल का बसा है। वहीं राज-भवन, विधान भवन, सचिवालय आदि हैं। वहाँ के विशाल संग्रहालय में प्राचीन काल की अत्यन्त सुन्दर पत्थर, धातु और मिट्टी की मूरतें और मुगल आदि शैली के चित्र संग्रहीत हैं। बाँकीपुर का प्रसिद्ध गांधी मैदान पहले घुड़दौड़ का मैदान था, अब उसमें सार्वजनिक सभाएँ होती हैं। उसके एक कोने पर विख्यात गोलघर है, जिसे वारेन हैस्टिंग्स के जमाने में नाज रखने के लिये बखार के रूप में बनाया गया था। उसमें बोलने से गूँज होती है। गोलघर ९० फुट ऊँचा और ४२० फुट आधार पर घेरे में है। उसके छत से सारा नगर और सर्पीली नदी की धारा दूर तक दिखाई पड़ते हैं। पटना युनिवर्सिटी और मेडिकल कालेज के पास ही खुदाबख्श ओरियन्टल लाइब्रेरी है (प्राच्य पुस्तक-संग्रह) जिसमें अरबी और फारसी हस्तलिपियों का असाधारण संग्रह है। इन में कुछ तो वे अमूल्य ग्रंथ हैं जो स्पेन के कोर्दोवा के प्रसिद्ध अरबी विश्वविद्यालय से ईसाई राजाओं द्वारा उसके विध्वंस के अवसर पर बचा लिये गए थे। उनकी केवल यही प्रतियाँ संसार में उपलब्ध हैं। पटना सिटी में हर मन्दिर है,जहाँ सिक्खों के गुरु गोविन्द सिंह का जन्म हुआ था।

रांची

बिहार की ग्रीष्मकालीन राजधानी रांची है। जो छोटा नागपुर के पठार पर प्राय: २६०० फुट की ऊँचाई पर बसा है। पटने से दखिन-पूरब जाते हुए राह में हजारीबाग पड़ता है, जहाँ

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

का जेल राजनैतिक कैदियों से कभी भरा रहता था और आगे रामगढ़ है, जहाँ पिछले महायुद्ध में इतिलियन कैदी रखे गये थे। रांची की आबहवा सदा खुशनुमा रहती है, सर्दियोंमें न तो अधिक सर्दी पड़ती है, न गर्मियों में अधिक गर्मी। थोड़ी ही दूर पर उड़ीसा की प्रसिद्ध नदी स्वर्णरेखा का एक सोते से निकास है। समतल मैदान में सुराख से उँगली भर मोटी एक धारा निकलती है जो पहले पतली बहती है फिर उड़ीसा में पहुँच कर भयावह रूप धारण कर लेती है। प्रायः तीन हजार फुट की ऊँचाई पर इटकी है, जहाँ राजयक्ष्मा के इलाज के लिये सैनिटोरियम है और पूरब पलामू जिले में नदरहट है, जिसकी पहाड़ी चोटी पर गर्मियों में भी ठंड रहती है।

जमशेदपुर

कलकत्ते से प्रायः १६५ मील उत्तर-पश्चिम छोटा नागपुर में ही टाटा का प्रसिद्ध नगर टाटा नगर (जमशेदपुर) है। इसके पास ही लोहे और कोयले की गहरी खानें हैं। जमशेदपुर भारत के प्रधान औद्योगिक नगरों में से है और लोहे के कारखाने तो जितने वहाँ हैं, उतने और कहीं नहीं हैं।

छोटा नागपुर के ही एक भाग में भारत सरकार ने दामोदरघाटी का प्रसिद्ध बाँध बाँधा है, जहाँ से अनेक नहरें निकलकर उस भू-भाग को सींचेंगी। वैसे भी वह भाग नदियों-नालों का देश है।

बिहार का पश्चिमी भाग

पटना के पश्चिम शाहाबाद जिले में प्रसिद्ध सासाराम है,

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

जहाँ अशोक ने अपना स्तंभ खड़ा किया था। वहीं से उठकर किसानों के बादशाह शेरशाह ने दिल्ली का मुगलों का तख्त हुमायूँ से छीन लिया था और भोजपुरिये वीरों की हरावल से वीरभूमि राजस्थान और पंजाब को रौंद डाला था। वह भारत के इतिहास में प्रायः एक ही अवसर था, जब सूबे के किसी आदमी ने केन्द्रीय दिल्ली पर कब्जा करके राज किया। उसी शेरशाह ने राजा टोडरमल को संरक्षा दी थी, जिसने अकबर की भूमि-व्यवस्था सँभाली। शेरशाह की सूझ पर ही आज के शासन की बुनियादी बातें कायम हैं। उसकी सड़कें, रुपये, सिक्के, जमीन-बन्दोवस्त, डाक आदि सभी। सासाराम में शेरशाह का अभिराम मकबरा है, कला की दृष्टि से अत्यन्त सुंदर।

पास ही कुछ मील पर सोन से लगा प्रसिद्ध रोहतासगढ़ है, जिसका किला भारत के असाधारण प्रबल दुर्गों में गिना जाता है। शेरशाह ने उसे बड़ी चालाकी से सर किया था। हिन्दी के प्रारंभिक उपन्यासकार देवकीनन्दन खत्री ने अपनी चन्द्रकान्ता-संतति में इस किले का बार बार उल्लेख किया है। किला अब टूटी अवस्था में उजाड़ पड़ा है।

सासाराम के पास ही सोन के किनारे डालमियानगर है जहां डालमिया ने अनेक मिलें खड़ी की थीं। अब वे कागज, सीमेंट आदि की मिलें साहू जैन की संपत्ति हैं। डालमिया नगर का स्टेशन डेहरी-आन-सोन है। नगर देश के समृद्ध और औद्योगिक स्थलों में है।

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दूर पच्छिम बक्सर है, जहाँ पास ही चौसा में कभी शेर-शाह ने हुमायूँ को गंगा में कूदने के लिये मजबूर किया था। डूबते मुगल बादशाह को फिर एक भिश्ती ने बचा कर दूसरे किनारे लगाया। बक्सर में ही पीछे क्लाइव और नवाबों के बीच लड़ाई हुई थी। जिससे बंगाल और विहार की दीवानी अंग्रेजों को मिली और उनकी नींव इस देश में जमी।

उत्तर बिहार

उत्तर-विहार गंगापार है, उसके बायें तट के पीछे, हिमालय की तराई और नैपाल तक फैला। वहीं लौरिया आराज और लौरिया नन्दन गढ़ में अशोक के स्तंभ मिले हैं। वह भाग अत्यन्त प्राचीन है। उधर ही आर्यों के पुरोहित विदैघ माधव ने अति प्राचीन काल में सदानीरा (गंडक) पार-कर आर्यों की सभ्यता फैलाई थी और यज्ञ-हवन का उधर प्रचार किया था। वहीं मिथिला में विदेह राजाओं की राज-धानी थी। वहीं के सोरध्वज जनक की कन्या सीता अयोध्या के राजा दशरथ के पुत्र राम से ब्याही थी। उसी विदेह-कुल में जनक-विदेह हुए, ज्ञानी राजा, जिनकी सभा में नित्य ज्ञान की चर्चा हुआ करतो थी। महर्षि याज्ञवल्क्य से वहीं अहंवादिनी गार्गी का इतिहास प्रसिद्ध शास्त्रार्थ हुआ था। उपनिषद्-विद्या के विकास का प्रधान-केन्द्र उसी जनक की सभा थी।

कुछ काल बाद वहाँ की जनता ने राजाओं को हटाकर वहाँ पंचायती राज कायम किया। तब के भारत में पंचा-

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

यती गण और संघ-राज्यों का बोलबाला था। पंजाब और अवध इस गणराज्य से भरे थे। पास ही पच्छिम में कोशल (अवध) पावा और कुशीनारा में मल्लों के गणतंत्र थे। मिथिला में भी विदेहों का गणतंत्र कायम हुआ। पास ही लिच्छवियों, वज्जियों आदि के सात और गणतंत्र थे। पीछे वैशाली के लिच्छवियों से मिलकर विदेह, वज्जी आदि आठ गणतंत्रों ने सम्मिलित संघराज्य स्थापित किया। उसकी राजधानी वैशाली थी, जो आज भी मुजफ्फरपुर जिले के बसीढ़ गाँव के नाम से अपना ह्रास छोड़ गई है। इन संघराज्यों ने अजातशत्रु के साम्राज्य से सालों लोहा लिया और एक बार तो मगध के सम्राट को अपनी राजधानी की रक्षा के लिये गंगा और सोन के कोण में एक किला ही बनवाना पड़ा, जो बाद में बढ़कर पाटलिपुत्र बना। पर फूट के कारण जब इनकी शक्ति नष्ट हो गई तब ये संघराज्य मगध की बढ़ती सीमाओं में समा गये।

बंगाल—कलकत्ता

कलकत्ता पच्छिम बंगाल की राजधानी है, जो कुछ साल भारत की राजधानी भी रह चुका है। वह हाल का बसा नगर है, केवल तीन सौ साल पुराना। अभी सत्रहवीं सदी में वह छोटा सा गाँव था, जो सहसा बढ़कर ब्रिटिश साम्राज्य का लंदन के बाद दूसरा नगर हो गया। इधर उसकी आबादी और बढ़ी है और आज वह संसार के सबसे बड़े

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

नगरों में से है। भारत का तो सबसे बड़ा नगर है ही, बम्बई से भी बड़ा।

कलकत्ता पूरब का सबसे बड़ा बन्दरगाह है और पश्चिमी-पूरबी बंगाल और आसपास के सूबों के कच्चे-पक्के माल के निकास की राह वही है। उसी राह चीजें बाहर भेजी जातीं और बाहर से देश में आती हैं। कलकत्ता सन-पटुये का संसार का सबसे बड़ा बाजार है और वहाँ उनसे चीजें तैयार करने के लिये अधिक से अधिक और बड़ीं से बड़ी मिलें हैं। इनके अतिरिक्त वहाँ कागज और तेल की मिलें भी हैं, लोहे ढालने, चमड़ा साफ करने के कारखाने और हजारों मुद्रण प्रेस भी हैं! गंगा को वहाँ हुगली कहते हैं और हुगलो के दोनों ओर ये कारखाने दूर तक चले गये हैं। कलकत्ता भारत की राजनीतिक राजधानी न होकर भी उसकी औद्योगिक राजधानी है।

कलकत्ता अंग्रेजों का बसाया-बढ़ाया नगर है, ईस्ट-इण्डिया कंपनी का। उसका वास्तविक निर्माता जाब चार्नाक है। वहीं उत्तर भारत में पहले पहल अंग्रेजों की कोठियाँ बनीं और वहीं से उन्होंने अपने राजनीतिक दबदबे और राज़्य का विस्तार किया। भारत में अठारहवीं सदी में जितने रजवाड़ों के आपसी झगड़े हुए, जितनी लड़ाइयाँ हुईं, उन सबमें किसी न किसी रूप में किसी न किसी मात्रा में अंग्रेजों का हाथ था और उन सबके सूत्र इसी कलकत्ते से संचालित होते थे। बंगाल के नवाबों के साथ दाँव-पेंच और अवध के

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

नवाबों तथा दिल्ली के बादशाह के साथ उनकी जितनी लड़ाइयाँ और षडयंत्र हुए उन सबका केन्द्र कलकत्ता ही था। वहीं से क्लाइव ने बंगाल-विहार की दीवानी जीती। वारेन हैस्टिंग्सने देश में अंग्रेजी राज्य का विस्तार किया, अनेक घिनौने कारनामे किये और डलहौजी ने वारिसों के अभाव में देशी रियासतों को हड़पने की नीति बरती।

हुगली के किनारे फोर्ट विलियम के ईर्द-गिर्द नगर बढ़ चला और अपनी आज की विशालता को प्राप्त हुआ। उसके चारों ओर कलकत्ते के प्रसिद्ध किले का मैदान है। वहीं नदी के तीर प्रसिद्ध और कलकत्ते की सबसे सुंदर इमारत विक्टोरिया मेमोरियल है जो आजकल महत्व के ऐतिहासिक कागजाती वस्तुओं के संग्रहालय का काम दे रही है। मैदान के पूरब में नगर का सबसे व्यस्त भाग है, रोजगार का प्रधान केन्द्र चौरंगी है, जिसके इर्द-गिर्द प्राय: दो मील में नगर की प्रधान दुकानें, होटल और क्लब हैं। उसके उत्तर राज्यभवन है। व्यवसाय के इस प्रधान सड़क का पुराना नाम क्लाइव-स्ट्रीट और नया नेताजी सुभाष रोड है। इसी पर बिड़ला आदि करोड़पतियों के प्रसिद्ध कार्यालय ८ रायल एक्स्चेंज प्लेस में है।

अलीपुर में प्रसिद्ध चिड़ियाखाना है, जहाँ अनेक प्रकार के पक्षी, जानवर और दूसरे जीव-जन्तु हैं। पास ही वारेन हैस्टिंग्स का नगर के बाहर का महल बेल्वेडियर है। कलकत्ते की दूसरी प्रधान और दर्शनीय जगहों में एक तो

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अजायबघर है, जिसमें भारतीय कला के सुन्दर से सुन्दर नमूनों के साथ अचरज में डाल देने वाली चीजे प्रदर्शित हैं। दूसरा सन्त जान का गिरजा है, कलकत्ते का सबसे पुराना गिरजा, जिसके मैदान में कलकत्ते के निर्माता जाब चार्नाक की कब्र है। आसपास की दूसरी महत्व की जगहों में कालीघाट का मंदिर है, जिसका मिस मेयो ने अपनी मदर इंडिया में उपहास किया है। जैनों का मंदिर भी अपनी बनावट-सजावट से शीश-महल सा लगता है। स्वामो विवेकानन्द द्वारा स्थापित रामकृष्ण-मिशन का प्रधान मठ बैलूर, थोड़ी दूर पर है, जहाँ रेल से जाते हैं। दक्षिणेश्वर में वह काली-मंदिर है, जहाँ श्री रामकृष्ण परमहंस रहे थे। कलकत्ते से थोड़ी दूर पर सन् १७८६ में लगाया प्रसिद्ध बोटानिकल गार्डेन (बनस्पति-वाटिका) है, जहाँ लोग बहुधा स्टीमर से जाते हैं। वहाँ करीब पौने दो सौ वर्ष पुराना बरगद का वृक्ष है, जिसका घेरा आज प्रायः हजार फुट है। उसकी शाखाओं-प्रशाखाओं, जटा-वृक्षों ने बढ़कर बरगदों का एक जंगल ही खड़ा कर दिया है। इन जटाओं से जो अनेकानेक पेड़ बन गये हैं, वे ही आधार के रूप में पत्तों के विशाल छत्र को सिर से उठाए हुए हैं। प्रधान वृक्ष का तना समूल निकाल लिया गया है। रविवार को अक्सर नगर-निवासी वहाँ पिकनिक के लिये जाते हैं। वहाँ डाभ अर्थात् "नारियल" का शीतल और मीठा जल भी मिलता है।

हुगली के एक किनारे कलकत्ता है, दूसरे किनारे मिलों

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

और रेलवे का केन्द्र हवड़ा है। हवड़ा और कलकत्ते को एक लोहे का विशाल पुल जोड़ता है, जो इंजीनियरिंग शिल्प का एक अचरज माना जाता है। इस पर मोटर, ट्राम, बैलगाड़ी, पैदल यात्री, सभी चलते हैं। ऊपर हवाई जहाज मँडराते हैं और नीचे समुंदर में चलने वाले जहाज अपने लंगरों पर डोलते रहते हैं।

शान्ति-निकेतन

कलकत्ते से प्रायः सौ मील पच्छिम बर्दवान जिले में बोलपुर स्टेशन से लगा शान्तिनिकेतन है। लता-वल्लरियों के बीच बना रवीन्द्रनाथ ठाकुर की वह सौन्दर्य-भूमि निःसंदेह शान्ति का ही निकेतन है। उस महाकवि का वह तप और साधना का आश्रम है। पूत आदर्शों से अनुप्राणित उस आश्रम को रवि ठाकुर ने भारत के प्राचीन आश्रमों की परंपरा में बनाया है। उसके चिन्तन, अध्ययन-अध्यापन, खोज कला आदि विभाग को विशाल विद्यापीठ के रूप में कवि ने प्रस्तुत किया था। उसका नाम उन्होंने विश्व-भारती रखा था जो वस्तुतः विश्व-भारती बन गई है और संसार के अनेक देशों के पंडित और छात्र वहाँ आकर भारतीय संस्कृति का अध्ययन-अध्यापन करते रहे हैं। भारत सरकार ने भी उसे विश्वविद्यालय की मर्यादा दी है और उसका नाम अब विश्व-भारती-विश्वविद्यालय पड़ा है।

उस विश्वभारती में विद्या-भवन, छात्रावास और अध्यापकों को निवास कुटिया बनी हैं, जिन्हें देखकर प्राचीन गुरुकुल

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

और ऋष्याश्रम का रूप खड़ा हो जाता है। वहाँ तुलनात्मक धर्म, शब्द-भाषा-शास्त्र, चीनी और भारतीय क्लासिकल साहित्य और ललितकलाओं के अध्ययन का प्रबन्ध है। शान्ति-निकेतन भारत में कला-शिक्षण का प्रधान केन्द्र है। वहाँ के पढ़े कलावन्त आज देश में बिखरे हुये हैं। अवनीद्रनाथ ठाकुर के प्रधान शिष्य और आधुनिक भारतीय चित्र-कला के प्रमुख आचार्य नन्दलाल बोस वहीं अपनी साधना करते हैं।

शान्तिनिकेतन का सर्वाधिक उल्लेख्य मंदिर स्वयं महाकवि का रवीन्द्र-भवन है, जहाँ उनकी अपनी चोजों, हस्तलिपियों, चित्रों और कृतियों के विविध संस्करण सुरक्षित हैं। पास ही कवि की वह पावन पर्णकुटी है, जहाँ उन्होंने अपनी अनेक महान् कृतियों की रचना की थी। शान्तिनिकेतन कला-तीर्थ है।

आसनसोल

आसनसोल भी उसी बर्दवान जिले में है, पच्छिम और कुछ उत्तर! शान्तिनिकेतन के भाव-बोध के ठीक विपरीत मशीन-संस्कृति का उद्दाम स्थल! वस्तुतः शान्तिनिकेतन मशीन संस्कृति के निर्माता कोयला-लोहा के भण्डार आसनसोल और उनका चरम उपयोग करने वाले कलकत्ता के बीच अपनी अनमोल मानवीय साधनाओं की चुनौती लिये खड़ा है। आसन-सोल में कोयले की प्रधान खदानें हैं। वहाँ की जमीन में बड़ा कोयला है। उसी जमीन का विस्तार रानीगंज, झरिया आदि

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

तक चला गया है। उसी का प्रसार दक्खिन-पूरब बढ़कर छोटा नागपुर के उस पठार को छू लेता है, जहाँ कोयले के अभिन्न और चिरसंगी धातु, लोहे की बहुतायत है। अबरख और मैगनीज वहाँ जितनी मात्रा में संसार में और कहीं नहीं निकलते। आसनसोल में अलमुनियम का भी एक विशाल कारखाना है, भारत के इने-गिने कारखानों में से एक।

दार्जिलिंग

दार्जिलिंग भारत के सुन्दरतम गिरि-नगरों में एक है। अत्यन्त रमणीक कान्तार के एकान्त में हिमालय की निचली श्रृंखला में प्रायः ७,००० फुट ऊँचा यह नगर बसा है। २८,१४६ फुट ऊँची कंचनजंघा की बर्फीली चोटी यहाँ से साफ दीख पड़ती है। अभिराम पर्वत-श्रेणियाँ हिम से धवल मस्तक उठाये, एक पर एक चढ़ी चली जाती हैं। केवल सात मील पर ही टाइगर हिल है, जहाँ से एवरेस्ट के हिमशिखर के दर्शन होते हैं।

दार्जिलिंग नाम तिब्बतियों का दिया हुआ है। इस शब्द का अर्थ है—"रहस्यमय वज्रस्थान"। नगर के चारो-ओर का दृश्य इतना सुहावना है कि मन जहाँ लगता है, रम जाता हैं। आँखें जहाँ देखती हैं, सट जाती है। चमकते डह-कते रंग-बिरंगे फूल, प्रसन्न घूमती राहें, भटके हुए से आस-पास के गाँव नितांत आकर्षक हैं। बाजार अनेक प्रकार के लोगों से भरे रहते हैं—लेपचा, भूटिया, तिब्बती, नेपाली

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सभी अपनी अपनी विशेषता से आकृष्ट करते हैं। पास ही तिब्बत का रहस्यमय देश है।

दार्जिलिंग कलकत्ते से ३६९ मील पूरब-उत्तर की दिशा में है। सिलिगुडी से छोटी रेलवे ५१ मील की चढ़ाई चढ़कर दार्जिलिंग पहुँचाती है। राह अत्यन्त दुर्गम है और उस रेल का निर्माण इंजीनियरिंग का एक अचरज ही है।

सुन्दर वन

पूरब-दखिन पूरबी पाकिस्तान है और पूरबी बंगाल है, जहाँ नोआखाली में तपस्वी गांधी ने नर-दानवों के पाप का प्रायश्चित किया था। फैले हुए धान के लहलहाते खेत, नदियों की अमल धारायें ! कुछ दूर पर ब्रह्मपुत्र पूरब से और गंगा पश्चिम से आकर एक दूसरे से मिल जाती हैं। उनके मिलने से डेल्टा बन गया है और नीचे की समुद्रवर्ती भूमि दलदल हो गई है। उस दलदल की आबोहवा अत्यन्त शक्तिनाशक है, मलेरिया प्रधान। वहाँ मनुष्य के दो दुश्मन बसते हैं, पानी में विकराल मगर और जमीन पर खूँखार शेर। इनसे बचकर भी साँपों से बचना कठिन हो जाता है। दलदल के ऊपर घना जंगल है, विख्यात सुन्दर वन आदिम समुद्र जितना पुराना !

कुछ और आगे गंगा-सागर है, जहाँ पतितपावनी गंगा, यमुना-सरजू के जल के साथ मथुरा, अयोध्या और काशी, प्रयाग की पवित्र रज लिये समुद्र से जा मिलती हैं। गंगा-सागर हिन्दुओं का तीर्थ-स्थान है, जहाँ अनेक त्यौहारों पर

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

स्नान का माहात्म्य माना जाता है। कभी उधर के तटवर्त्ती प्रदेश पर पुर्तगाली डाकू छापा मारा करते थे और असहाय निवासियों को जबर्दस्ती गुलाम बना लिया करते थे, जिससे मुगल बादशाहों को उनको वहाँ से निकाल बाहर करना पड़ा था।

आसाम

आसाम भारत का सबसे पूर्वी प्रान्त है, वर्मा के जंगलों से लगा। उसके उत्तर में हिमालय है, पूरब में वर्मा, पश्चिम दक्षिण में पूर्वी बंगाल। उसका प्राचीन नाम कामरूप है। बाद में जब उस पर अहोम जाति ने अधिकार कर लिया तब उसका नाम आसाम पड़ा। भारत के मध्यकालीन हिन्दू इतिहास में उसका नाम अक्सर आता है। तब उसकी राजधानी प्राज्योतिषपुर थी। प्राज़्योतिष का अर्थ है, वह नगर जहां सबसे पहले सूरज का प्रकाश आये, सबसे पहले जिसके आकाश पर पौ फटे। आजकल उसके पास ही गौहाटी बसा है।

कामरूप का अर्थ है जैसा चाहे वैसा रूप धारण कर लेने वाला। पश्चिमी भारत में 'पूरब देश बंगाला' का जादू प्रसिद्ध है। लोकगीतों में उधर की नारियों की जादूभरी सुन्दरता का जिक्र हुआ है। आसाम उसी जादू देश की चरम पूर्वी सीमा है। गौहाटी की पहाड़ी पर कारु-कमच्छा की देवी का मन्दिर है। शाक्तों की वह प्रधान देवी हैं। कभी उस

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

शाक्त धर्म का समूचा बंगाल और उड़ीसा पर प्रबल प्रभाव पड़ा था।

ब्रह्मपुत्र नदी तिब्बत की ओर से पूर्वी हिमालय का चक्कर करती आसाम के बीच से बहती है। ग्वालन्दो उसका प्रधान स्टीमर-स्टेशन है। कभी वहाँ से बिहार में बक्सर तक स्टीमर चला करते थे। अब भी ब्रह्मपुत्र में स्टीमर चलते हैं। पर बाढ़ के दिनों में नदी बड़ी भयंकर हो जाती है और गाँव-नगर बहा ले जाती है। पिछली बाढ़ में उसने डिबरूगढ़ को बड़े संकट में डाल दिया था।

इम्फहल

आसाम से लगा हुआ मणिपुर है। उसकी राजधानी इम्पहाल अतीव सुन्दर घाटी में करीब ढाई हजार फुट ऊँचाई पर बसा है। उस नगर में अनेक बड़ी-बड़ी झीलें हैं। मनीपुरी नृत्य भारत के बड़े शक्तिम नृत्यों में है। अभिराम, ओजस्वो जांगल लोकनृत्य को नागर कर लिया गया है। उसमें बड़ी गति और शरीर-भंगिमा है। जीवन-भंगिम हो-हो जैसे लहरा उठता है। मणिपुर प्रदेश में करघे के बने वस्त्र अत्यन्त आकर्षक होते हैं, सुन्दर रंगों वाले। स्थानीय पहाड़ी और नागा लोग उनका व्यवहार करते हैं।

उड़ीसा-भुवनेश्वर

उड़ीसा की राजधानी अब तक कटक रहा है। अब प्राचीन नगर भुवनेश्वर है। वहाँ अब भी दफ्तर बन ही रहे

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

हैं। मंदिरों का नगर, भुवनेश्वर समुद्रतट से लगा है। कहते हैं कि कभी वहाँ ७००० मन्दिर थे, आज भी केसरी-नरेशों के यश को अमर करते प्रायः सौ मन्दिर खड़े हैं, जो अपनी वास्तुकला में भारत के मध्यकालीन मंदिरों में बेजोड़ हैं। सबसे महान् मंदिर वहाँ का लिंगराज है। दूसरे प्रसिद्ध मंदिर भगवती, पार्वती, मुक्तेश्वर, अनन्त वासुदेव, ब्रह्मेश्वर, भास्करेश्वर और परशुरामेश्वर हैं। इनके गगनचुम्बी विमान-शिखर निराले हैं, जो सर्वथा अपने उड़िया-कला के गर्व और गौरव हैं। बाहर की मूरतें मन को मोह लेती हैं। इन मन्दिरों का प्रभाव भारत के दूसरे प्रान्तों की कला पर भी दीर्घकाल तक पड़ता आया है।

उड़ीसा का प्राचीन नाम उत्कल और औड है। औड से ही उड़ीसा बना है। उत्कल में औड और कलिंग दोनों शामिल हैं। औड कलिंग का उत्तरी भाग है। कलिंग पर कभी अशोक का अधिकार हुआ था। उड़ीसा के राजा खारबेल ने मगध और पाटलिपुत्र पर दो-दो बार अधिकार कर नन्दों का कलिंग जीतने का बदला फेर दिया था। उससे पहले स्वयं अशोक ने जब उसे जीता, तब उड़ियों की वीरता ने उसे हैरान कर दिया था। उसी लड़ाई के परिणामस्वरूप अशोक ने युद्ध बन्द कर बौद्ध-धर्म स्वीकार किया। बाद में उड़ीसा पर केशरी-कुल के राजाओं और पूरबी गंगों का अधिकार हुआ, जो मुसलमानों के समय तक बना रहा।

भुवनेश्वर के कुछ ही दूर उदयगिरि और खंडगिरि की

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

गुफाएँ हैं, जिनमें आज से बाईस सौ वर्ष पुरानी सुन्दर मूर्तियां बनी हैं। पास की हाथी गुफा नामक गुफा में ईसवी-पूर्व दूसरी सदी के उसी प्रबल सम्राट खारवेल का शिलालेख है, जिसने दक्खिन के प्रभुओं, और उत्तार के प्रभु मौर्यों को परास्त किया था और जिसके भय से बलख का ग्रीक राजा देमित्रियस पाटलिपुत्र छोड़ मथुरा भाग गया था।

पुरी

उड़ीसा में दो और स्थान हैं, जो अपने मन्दिर के लिये विख्यात हैं—जगन्नाथपुरी और कनारक। जैसे द्वारिका पश्चिमी समुद्रतट पर बसी भारत की सबसे पच्छिमी नगरी है, वैसे ही पुरी पूरबी समुद्र 'बंगाल की खाड़ी' के तट पर बसी भारत की सबसे पूरबी नगरी है। इस देश के सात पावन नगरों में पुरी की भी गणना है। उसका नाम जगन्नाथ पुरी इसलिये पड़ा कि वहाँ जगन्नाथ विष्णु 'बुद्ध' का प्रसिद्ध मंदिर है।

जगन्नाथ का मन्दिर तेरहवीं सदी का बना १९२ फुट ऊँचा है। उसके शिखर पर विष्णु का चक्र निर्मित है। मंदिर के पूर्वी द्वार के सामने अत्यन्त सुंदर कटाव के काम से सजा संगमरमर का स्तंभ है। कहते हैं कि सिक्खों के महाराजा रणजीत सिंह ने मन्दिर के देवता को प्रसिद्ध हीरा कोहेनूर प्रदान कर दिया था; पर उनके वंशजों ने उनका बचन न निबाहा।

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

हर साल वर्षा काल में वहाँ रथ-यात्रा होती है। सोलह पहियों पर पैंतालिस फुट ऊँचे विशाल रथ में जगन्नाथ की मूर्ति रखकर भावुक श्रद्धालु भक्त रथ को खींचते हैं। पहले तो रथ के पहियों से कुचल जाना बड़ा पुण्य माना जाता और देश के दूर-दूर से अनेक लोग वहाँ कुचल कर प्राण देने ही जाया करते थे; पर वह प्रथा अब कानून द्वारा बन्द कर दी गई है।

पुरी का मन्दिर उस विष्णु का माना जाता है, जिसने बुद्ध का अवतार लिया था और चूँकि बुद्ध वर्णाश्रम धर्म को नहीं मानते थे, इससे मंदिर के आँगन में वर्णभेद नहीं माना जाता और ब्राह्मण और चांडाल एक साथ एक दूसरे का छुआ खाते हैं। जगन्नाथ का यह मन्दिर भुवनेश्वर और कनारक के मन्दिरों का-सा शिल्प में सुन्दर तो नहीं है; पर उसकी ख्याति इनसे कहीं अधिक है। इसका कारण है कि वह जीवित मन्दिर है। देश में कम मन्दिर हैं, जिनमें आठ सौ वर्षों से लगातार पूजा होती चली आई हो, जैसे इस मन्दिर में होती है।

पुरी का समुद्र-तट भी बड़ा सुहावना है। दूर तक फैली सिकता-भूमि पर रत्नाकर लाख-लाख सीपी और शंख हर लहर के साथ फेंक देता है। लोग समुद्र-स्नान और सागर-वायु का सेवन करने वहाँ दूर-दूर से जाते हैं। थोड़ी दूर पर दोनों ओर नारियलों के घने बन हैं जो नीले समुद्र की पृष्ठ-भूमि में बड़े आकर्षक लगते हैं।

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कनारक

कनारक या कोणार्क सूर्य के अपने मन्दिर के लिये प्रसिद्ध है। पुरी से सीधा उत्तर वह करीब बीस मील पर है। पुरी के सफेद मन्दिर के विपरीत उसे काला पगोडा भी कहते हैं। सूर्य के मन्दिर भारत में बहुत कम हैं, बहुत कम बने ही थे वे। यहाँ सूर्य की पूजा बहुत पीछे चली। विदेशी शकों ने उसे चलाया था और इस देश में सूर्य के पुजारी ब्राह्मण न होने के कारण शक अपने शकद्वीपी ब्राह्मण भी यहाँ लाये थे। सूर्य का एक मन्दिर मुलतान में था, दूसरा कश्मीर में, तीसरा ब्रइवर्चिका उत्तरप्रदेश के बहराइच में तथा चौथा कोणार्क का उड़ीसा में। वैसे कुछ और राजपूताना आदि में थे। यह कोणार्क का मन्दिर नरसिंहदेव प्रथम ने तेरहवीं सदी के मध्य बनवाया।

वह मन्दिर उड़ीसाके सुन्दरतम और विशालतम मन्दिरों में से है। वह पूरा बन न सका था और जितना बच रहा है, वह भी समुद्र की नमकीन हवा के कारण नित्य गलता जा रहा है। वह केवल सामने का भाग है, पर वह स्वयं इतना विशाल है कि मीलों दूर से दिखाई पड़ने लगता है और यह प्रमाणित करता है कि समूचा मन्दिर किस प्रबल आकार का रहा होगा, उस पर उतनी सजीवता, शक्ति और सौन्दर्य कलाकारों ने बिखेर दी है कि देखते ही बनता है। पूरी ऊँचाई के सिंह और हाथी-घोड़े और सईस जीवन के सदृश कोरे गये हैं। रथ के चक्के इस देश में ऐसे दूसरे नहीं बने और न अश्वों

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

में इतना वेग, ताकत और तीव्रता पत्थर के माध्यम से कहीं ढाली गई है ।

भुवनेश्वर, पुरी और कनारक तीनों स्थानों के मन्दिरों के बाहरी दीवार पर सैकड़ों श्रृंगारिक यौन-मूर्तियाँ बनीं हैं । स्वाभाविक हो दर्शकों को कुतूहल होता हैं कि देवालय पर ये कैसे बनीं ? जब ये मन्दिर बने थे; उड़ीसा में बज्रयानी सिद्धान्तों का बड़ा बोलबाला था और मद्रास के उत्तर से उड़ीसा-आसाम तक और बंगाल से खजुराहो (बाँदा) तक यौन-पूजा को प्रधानता थी, इसी से इन मन्दिरों पर ये मूर्तियाँ भी बन गईं ।

बीच का देश

इस बीच के देश में मध्य भारत, विन्ध्य प्रदेश, मध्य प्रदेश और भोपाल शामिल हैं । इस भूखंड में भी ऐतिहासिक स्थानों या कलाकृतियों और उनके भग्नावशेषों की कमी नहीं है । ग्वालियर, खजुराहो, सांची, इनैर, पांडू, हैदराबाद, विजयनगर आदि इसी इलाके में है ।

ग्वालियर

ग्वालियर जो अब मध्य भारत की राजधानी है, पहले सिन्धिया की राजधानी था । उसका इतिहास राजपूत-काल के भारतीय इतिहास से बँधा है । पहले वह कछवाहे राजपूतों का गढ़ था, एक लंबे काल तक उस पर महोबा के चन्देले राजाओं ने राज किया था और मुहम्मद गोरी के सेनापति

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कुतुबुद्दीन ने उन्हीं के हाथ से उसे छीना था। बाद में वह दिल्ली सल्तनत के हाथ में रहा, यद्यपि दिल्ली के कमजोर होने पर वहाँ के हिन्दू राज्य सदा आजाद हो जाया करते थे। बाबर ने जब राणा सांगा को सीकरी की लड़ाई में जीता तब ग्वालियर हिन्दू राजा के ही हाथ में था, जो उस काल सपरिवार आगरे के पुराने किले में छिपा हुआ था और जिसने हिमायूँ को आत्म-समर्पण किया। उसी के पास जगत्प्रसिद्ध कोहनूर हीरा था, जिसे उसने अपने परिवार की रक्षा के बदले हुमायूँ को दे डाला। वह कोहनूर अपने अद्भुत इतिहास की राह तै कर मुगलों, ईरानी सम्राटों और सिक्ख राजाओं के हाथ होता इंग्लैंड जा पहुँचा और आज वहाँ की रानी के ताज में चमक रहा है।

ग्वालियर में ऐतिहासिक खंडहर और स्थान भरे पड़े हैं। उसका किला भारत के प्रबलतम किलों में से एक माना जाता है। है भी वह काफी पुराना ? अकेली पहाड़ी पर करीब दो मील लम्बा, २,७०० फुट चौड़ा, और दो सौ फुट ऊँचा ग्वालियर का वह विशाल किला अत्यन्त आकर्षक और दर्शनीय है। किले में ६ विशाल दरवाजों से होकर जाना पड़ता है। चौड़ा रास्ता दुर्ग की चोटी तक चला जाता है। राह में अनेक मध्यकालीन जैन तीर्थंकरों की मूर्तियाँ पहाड़ों में कटी हैं।

किले में ऊपर बड़ा विस्तार है, जहाँ समय-समय पर बने अनेक महल खड़े हैं। राजा मान सिंह (१४८६-१५१६)

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

का बनवाया मान-मन्दिर उस काल के महलों में हिन्दू-कला को दृष्टि से बेजोड़ है। उसके बाहरी ओर अनेक बुर्जियाँ और अटारियाँ हैं, जिनमें रंग बिरंगी टाइलें जड़ी हैं। दीवारों पर हरी, नीली और सुनहरी पृष्ठभूमि पर हाथियों और पक्षियों के अभिराम चित्र लिखे हुये हैं। उसी राजा ने अपनी गूजरी रानी के लिये प्रसिद्ध गूजरी महल बनवाया। यह गूजरी रानी राजपूतनी नहीं गूजरी थी और राजा को अनेक कठिनाइयों और संकटों को झेलकर उससे विवाह करना पड़ा था। रानी और उसके इस महल के साथ अनेक रोमांचक और रसीली कथाएँ जुड़ी हुई हैं। कहते हैं कि उस महल से सुप्रसिद्ध ध्रुपद गायक बैजूबावरा और तानसेन का सम्बन्ध रहा था। स्वयं राजा मानसिंह संगीत का बड़ा जानकार और संरक्षक था और उसके प्रताप से आज भी ग्वालियर क्लासिकल भारतीय संगीत का केन्द्र बना हुआ है। गूजरी महल अब पुरातत्व का संग्रहालय है। उस राज्य में मिली प्राचीन कला पत्थर या मिट्टी की मूर्तियाँ आदि—वस्तुएँ संग्रहीत हैं। वहीं शुंगकाल [ईसापूर्व दूसरी-पहली सदी] का पहला विष्णु-स्तंभ सुरक्षित है, जिसे शुंग-दरबार में पंजाब के ग्रीक राजा अन्तलिखित के भेजे ग्रीक वैष्णव राजदूत हेलियोदोरस (दिये के पुत्र) हुबेसनगर के पास ही खड़ा किया था।

किले के भीतर अनेक सुन्दर मन्दिर भी हैं। इनमें सबसे प्राचीन सास-बहू का मन्दिर है, जो १०६३ ई० में बना था।

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

इसका आधार सुन्दर कटाव के काम से विभूषित है। वहाँ की इमारतों और मन्दिरों में सबसे विशाल तेली का मन्दिर है।

ग्वालियर में और भी अनेक दर्शनीय स्थान हैं। जैविलास महल की शालीन इमारत इटालियन रूपरेखा की है, हाल की बनी। उसमें एक कालीन है जो संसार की सबसे बड़ो और भारी कालीन कही जाती है। पास ही वहाँ के राजाओं की छतरियाँ (समाधियाँ) बनी हैं, जो मुगल-प्रभाव की देन हैं। वहीं महारानी सख्या की स्मारक-मूर्ति है।

नगर किले के नीचे फैला पड़ा है। वहाँ गौस मुहम्मद की मस्जिद और मकबरा है। आरंभिक मुस्लिम-कला के सुघड़ नमूने। तानसेन की समाधि भी वहीं है। गवैये दूर-दूर से उसके दर्शन को जाते हैं और पास की इमली की पत्तियाँ चबाते हैं, ताकि उनका कण्ठ भो तानसेन के कंठ सा ही मधुर हो जाय।

खजुराहो

खुजराहो विन्ध्यप्रदेश में है, जहाँ रींवा या बाँदा से पहुँचा जाता है। स्थान अत्यन्त रमणीक है और चन्देल राजाओं को कलाप्रियता और निर्माणशीलता का प्रमाण है। नागर-कला के अनेक मन्दिर, भारतीय वास्तुकला के शालोन गौरव वहाँ खड़े हैं। प्रायः तीस मन्दिर वहाँ अब भी खड़े हैं जो दूर-दूर के कला-मर्मज्ञ यात्रियों को आकृष्ट करते हैं। इनमें तीन को छोड़ बाकी सभी ९५० और १०५० ई० के बीच बने थे। उनको मूर्तियाँ और विविध अलंकरण तथा मूरतों की

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दम-खम और भाव-भंगियाँ भारतीय वास्तुकला में अपना सानी नहीं रखतीं। अधिकतर वे भुवनेश्वर आदि की परम्परा में बनी हैं और उसी वज्रयानी-शाक्त-परिवार के प्रभाव से विभूषित हैं। कन्दरीय महादेव का मन्दिर उस दल के मन्दिरों में सबसे विशाल है। उसका सौन्दर्य देखते ही बनता है। चतुर्भुज मन्दिर विस्तृत चबूतरे पर खड़ा है और उसके चारों कोनों पर चार छोटे मन्दिर बने हैं। पार्श्वनाथ का मन्दिर और घंट भी अपने आकार में अद्भुत सुन्दर हैं। चौंसठ जोगिनियों का मन्दिर अपनी बाहरी सजावट और अलंकरण-मूर्तियों के अंग के लिये बड़ी प्रसिद्धि पा चुके हैं।

खजुराहो में शैव, शाक्त और वैष्णव, तीनों ही, सम्प्रदायों के मन्दिर हैं। नगर कभी बड़ा भव्य रहा होगा, जहाँ चन्देलों ने कला द्वाराअपनी कीर्ति पत्थरों में लिखी। खजुराहो प्राचीन चन्देल नगर महोबा से केवल २६ मील की दूरी पर है। महोबा के पान मशहूर हैं। कवि जगनिक ने वहीं के परिमल कालीन (पृथ्वीराज और जयचन्द के समय के) आल्हा-ऊदल का जस अपने आल्हा छन्दों में अमर किया था।

सांची

सांची भोपाल से २५ मील दिल्ली की ओर दिल्ली से बम्बई जाने वाली लाइन पर है। आस-पास के जङ्गल का सौंदर्य अत्यन्त आकर्षक है। सांची बौद्धों का तीर्थस्थान है; क्योंकि वहाँ भगवान बुद्ध के प्रधान चेलों की अस्थियाँ स्तूपों में संचित हैं। ये स्तूप भारत के प्राचीनतम स्तूप हैं, वस्तुतः भारतीय कला के

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

प्राचीनतम नमूने। स्तूप अशोक के समय ही बन गये थे पर उनकी रेलिंगें पीछे, ईसवी पूर्व की, पहली-दूसरी सदियों में, बनी। वैसे तो सांची में अनेक स्तूप हैं; पर विशेष ख्याति दो ही स्तूपों की है, जो अपनी विशालता और कला में बेजोड़ है।

इसमें से बड़ा स्तूप पत्थर का ठोस गोलाकार बना है। उसका व्यास १०३ फुट और ऊँचाई ४२ फुट है। उसके चारों ओर रेलिंगों से घिरी परिक्रमा-भूमि है। रेलिंगों के चारों दिशाओं में चार विशाल और शालीन तोरण-द्वार हैं। रेलिंगें और तोरणद्वार भारतीय वास्तु-मूर्तिकला के अभिराम आदर्श प्रस्तुत करते हैं। उनके कटाव के कामों और अलंकरणों में अद्‌भुत गति और सजीवता है। जातक की कथाएँ 'यक्ष-यक्षिणियों की मूर्तियाँ, अशोक-अजातशत्रु के हाथी-घोड़ों-रथों के जलूस, सभी, असाधारण दक्षता से उभारे हुए हैं। साढ़े अट्ठाइस फुट ऊँचे मनुष्यों, देवताओं,,जानवरों, और पक्षियों की आकृतियों से भरे उन तीन-तीन तोरण वाले द्वारों की शालीनता तो वर्णनातीत हैं। इनके कटाव के काम हाथी-दाँत का आभास पैदा करते हैं। पंडितों का कहना है कि विदिशा (भित्सा) के हाथीदाँत के कलावन्तों ने पत्थर में अमरकला का यह साँची का वैभव गढ़ा था। विदिशा मगध के शुंगों की बपौती जागीर रही थी, कुछ अजब नहीं कि बौद्ध-षड्यंत्रों का खतरा कम हो जाने पर पुष्यमित्र शुंग ने अपनी नीति बदल दी हो और सहिष्णुता का प्रकृत भारतीय आचरण अंगीकार

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कर लिया हो, जिससे इन स्तूपों के लिए उसकी दक्षिणी राजधानी विदिशा से प्रवीण संग-तराश मिल गये हों। साँची में अशोक का एक टूटा स्तंभ भी है।

भोपाल

भोपाल अभी हाल तक वहाँ के नवाबों की राजधानी था। अब भी उस प्रान्त की वह राजधानी है। भोपाल मालवा का हृदय है। बम्बई से उत्तर-पूरब दिल्ली की राह में करीब १२१ मील दूर। नगर पहाड़ों और जंगलों की गोद में है, उनमें प्रायः छिपा। उसका प्राकृतिक सौंदर्य अकथनीय है। नगर का सुंदरतम स्थल उसकी विशद झील है, पर्वत से घिरी, नगर के चरण पखारती। उसके तीर से क्षितिज तक फैली घनी हरियाली मन को मोह लेती है। शहर-पनाह का पुराना परकोटा अब भी जगह-जगह खड़ा है। सामने की पहाड़ी पर प्रसिद्ध अहमदाबाद-महल है, जिसकी छत से झीलों की प्राकृतिक छटा देखी जा सकती है। भोपाल के इतिहास की अनेक संस्मृतियाँ वीर-साहित्यिक हिन्दू राजा भोज के व्यक्तित्व से बँधी हैं। वैसे स्वयं उसके मुस्लिम नवाबों की कथाएँ भी कुछ कम रोमांचक नहीं हैं।

उज्जैन

उज्जैन, इन्दौर, माँडू, धारा, बाघ, मध्यभारत में है, पहले के ग्वालियर, होल्कर आदि के राज्यों में। इनमें से हर एक नगर इतिहास की मधुर अँगड़ाइयों में जन्मा और बढ़ा है। हिन्दू-मुसलमान दोनों की अभिराम लोक-सम्पदाएँ उनमें

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

मुखरित हुई हैं। उनके खंडहर आज भी अपने विलास और विषाद की कथा कहते हैं।

उज्जैन ठेठ मालवा में है। मालवा प्रायः समूचा नाज का खलिहान है, मेवाड़ तक शीतल प्रदेश है, उसकी रातें अत्यन्त सुखद होती हैं। उज्जैन उस मालवा का मर्म है। ठेठ मालवा नगरी अत्यन्त प्राचीन है। पहले वहाँ प्रद्योतों का राज्य था, जब वहाँ की राजकन्या वासवदत्ता को इलाहाबाद के पास कौशाम्बी का वह वत्सराज उदयन हर ले गया था जिसे हाथी के छल से उज्जैनी-नरेश ने पहले कैद कर लिया था। बुद्ध के समय की कथा है यह पर वहाँ के नागरिकों को यह कथा इतनी प्रिय थी कि उन्हें कालिदास के समय तक भी भूली न थी और नगर के वृद्ध उसे सुनाया करते थे।

पहले, अशोक के समय, उज्जैन में मगध का शासक रहता था, स्वयं अशोक राजा होने के पहले उस रूप में वहाँ रहा था। बाद वह शक राजाओं की राजधानी बना और फिर गुप्तों की पच्छिमी राजधानी। राजा विकरमाजीत की की कहानियों से वह नगर बँधा है। कहते हैं कि उस राजा के वहाँ नवरत्न रहते थे जिनमें संस्कृत के महाकवि कालिदास भी थे। इसमें संदेह नहीं कि कालिदास को उस नगर के लिए विशेष मोह था जिससे अपने मेघदूत के नायक यक्ष को, उसकी सीधी राह छुड़ा, दूर उज्जैनी उन्होंने भेजा है और वहाँ की अटारियों, सिप्रा नदी और उसके तट के महाकाल के मन्दिर और शिव की नर्तकियों का नयनाभिराम

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

वर्णन किया है। आज भी शिव का पावन मंदिर उसी सिप्रा की कलकल धारा के तीर खड़ा है। बाद में उज्जैन पर परमारों का अधिकार हो गया था और उन्होंने एक ओर दक्षिण के चालुक्यों और उत्तर के परिहारों से लोहा लिया था। प्रसिद्ध राजा मुंज वहीं का था जिसके विलास और वीरता की कहानियों से हमारा साहित्य भरा है। राजा भोज इसी मुंज का भतीजा और सिन्धुराज का पुत्र था जिसने उज्जैनी छोड़ धारा को अपनी राजधानी बनायी। बाद में उस पर दिल्ली और मालवा के सुलतानों का कब्जा हुआ।

उज्जैन में सिप्रा के तट पर कालियादह का सुन्दर महल है, हिन्दू शिल्प का सुंदर नमूना। चन्देरी के पास फतेहाबाद में चारमंजिला कोशक-महल है, स्वयं चंदेरी में पठान शिल्प से बनी बत्तीसी बावड़ी है। जब जैपुर के महाराजा जैसिंह मालवा के मुगलों की ओर से सूबेदार थे तब उन्होंने उज्जैन में भी वेधशाला बनवायी थी जो आज भी वहाँ खड़ी दर्शकों का नक्षत्र संबंधी कुतूहल शान्त करती है। उज्जैन भोपाल से ११४ मील पर है, इन्दौर से दो घंटे के रास्ते पर।

मालवा में कालिदास का दशपुर मन्दसोर है जहाँ गुप्त-काल के रेशम के व्यापारियों द्वारा सूर्यमन्दिर के जीर्णोद्धार सम्बन्धी उनका खुदवाया एक काव्यमय अभिलेख है। वहीं हूणों को परास्त करने वाले राजा यशोधर्मन का प्रशस्ति स्तंभ भी है।

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

इन्दौर

इन्दौर होल्कर राजकुल का प्रधान नगर है। उसे अठारहवीं सदी के अन्त में रानी अहल्याबाई ने बसाया था। नगर सरस्वती और खान दो नदियों के तीर बसा है, समुद्र के धरातल से प्रायः पौने दो हजार फुट ऊँचा। बम्बई से करीब ४४० मील दूर है।

पुराना राजमहल शहर के प्रधान मैदान के सामने है। नदी के किनारे होल्कर-राजकुल के अनेक राजाओं की समाधियाँ हैं। छत्री-बाग में मल्हारराव होल्कर प्रथम की छत्री है, जिस पर उभरी हुई वास्तु है। सरस्वती के तीर किंग एडवर्ड हाल और लालबाग-महल है।

इन्दौर बड़े-बड़े सेठों का नगर है। मध्यभारत राज्य की ग्रीष्म-राजधानी भी वही है। वहीं से म्हाओं, मांडू और धारा नगरो को रास्ता जाता है।

मांडू

मांडू म्हाओ से ५५ मील पर है। विन्ध्याचल के एक पहाड़ी-शिखर पर बसा, जंगल के भीतर! पहले यह मालवा के परमार राजाओं के अधिकार में था और उनके उत्थान पतन के भाग्य झेलता रहा। राजा भोज के समय एक बार चालुक्य-नरेश सोमेश्वर प्रथम आहवमल्ल ने उसे भी धारा और उज्जैन के साथ रौंद डाला था। बाद में उन्हीं दोनों नगरों के साथ यह नगर भी चौदहवीं सदी के आरम्भ में

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अलाउद्दीन खिजली के सेनापति मलिक काफूर के हाथ आ गया और उस पर पठानों का अधिकार हुआ।

मांडू के पठान सुल्तानों के बनवाये अनेक तालाब और महलों के खँडहर आज भी मौजूद हैं। साहित्य और रोमांचक लोक-कथाओं में वहाँ के रसिया सुल्तान बाजबहादुर का नाम बारबार आता है। उसकी हिन्दू प्रेयसी रूपमती उसी की भाँति कवि थी। उनके प्रेम के गीत आज भी मालवा में गाये जाते हैं। बाजबहादुर ने गौड रानी दुर्गावती पर आक्रमण किया था; पर उसे मुँह की खानी पड़ी थी। अकबर के आक्रमण करने पर बाजबहादुर ने चितौड़ में शरण ली, जिसका मूल्य मेवाड़ के राजपूतों को अपने रक्त से चुकाना पड़ा। अकबर ने मांडू को जीतकर अपने साम्राज्य में मिला लिया।

मांडू के प्रधान खँडहरों में होशंगशाह का संगमरमर का मकबरा, अफगान शिल्प की मणि जामा मस्जिद आदि हैं। विजयस्तंभ कभी सात मंजिला था। जहाज महल की अलिन्द और अटारियाँ, हाल और तालाब अत्यन्त सुन्दर हैं। हिंडोला महल में गर्मियों के लिए तहखाने हैं, और नीमार के मैदानों की १२०० फुट की ऊँचाई से देखने वाली रूपमती की बारादरी बरबस बाजबहादुर और रूपमती की याद ताजी कर देती है।

धारा

पास ही धारा नगरी है। राजा भोज ने उज्जैन से हटाकर अपनी राजधानी वहीं रखी थी और उसे महलों और

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

मन्दिरों से भर दिया था। राजा भोज की प्रसिद्ध राजसभा जिसमें कवियों को एक-एक श्लोक पर लाख-लाख सुवर्णमुद्राएँ दान की गयी थीं, वहीं थी। अब भी वहाँ अनेक प्राचीन इमारतों के खँडहर हैं। उनमें प्रधान भोजशाला थी, जिनकी दीवारों में काव्य लिखा पत्थर की पटिया जड़ी थीं। भोजशाला राजा भोज की बनवायी व्याकरण-मन्दिर थी। अब वह मस्जिद है। राजा ने सारे मालवा को अपनी ललित देन से गौरवान्वित किया था। भोपाल के पास उसका बसाया भोजपुर आज भी है। धारा भी अपने प्राचीन खँडहर लिये उस कविराज की कीर्ति मस्तक से उठाये है।

बाघ

बाघ की गुफाएँ मांडू के पास ही हैं, वहाँ से करीब ३० मील पच्छिम। गुफाएँ अजन्ता की ही भाँति पहाड़ काटकर बनी हैं और उनकी दीवारों पर अजन्ता के चित्रों की ही भाँति भित्ति-चित्र बने हैं। अजन्ता के चित्रों से ही वे प्रभावित भी हैं और उन्हीं की तरह सुन्दर हैं। उनका निर्माण-काल पाँचवीं और सातवीं ईस्वी के बीच है।

जबलपुर

जबलपुर बम्बई से ६१६ मील पूरब है, मध्यप्रदेश का नागपुर के बाद सबसे बड़ा नगर। शहर से केवल तेरह मील बाहर नर्मदा में प्रसिद्ध संगमरमर का घाट है—भेड़ा घाट। पास ही चौसठ योगिनियों का मन्दिर है। जबलपुर से केवल चार मील पच्छिम गोंड राजाओं का प्राचीन किला मदन-

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

महल पहाड़ की चोटी पर विशाल पक्षी की नाईं पर फैलाये बैठा है।

नागपुर

मध्यप्रदेश की राजधानी नागपुर है। पहले वह भोंसलों के अधिकार में रहा था। भोसलों के गढ़ के खँडहर आज भी आबाद हैं। मरहठों का वह इलाका भी डलहौजी की हड़प-नीति में आ गया था। नगर और इलाके में हिन्दी और मराठी भाषा-भाषी दोनों हैं। अब उसका भाग बराड़ संभवत: अलग हो रहा है। नागपुर के पूरब दखिन हैदराबाद है। नागपुर से थोड़ी ही दूर पर रामटेक है कालिदास के मेघदूत का रामगिरि। काव्य का नायक यक्ष अलका से निर्वासित वहीं सालभर रहा था और वहीं से उसने कवि-कल्पना में मेघ को दूत बनाकर अपनी प्रिया के पास भेजा था। उधर का स्थान निःसंदेह बड़ा रमणीक है। कुछ आश्चर्य नहीं कि उसने महाकवि की उस महान् रचना के लिए उसे प्रेरणा दी हो। कवि का विश्वास है कि वहाँ राम, सीता और लक्ष्मण कुछ काल तक अपने वनवास की अवधि में रहे थे।

वर्धा—सेवाग्राम

नागपुर से हैदराबाद जाने वाली राह पर वह वर्धा है जिसे राष्ट्रीय कांग्रेस के आजादी के संघर्ष में काफी ख्याति मिली थी। वहाँ से सात मील पर ही प्रसिद्ध सेवाग्राम में महात्मा गांधी सालों रहे थे। दंडी मार्च के समय साबरमती आश्रम छोड़ने के बाद वहीं उन्होंने अपना आश्रम बनाया था।

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

वहाँ की पर्णकुटी में गांधीजी की अनेक चीजें रखी हैं। उनकी आरम्भ की हुई अनेक संस्थाओं का यह सेवाग्राम आज केन्द्र बन गया है। विनोबा भावे भी पहले वहीं रहे थे।

हैदराबाद

हैदराबाद और पूरब है, हैदराबाद राज्य की राजधानी नगर, महलों और तालाबों से भरा है। उस्मानियाँ यूनि-वर्सिटी, हाईकोर्ट, स्टेट लाइब्रेरी आदि की इमारतें दर्शनीय हैं। फलकनुमा पैलेस भारत के सुन्दर महलों में गिना जाता है। एक बड़ी सुन्दर इमारत ईराम-मंज़िल है, जिसमें राज्य के दफ्तर हैं। मिन्ट हाउस जिसमें कभी टकसाल थी, अब सचिवालय है। नगर में अनेक बड़े-बड़े बाग हैं। दो बहुत ही भव्य संग्रहालय हैं। इनमें बेशुमार चीजें हैं, जिन्हें दुनिया के हर कोने से खरीदा गया है और खरीदते समय कीमत की कोई परवा नहीं की गयी है। कुछ बड़ी बेशकीमत ईरानी-राजस्थानी मुगल तस्वीरें और कालीन हैं। उस्मान सागर और हिमायत-सागर वहाँ को प्रसिद्ध झीलें हैं।

कुतुबशाही बादशाहों के मक़बरे थोड़ी दूर पर हैं। गोलकुण्डा का प्रसिद्ध किला वीरान पड़ा है; पर दूर-दूर से लोग उसे देखने जाते हैं। हैदराबाद से कोई ८२ मील दूर समुद्र के धरातल से लगभग सवा दो हजार फुट ऊँचा बीदर का पहाड़ी कस्बा है, जहाँ बहमनी राजाओं की खूबसूरत इमारतों के खँडहर हैं। हैदराबाद का राज्य प्राचीन इमारतों, मन्दिरों और स्थानों से भरा पड़ा है। परमानी जिले के औंढ में नागनाथ

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

का मन्दिर है, वारंगल जिले में पालम्पेट का विशाल मन्दिर है, रामपुर जिले में इट्गी में महादेव का मन्दिर है और निजामाबाद के देशपल्ली में विष्णुमन्दिर है। नागनाथ का मन्दिर मैसूर के प्रसिद्ध हलेविद वाले मन्दिर से मिलता-जुलता है। मुस्लिम कला के भी कुछ अत्यन्त सुन्दर नमूने उस राज्य में हैं। गुलबर्गा की जामा मस्जिद की छत का रकबा ३६७२० फुट है। दौलताबाद की चाँद मीनार २१० फुट ऊँची और आधार पर ७० फुट गोल है। बीदर में महमूद गवाँ का मदरसा दर्शनीय है और स्वयं हैदराबाद की १५४६ की बनी चार मीनार अपने तरह की इस देश में अनूठी इमारत है।

हैदराबाद राज्य में ही प्रसिद्ध अजन्ता और एलोरा की गुफाएँ हैं। दौलताबाद, बीदर; गोलकुण्डा आदि भी उसी में हैं। मुगलों के साम्राज्य के पतन के बाद हैदराबाद की निज़ामत मरहठों को छोड़ दखिन की सभी रियासतों से शक्तिमान हो गयी थी। यह राज्य एक ओर आन्ध्र और मद्रास से, दूसरी ओर मैसूर से, तीसरी ओर बम्बई से और चौथी ओर मध्यप्रदेश-बराड़ से लगा हुआ है। आबहवा अधिकतम नम है। राज्य के अनेक स्थानों में दस्तकारी का अद्भुत काम होता है; विशेषकर धातु पर बीदरी काम तो सर्वत्र प्रसिद्ध है।

विजयनगर

निजाम रेलवे से होस्पेट जंकशन से नौ मील पर हम्पी है जहाँ प्राचीन विजयनगर के भग्नावशेष अनन्त निद्रा में सोये हुए हैं। वह नगर कभी विजयनगर के साम्राज्य की

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

राजधानी था। कभी उस साम्राज्य का सारे दक्षिण पर साका चलता था जैसे पठान उत्तर में प्रबल थे वैसे ही विजय-नगर दक्षिण में प्रबल था। पिछले मध्यकाल में वह अकेला हिन्दू साम्राज्य नये आनबान से खड़ा हुआ था और कृष्ण कावेरी के कोठों में उसकी वही सत्ता थी जो कभी प्राचीन आन्ध्र सातवाहनों की रही थी। सोलहवीं सदी के मध्य दकन की मुस्लिम रियासतों ने मिलकर उसका नाश किया और उस साम्राज्य के सूबे आपस में उन्होंने बांट लिये। विजयनगर भी नष्ट कर दिया गया।

अब हम्पी में जो खँडहर हैं उनमें उस महान् नगर के वैभव और विशालता का कुछ अन्दाज़ लगाया जा सकता है। लगाता है जैसे वह स्थल खुले आकाश के नीचे निर्भवन संग्र-हालय हो। नौ वर्गमील के विस्तार में नगर उसके भवनों और मन्दिरों के भग्नावशेष फैले हुये हैं। विशेषकर विठ्ठल-मन्दिर और साम्राज्य का हथिसार तो असाधारण इमारतें रही हैं।

: : : : : :

इस बीच के देश की मिट्टी अनेक स्थलों पर नितांत उर्वर है। विन्ध्याचल और सतपुड़ा पहाड़ उत्तरी भाग में दंडाकार पड़ा है। विन्ध्याचल पूरब-पच्छिम दोनों ओर उत्तर की ओर उठ गया है। उसका पश्चिमी हिस्सा पारियात्र राजपूताने में अरावली कहलाता है। विन्ध्याचल की दखिनी ढाल पर नर्मदा की घाटी में और सतपुड़ा के ऊँचे पठार पर गेहूँ के खेत लहलहाते हैं। नागपुर के आसपास की काली

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

मिट्टी कपास की खेती के लिये बड़े काम की है। कपास के खेतों का सिलसिला सीधे बंबई और गुजरात तक चला गया है।

विन्ध्याचल और गोदावरी के बीच की भूमि दकन है। कृष्णा से दखिन का देश ठेठ दक्षिण है। नर्मदा और ताप्ती उसके उत्तरी भाग की नदियाँ हैं, गोदावरी दखिनी प्रदेशों की। नर्मदा के ही तीर माहिष्मती नगरी थी, जहाँ प्राचीन काल में सहस्राबाहु राजा हुआ। बाद को वहाँ त्रिपुरी के कलचुरियों ने राज किया। विन्ध्याचल और ठेठ दक्षिण के बीच की इस भूमि पर चालुक्यों, राष्ट्रकूटों और परमारों ने भी राज किया था। इस इलाके में वनों का बड़ा वैभव है और उनकी अटूट परम्परा नेत्रों को बड़ा सुख देती है।

दक्षिण का देश

दक्षिण का देश द्रविड़ संस्कृति का इलाका है, अधिकतर गोदावरी से दक्षिण का। इसमें मैसूर, कर्नाटक, मद्रास और मालाबार के प्रदेश शामिल हैं, सुदूर दक्षिण या समुद्र तीर-स्थित त्रावणकोर-कोचीन तक।

दक्षिणभारत बड़ा घना आबाद है, भूमि बड़ी उर्वर है। मालाबार की हरियाली वर्णनातीत है। बीच में चन्दन, एला, लवंग, मिर्च, सागौन और पान के जंगल हैं। तटवर्ती देश नारियलों से श्यामायित रहता है। अनेक जलधाराएँ प्रदेश से होकर बहती हैं, समुन्दर का जल घूम-घूमकर देश के भीतर आ जाता है। कभी वहाँ के गरम मसालों ने रोमको अपना

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

ऋणी बना लिया था। बीच में मैसूर है, चंदन और घने जंगलों का देश, हाथियों और दूसरे जानवरों से भरा ! जहाँ की दस्तकारी अनेक दिशाओं में बेजोड़ है। पूरब में मद्रास का कारोमंडल-तट है। नीलगिरि हरे जंगलों से सहसा उठ आया है और ऊटकमंड, कुनूर और कोटगिरि ग्रीष्मकाल में अत्यन्त आकर्षक हो उठते हैं। मलाबार का तट प्राकृतिक सौन्दर्य में इस देश में अपना सानी नहीं रखता। वहाँ का मलयानिल उत्तर के हिमालय में बस गया है। मलाबार का दूसरा नाम केरल है, जो बम्बई से दक्षिण का देश है।

दक्षिण के इस देश पर पांड्यों, चोलों, चेरों (केरलों), पल्लवों, गंगों आदि ने कभी शासन किया था। पांड्यों की सेना में तो कभी रोम के सैनिक भी भरती होते थे। तंबर-वरी (ताम्रपर्णी) नदी के मुहाने से जो मोती निकाले जाते थे, रोम के छैले और महिलाएँ उन पर दीवाने हो जाते थे। उस देश को उसके राजाओं और श्रीमानों ने विशाल मन्दिरों से भर दिया। उत्तर और दक्षिण के मन्दिरों में बड़ा अन्तर है। उत्तर के मन्दिर अपने धरहरे सौन्दर्य-विमान-शिखर, अलंकरणों और मूर्तियों की दमखम के लिए प्रसिद्ध हैं। दक्षिण के मंदिर अपने अनेक-मंजिली गगनचुम्बी विशालता, आँगनों, प्रांगणों, गोपुरद्वारों, सरोवरों, रथों और अलंकरणमूर्तियों की अनन्य परम्परा के लिए विख्यात हैं। नीचे हम उस प्रदेश के विविध भागों का वर्णन करेंगे।

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

मद्रास

कलकत्ता और बम्बई दोनों से पुराना है मद्रास। उसकी अनेक इमारतें १५०० ई० के आसपास की हैं। लम्बाई-चौड़ाई और आबादी के विचार से वह देश का तीसरा नगर है। यह काफी फैला हुआ शहर है। और फैलने के लिए उसके आसपास बड़ी जमीन है। उत्तर के व्यापारिक भाग और बन्दर से दखिन बसे मुहल्लों और अडयार तक सागर के किनारे मद्रास आठ मील लंबा चला गया है। सागर-तट बहुत ही सुन्दर है। बालू का सागरवर्ती मैदान बड़ा सुहावना लगता है। मारीना का यह समुद्रतट, नैपियर ब्रिज (पुल) से, पुरानी सानतोम (सन्त टामस) के रोमन कैथोलिक कैथीड्रल (गिरजा) तक चला गया है। यह गिरजा सन् १५०४ ई० में पुर्तगालियों ने बनवाया था। मारीना के बराबर अनेक विशाल अट्टालिकाएँ उठती चली गयी हैं। फोर्ट सेन्ट जार्ज के भीतर १६४० का बना सन्त मेरी का गिरजा भारत का सबसे पुराना प्रोटेस्टेन्ट देवालय है। मद्रास में हिन्दू मन्दिर भी अनेक हैं। इनके अतिरिक्त अन्य दर्शनीय स्थानों में एक तो १६० फुट ऊँचा प्रकाश-स्तम्भ है, जहाँ से समूचे नगर को देखा जा सकता है। ला कालेज और संग्रहालय भी देखने योग्य हैं। विक्टोरिया इन्स्टीट्यूट में दक्षिण भारत की दस्तकारी के नमूने प्रदर्शित हैं। पास ही दखिन की ओर अत्यन्त आकर्षक वातावरण में अडयार है, थियोसोफिकल सोसाइटी का प्रधान केन्द्र। सोसाइटी के वार्षिक अधिवेशन में भाग लेने

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

संसार के कोने-कोने से थियोसोफिस्ट आते हैं। कला और सुरुचि उस भाग में जैसे केन्द्रित हो गयी है।

महाबलिपुरम्

पास ही महाबलिपुरम् का प्राचीन नगर है, मद्रास से पैंतीस मील दखिन, समुद्र के किनारे। सागर-तट पर ही पहाड़ों में कटे विशाल मन्दिर हैं, दक्षिण भारत के अनमोल शिल्पस्थान। अकेली चट्टान में बने मन्दिर, गुफा-मन्दिर, अकेले पत्थर की बनी मूर्तियाँ, वास्तु की असामान्य परम्परा जैसे उठती चली गयी है। पल्लव नरेशों की कीर्ति की यह निशानी है धर्मराज-रथ, जिसे योरोपीय पंडित 'सात पगौडा' कहते हैं। नरसिंह वर्मन प्रथम महामल्ल ने सातवीं सदी में अपने नाम पर इस नगर का निर्माण किया था और उसके मन्दिरों की यह विपुल राशि खड़ी की थी।

कांजीवरम्

कांची या कांजीवरम् पल्लव नरेशों की राजधानी थी। उनके धन और वैभव के कारण उसका यह स्वर्णनगर नाम पड़ा। उसने सारे दक्षिण पर कभी राज किया था। कांची के दो भाग हैं—एक का नाम विष्णुकांची है. दूसरे का शिव-कांची। अर्थ नाम से ही प्रगट है। सातवीं सदी में चीनी यात्री हुयेनत्सांग ने वहाँ जाकर वहाँ का हाल लिखा था। बौद्ध, जैन और हिन्दू, तीनों धर्म बारी-बारी से वहाँ प्रबल हुए। सदियों अपनी-अपनी प्रधानता के लिए उनमें संघर्ष हुआ।

नगर में मन्दिर भरे पड़े हैं। एक जैन-मन्दिर वहाँ

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

बारहवीं-तेरहवीं सदी का है। पल्लव राजाओं के बनवाये विष्णु और शिव के मन्दिर और प्राचीन हैं। शिव का मन्दिर बड़ा विशाल है, उसके एक हाल में ५४० समलंकृत स्तंभ लगे हैं। नगर से दो मील दूर लघुकांची है, जहाँ वरदराज स्वामी का मन्दिर अपने आकर्षक स्तम्भों के लिए सारे दक्षिण में विख्यात है।

त्रिचनापल्ली

त्रिचनापल्ली या त्रिचुरपल्ली का विशाल मन्दिर पहाड़ काटकर बना है। उसके निर्माता भी पल्लव-नरेश ही थे। वहाँ का किला अकेले पहाड़ पर निरावृत खड़ा है।

श्रीरंगम्

त्रिचनापल्ली से दो मील उत्तर कावेरी की धारा में बने द्वीप पर श्रीरंगम् बसा है। श्रीरंगम् अपने विशाल मन्दिर के कारण विख्यात हुआ। वहाँ का विष्णुमन्दिर दक्षिण भारत के मन्दिरों में सबसे विशाल है। मन्दिर वह रंगनाथ-स्वामी का है जिसके हाल में हजार खंभे लगे हैं। नगर मन्दिर के चारों ओर वर्गाकार बसता चला गया है। श्रीरंगम् से मीलभर पूरब जाम्बुकेश्वर नाम के शिव का मन्दिर है।

मदुरा

मदुरा या मदुराई प्राचीन पांड्य राजाओं की राजधानी थी। विद्वानों का अनुमान है कि शायद यह मदुरा, मथुरा का ही नाम है, जो दक्षिण चला गया है। एक मथुरा या मधुरा जावा में भी है। रोम, ग्रीस और मिस्र के साथ कभी

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

मदुरा का बड़ा व्यवसाय था। सत्रहवीं सदी में वह नगर नायक राजाओं के प्रयत्न से और विख्यात हुआ। नायक राजा दक्षिणी भारत के मन्दिरों के असाधारण निर्माता थे। मदुरा को शिल्प-गौरव प्रदान करने वाले नायक ही थे, विशेषतः तिरुमलनायक।

मदुरा का मीनाक्षी का मन्दिर बहुत विशाल और भव्य है। उसका आकार बर्फीनुमा है। उसकी एक भुजा ८५० फुट है, दूसरी समानान्तर ७५० फुट। वह नौ गुपुरम्-शिखरों से अलंकृत है। इनमें से एक १५० फुट ऊँचा है। उसके हाल-कमरों की छत हजार खंभे उठाये हुए हैं और जगह-जगह मूर्ति-दल अकेली चट्टान में काटे गये हैं। वह मन्दिर कला, श्रम और सूझ का असाधारण नमूना है। कल्पना तक्षक की छेनी से मूर्त होती चली गयी है। मदुरा की दूसरी इमारतें तिरुमल-नायक की बनवायी हुई हैं। इनमें प्रधान उसका महल है, जो भवन-निर्माण के क्षेत्र में वहाँ अपना सानी नहीं रखता।

वास्तुशिल्प के अतिरिक्त मदुरा अपनी दस्तकारी के लिए भी काफी प्रसिद्ध है। लकड़ी का जालीदार काम और करघे के वस्त्र वहाँ बहुत अच्छे बनते हैं।

रामेश्वरम्

पाक मुहाने पर एक पथरीले टापू पर हिन्दुओं का विख्यात तीर्थ रामेश्वरम् या सेतुबन्धरामेश्वरम् बसा है। वहाँ से लंका तक पहाड़ी चोटियों का सिलसिला सागर में उठता चला गया है, जिससे उसके सेतु होने का आसानी से

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

आभास होता है। लोगों का विश्वास है कि पत्थरों का यही पुल बन्दरों से बँधवा कर रावण से सीता का उद्धार करने राम लंका गये थे। रामेश्वरम् के एक छोर धनुष्कोटि से स्टीमर लंका के लिए बराबर छूटते रहते हैं और कुछ ही घंटों में वहाँ पहुँच जाया करते हैं।

रामेश्वरम् में भी अनेक मन्दिर हैं। भारत के पवित्रतम तीर्थों में से होने कारण स्वाभाविक ही वहाँ सदियों से मन्दिर बनते आये हैं। प्रधान मन्दिर शिव का है और अपनी पावनता के लिए प्रसिद्ध है। कहते हैं कि वहाँ का शिवलिंग राम ने स्थापित करके पूजा था। मन्दिर अत्यन्त विशाल और दक्षिण के प्रधान मंदिरों में से है। मन्दिर चौकोन बना है, जिसकी लम्बाई १००० फुट है और चौड़ाई ६५० फुट। उस मन्दिर में करोब ४००० फुट लम्बा ढका बरामदा चला गया है जिसमें दोनों ओर अत्यन्त सुन्दर और विशाल अलंकृत खंभों की कतार दूर तक चली गयी है।

मैसूर

मैसूर प्रदेश में आदिम जङ्गल बड़े सुन्दर हैं, वैसे ही उसके नगर और मन्दिर भी। सारा प्रदेश दो से तीन हजार फुट ऊँचे पठार पर बसा है, जिससे हवा बहुत गर्म नहीं हो पाती और वातावरण सुन्दर खुशनुमा बना रहता है। प्राय: सभी नगरों के बाहर वन हैं और उनकी गहरो श्यामलता का सौन्दर्य देखते ही बनता है।

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

मैसूर दूर प्राचीनकाल में घना आबाद होगा; क्योंकि अशोक ने अपने अभिलेख घनी आबादियों में ही स्थापित किये थे। मैसूर में उसके तीन लघु शिलालेख मिले हैं। अशोक के शीघ्र बाद का उसका इतिहास तो मालूम नहीं; पर पीछे कदम्ब और होयसल राजकुलों और विजयनगर के राजाओं ने उस पर राज किया था, यह असन्दिग्ध है। जब उत्तर भारत में गुप्त सम्राट् राज कर रहे थे, तभी कदंबों ने भी मैसूर में राज किया था। इसी कुल के एक राजा के यहाँ, संस्कृत साहित्य की परंपरा के अनुसार, महाकवि कालिदास राजदूत बनाकर भेजे गये थे। लौटने पर उन्होंने अपने "कुन्तलेश्वर दौत्य" नामक काव्य की रचना की थी, जो आज उपलब्ध नहीं है। होयसल राजाओं ने अधिकतर मध्यकाल में राज किया। ग्यारहवीं सदी से तेरहवीं सदी तक के वहाँ के शिल्पकार मैसूर के ही नहीं, वरन् समूचे भारत के गौरव बन गये हैं। उनके बनाये मन्दिरों की महिमा असाधारण है, उनके अलंकरण और शिल्प-सौन्दर्य दर्शनीय हैं। मन्दिरों परके कटाव, उत्खचन और उभार असामान्य प्रौढ़ता से सम्पन्न हुए हैं। सोमनाथपुर, बैलूर और हलेविद के मन्दिरों को देखकर तो दर्शक उनके निर्माताओं के धन-व्यय और अध्यवसाय तथा कलावन्तों की कल्पना और कौशल से चकित रह जाता है।

मैसूर में कुछ व्यावसायिक उद्योग भी भारत में बेजोड़ और सर्वथा उसके अपने हैं। उसके कौलार की सोने की

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

खानों से आज करीब पाँच हजार साल से सोना निकाला जा रहा है। पंडितों का विचार है कि मोअन्जो-देड़ो की सिन्धु-सभ्यता में काम आने वाला सोना वहीं से आता था। इस प्रकार यह खान संसार के प्राचीनतम खुदने वाली खानों में से है। बंगलोर का हिन्दुस्तान-वायुयान-कारखाना और मैसूर का चन्दन के तेल का कारखाना भी इस देश में अपने-जैसे अकेले ही हैं। इसी प्रकार भद्रावती का लोहे का कारखाना जमशेदपुर के टाटा के कारखाने से मुकाबला करता है। रेशम और साबुन वहाँ अपरिमित मात्रा में बनते हैं। देश के बहुत कम प्रान्तों में उद्योग-धंधे उस परिमाण में चलते हैं, जितना कि मैसूर में। लोगों में साक्षरता भी जितनी वहाँ है, उतनी शायद त्रावणकोर-कोचीन को छोड़ अन्यत्र कहीं नहीं है। इस दिशा में उसका स्थान भारत में दूसरा है।

बंगलोर मैसूर की राजधानी है, पहले वहाँ के राजा की राजधानी मैसूर नगर में थी। बंगलोर, अनेक लोगों की राय में, भारत का सबसे सुन्दर नगर है। खूब खुला हुआ, प्रायः प्रत्येक मकान के साथ कुछ खुली जमीन है। नये सिरे से नयी योजना के अनुसार बना नया नगर है। ऊँची इमारतों, चौड़ी छायेदार सड़कों, पार्कों, बगीचों और मनुष्य की बनाई झीलों से भरा! चामराज सागर मानव-श्रम से निर्मित बड़ी झील है, जिससे नगर को पीने का पानी मिलता है। झील नगर से बाईस मील पर है, वहाँ सड़क से आसानी से पहुँचा जा

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सकता है। देखने की चीज़ है। नन्दी गिरिनगर है, पौने पाँच हजार फुट की ऊँचाई पर बसा, गर्मियों में रहने के लिए उपयुक्त। नन्दी तक रेल्वे लाइन और एक मोटर रोड चली गयी है।

मैसूर के महाराजा (राजप्रमुख) बंगलोर से मैसूर जाने वाली रेलरोड के मडुर स्टेशन से तीस मील पर रहते हैं। वहाँ शिवसमुद्रम् नाम का प्रसिद्ध झरना है। कावेरी का जल वहाँ दो धाराओं में बँट जाता है और नदी वहाँ अनेक झरने बनाती प्रायः २०० फुट नीचे गिरती है, सौन्दर्य घना हो जाता है और उसकी घनता चारों ओर की वन-श्यामलता से दुगुनी हो जाती है। वनों का सौन्दर्य तो मैसूर में वैसे भी अकथनीय है; पर उस प्रपात की पृष्ठभूमि में तो वर्णन के परे हो जाता है। उस झरने से शिवसमुद्रम् में बिजली निकाली जाती है। बिजली निकालने का स्टेशन खासा बड़ा है।

मैसूर स्वयं उपवन-नगर है। चामुंडी पहाड़ी के पास खड़ा नगर आकर्षक चौड़ी सुथरी सड़कों और विशाल भवनों का धनी है। किले के भीतर का राजभवन भारत के सुन्दर-तम महलों में से है। मैसूर दशहरे के दिनों में खूब सजता है और वह त्यौहार राज्य की ओर से बड़े पैमाने पर मनाया जाता रहा है। दस दिनों तक वहाँ बड़ी रौनक रहती है और दसवें दिन महाराजा का हाथी पर जुलूस निकलता है। गजराज पर चढ़ा सोने का हौदा बड़ा भव्य लगता है। ऊँट, हाथी, घोड़े, पालकी और चाँदी की बग्घियाँ, झंडे लिये दंडधर सोने-चाँदी

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

के पहनाओं से सजे दर्शकों की आँखें चौंधिया देते हैं। रात को दिन की तरह उजेला कर देने वाली रोशनी में सेना का निरीक्षण होता है। मैसूर घूमने के लिए दशहरे से अच्छा अवसर नहीं। आबहवा भी खुशनुमा होती है।

मैसूर से कृष्णराज सागर, सोमनाथ पुर, श्रीरंगपत्तन (सेरिंगापत्तम) और मेल कोटे देखने जाना सुगम है। कृष्ण-राजसागर तो केवल दस मील पर ही है। जल—उसके फैले विस्तार—का क्षेत्रफल ५० वर्गमील है। अत्यन्त आकर्षक डास झील के बाँध के बराबर छायादार सड़कें चली गयी हैं, पार्कों और बगीचों की परम्परा उसे और भी उल्लसित करती है। झरनों की अटूट बूंदें वातावरण को निरन्तर शीतल करती रहती हैं, और फूलों के अनन्त सौरभ से हवा महमह बनी रहती है। प्रकृति और मानव-सूझ और श्रम का इतना सुंदर योग इस देश में तो बहुत ही कम स्थलों पर देखने को मिलता है।

सोमनाथपुर का गौरव भी अमित है। यह शालीन मन्दिर अपनी पुरातन सजधज में खड़ा है। मन्दिर-शिल्प में सुइ-कारी बेसर-कला के मन्दिरों में प्रधान माना जाता है यह सोमनाथपुर का मन्दिर! और इसका प्रमाण भी कि गोदावरी और विन्ध्याचल के बीच की भूमि में ही बेसर प्रकार के मंदिरों का विस्तार नहीं है, वे दूर दक्षिण तक भी चले गये हैं, जैसे उत्तर में भी दूर तक। वैसे बेसर कला उत्तर के मन्दिरों की नागर और दक्षिणी मन्दिरों की द्राविड़ कला के मिश्रण से

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

बनी है। उनका प्लान (विशेषतः सितारानुमा नींव, नागर है और शिल्प-कार्य मुख्यतः द्राविड़-खिर) छोटा गुम्बज। सोमनाथपुर का यह मंदिर होयसल राजाओं को कीर्ति-कथा है।

श्रीरंगपत्तन मैसूर से केवल ग्यारह मील पर है। कावेरी के जल के बीच जो एक टापू बन गया है, उसी पर वह सुन्दर गढ़ बना है। टीपू सुल्तान ने उसका उपयोग किले के रूप में किया था। मेलकोटे वहाँ से बीस मील दूर है। उसी स्थान में स्वामी रामानुज ने निवास किया था जिससे मेलकोटे अब वैष्णवों का तीर्थ बन गया है।

हसन से श्रावण बेलगोला, बेलूर और हलेविद जाते हैं। हसन को रेल और सड़क दोनों जाती है। मैसूर की ये तीनों जगहें यात्री के लिए तीर्थ-सी हैं। मैसूर जाने वाले को इन्हें बगैर देखे लौटना बड़ा अभाग्य है। श्रावण बेलगोला की एक पहाड़ी पर एक ही चट्टान में कटी दुनिया की सबसे बड़ी मूर्ति खड़ी है, ६० फुट ऊँची। मूर्ति जैनियों के सन्त गोमतेश्वर की है जो सन् ८९३ में बनी थी, आज से प्रायः हजार साल पहले। श्रावण बेलगोला की ऐतिहासिक गरिमा एक और है। कहते हैं कि मगध (पाटलिपुत्र) का चन्द्रगुप्त मौर्य चाणक्य की रक्तरंजित प्रसार-नीति से ऊबकर जैन हो गया था और जब उत्तारभारत में अकाल पड़ा तब वह जैनाचार्य भद्रबाहु के साथ उसी श्रावण बेलगोला में आकर रहा था। वहाँ की एक गुफा उसका निवासस्थल बतायी जाती है।

बेलूर का विशाल मन्दिर आज से करीब नौ सौ साल

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

पहले बना था। होयसलों की शिल्पकारिता की वह भी अक्षय कीर्ति है। बेलूर का यह मंदिर कल्पना और शिल्प-सौन्दर्य के नाते अनुपमेय है। इसके निर्माता कलावन्त धातु में महीन कार्य करने वाले कारीगर बन गये हैं। उस मंदिर में इतना कटाव हुआ है, मूर्तियों की इतनी प्रचुरता है कि देखते आँखें थक जाती हैं। और हलेविद की वास्तु-परम्परा तो अपनी दिशा में हिन्दू-कला की बेजोड़ मिसाल है। इस परंपरा के प्रधान मंदिर होयसलेश्वर और केदारेश्वर हैं। होयसलेश्वर तो अभी बन भी नहीं पाया था कि उसे छोड़ देना पड़ा। अगर यह मंदिर पूरा हो गया होता तो संसार की संग-तराशी का अनुपम नमूना होता। फिर भी जितना है, वह भी कुछ साधारण नहीं। इतनी अगणित डिजाइनों में कहीं भी एक सी दो नहीं, कहीं कोई कल्पना दुहरायी न गयी और कल्पना जितनी मूर्त हो सकती है कलावन्तों ने उसे उतनी कर दिया है। मानव-विश्वास और भक्ति का रूप उसमें निर्बन्ध खुल पड़ा है, मनुष्य के हृदय की समूची मिठास उसकी दीवारों पर अविरल बह गयी है। हलेविद का यह शिल्प-परिवार कला के माथे तिलक है।

हसन से थोड़ी ही दूर पर तुङ्गा नदी के किनारे शृंगेरी में वह पावन मठ है, जिसे आदि शंकराचार्य ने स्थापित किया था। तालिकेड़े से तलगुप्पा को रेल गयी है, वहाँ से सात मील की दूरी पर ही गेरसोप्पा (जोग) का प्रसिद्ध झरना है, जिसकी चौड़ाई २५० गज है! शरबती नदी वहाँ से ८३० फुट नीचे

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

उतर पड़ती है। यह उतार ऊपर-नीचे चार झरनों के जरिये हुआ है। उनके नाम हैं—राजा, रोरर (गर्जनशील), राकेट और रानी। इन झरनों का सौन्दर्य-निरीक्षण के अतिरिक्त वहाँ मुनासिब उपयोग भी किया गया है। उनसे बिजली निकाली जाती है। बिजली के उस कारखाने का नाम "महात्मा गांधी हाइड्रो इलेक्ट्रिक वर्क्स" है।

मैसूर के जंगलों में चंदन के वृक्ष तो हैं ही, वनैले जानवर भी कुछ कम नहीं है। शेर, चीते, भैंसे, रीछ, हाथी सभी हैं। बनैले हाथी वहाँ झुण्ड के झुण्ड फिरते हैं और हेग्गडवनकोटे के प्रसिद्ध जंगल में उन्हें परचाकर पकड़ने का भी काम होता है। इसीसे चन्दन की चीजों के व्यापार के साथ-साथ ही हाथी-दाँत की चीजों का रोजगार भी मैसूर में कुछ कम नहीं है।

कोदाई केनाल

इसी दक्षिण के पूरबी पहाड़ों पर प्रसिद्ध गिरिनगर कोदाई केनाल है, समुद्र के धरातल से प्रायः ७,००० फुट ऊँचा। वहाँ की झील तीन मील के दायरे में है और एक सुन्दर मोटर-रोड उसका घेरा करती है। गर्मियों में प्रायः सारे दक्षिण से लोग वहाँ सुख-शान्ति के दिन बिताने चले जाते हैं और कम-से-कम चार महीने तो वहाँ बड़ी रौनक रहती है। वहाँ की आकर्षक जगहों में तीन तो झरने हैं, जहाँ बड़ी सुगमता से पहुँचा जा सकता है। वहाँ का कोकर्स-वाक घूमने की बड़ी सुंदर जगह है। पास ही नक्षत्रों की गति-

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

विधि देखने के लिए एक बेध-शाला भी है। जिन्हें शिकार का शौक है, उन्हें पास के जंगलों में बड़े-छोटे शिकार आसानी से मिल जाते हैं। कोदाई केनाल की ऊँचाई मंसूरी से कुछ अधिक ही है और यद्यपि हिमालय की पर्वतमालाओं की अनवरत गरिमा वहाँ नहीं है फिर भी प्रकृति का श्यामल वैभव वहाँ कुछ कम नहीं है।

ऊटकमंड

ऊटकमंड जिसे प्यार से लोग "ऊटी" भी कहते हैं, दक्षिण भारत की गैरसरकारी ग्रीष्म-राजधानी रही है। ऊँचाई उसकी शिमले से भी अधिक है, ७५०० फुट, और वह भी समतल भूमि है। ऊटी फैले पठार पर बसा, लगता है, जैसे दूर तक फैला हरा-भरा पार्क हो। नीलगिरि के हृदय की वह अभिराम और पर्वत की नीलाभ कान्ति मन को मोह लेती है। उसके उत्तर-पच्छिम के भाग दूर-दूर तक नीचे उतरते चले गये हैं। पच्छिम-दखिन और दखिन-पच्छिम में हरियाली से ढकी ऊँची खड़ी पहाड़ियाँ हैं। ऊटकमंड भूमध्य रेखा (इक्वेटर) से केवल ग्यारह डिग्री की दूरी पर है; लेकिन उसकी जलवायु ठंढी है, जैसे इंग्लैंड की गर्मियों में रहती है।

कूनूर और कोटगिरि नीलगिरि के दूसरे खुशनुमा गिरि-नगर हैं। जहाँ लोग अपनी गर्मियाँ बिताने जाते हैं। थोड़ी दूर पर नीचे मैदान में प्रसिद्ध कोयम्बटूर है, जहाँ गन्ने की खेती में नये-नये प्रयोग किये जाते हैं। वहीं से पालघाट और ऊटकमंड को रेल जाती है। मद्रास से कालीकट-मला-

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

बार जानेवाली रेल उधर से ही गुजरती है। उधर ही कुर्ग का इलाका है। उत्तर में मैसूर और उत्तर-पूरब में कर्नाटक-मंगलोरा। पालघाट से होकर ही सेनाएँ प्राचीन काल में पूरब-पच्छिम आती-जाती थीं। दक्षिण का काल्पनिक विजय करने वाली कालिदास के रघु की सेनाएँ पूर्व की ओर से अपरान्त और केरल की ओर उसी राह गयी थीं। उसी राह कुछ इतिहासकारों का मत है, शायद गुप्त-साम्राज्य के प्रबल निर्माता और चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य के पिता सम्राट् समुद्रगुप्त की सेनाएँ भी गयी थीं।

उसके पच्छिम केरल देश है, मलाबार, कालीकट से कुमारी अन्तरीप तक, जिसके सन्दर्भ से हमारा साहित्य भरा है, और जिसकी मलय-वारि के सौरभ से हम उत्तर में भी वंचित नहीं। एक ओर सह्याद्रि दर्दुर आदि की पर्वत-शृंखला समाप्त होती है, दूसरी ओर नीलगिरि-मलय आदि की आरंभ होती है।

मलाबार

मलाबार पच्छिम समुद्रतट का प्रदेश है, जैसे कारोमंडल "चोड़-मंडल" पूरबी समुद्रतट का। मलाबार का प्राचीन नाम केरल है। उस केरल या मलाबार में तीन भाग आज शामिल हैं—दक्षिण कुमारी अन्तरीप तक का त्रावणकोर, उत्तर का पहले वाला कालीकटवर्ती ब्रिटिश मालावार और दोनों के बीच का कोचीन। अब ब्रिटिश मलाबार मद्रास प्रान्त में है और त्रावणकोर कोचीन की पुरानी रियासतें

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

मिलाकर त्रावणकोर कोचीन का संयुक्त प्रान्त बना दिया गया है, जिसकी राजधानी समुद्रतटवर्ती त्रिवेन्द्रम् है ।

भारत के इस नयनाभिराम भूभाग ने संसार को गरम मसाला खाना सिखलाया । उससे मानवजाति की आहार-रुचि में कितना क्रान्तिकारी परिवर्तन हुआ है, कहना न होगा । आहार के क्षेत्र में जो स्थान नमक का है, प्राय: वही गरम मसालों का भी है । मलाबार गरम मसालों की भूमि है । उन्हें उत्पन्न करने वाले जंगलों से वह प्रदेश भरा हुआ है । कभी रोम को मलाबार के समुद्र तट से गरम मसालों से भर-भर जहाज जाया करते थे। इतिहासप्रसिद्ध बात है कि पश्चिमी गौथो के सरदार अलरिक ने जब रोम पर अधिकार कर लिया तब उस अमर नगर को मुक्त करने के एवज में रोम के श्रीमानों ने अलरिक से धन की मात्रा पूछी । तो विजेता ने भारत की साढ़े सैंतीस मन काली मिर्च माँगी । इस प्रकार उस मलाबार के काली मिर्च के मोल रोम का वह समृद्ध नगर बिका । मिर्च के जंगलों का कालिदास ने भी बड़ा मनोरम वर्णन किया है । लिखा है कि उन जंगलों में अगणित तोते रहते हैं, जो मिर्च के पेड़ से टूटते दाने को बीच अधर में ही अपनी चोच में लोक लेते हैं, जमीन पर गिरने नहीं देते ।

मलाबार को जलवायु नम है, गर्मियों में बहुत गर्मी नहीं पड़ती और सर्दियों में बहुत जाड़ा नहीं पड़ता । बरसात काफी होती है जो आबहवा को नम कर देती है । प्राकृतिक

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दृश्य अत्यन्त आकर्षक है, ऐसा सौंदर्य इस देश में अन्यत्र नहीं। कोचीन-कोट्टयम के देहात में झीलें और नहरें भरी पड़ी हैं, समुद्र का पानी भी अनेक स्थानों में नगरों और गाँवों के पीछे आ गया है। अक्सर गाँवों के ताड़ की पत्तियों से छाये घर नारियल और केलों की झुरमुटोंमें छिपे रहते हैं। वहाँ से त्रिवेन्द्रम् कुमारी अन्तरोप तक अधिकतर यातायात जलमार्ग से है। नहरों और जलधाराओं की जैसे सड़कें ही बन गई हैं। उनके साथ-साथ ही भूमि के आखिरी छोर तक पच्छिमी घाट की पहाड़ियों का अटूट सिलसिला सागर तक चला गया है।

त्रावणकोर-कोचीन की विशेष खूबी उसका विपुल वन-वैभव है। आसमान के नीले चन्दोवे-तले वृक्ष-लताओं की घनी श्यामल हरियाली है और नीचे सुर्ख जमीन की सुधराई है। हवा मसालोंके वन-उपवनों से सुरभित रहती है। पर्वत-माला का ऊँचा प्रसार पेरियर कहलाता है, जिसकी चोटियाँ ५००० से ८००० फुट तक उठती चली गई हैं। सोते और धाराएँ, चट्टानों के नीचे से लगता है, सहसा निकलकर दौड़ पड़ती हैं। नाटी पहाड़ियाँ घने आदिम जंगलोंसे ढँकी हैं जहाँ वृक्ष नाचती लताओं के सुकुमार पाश में बँध रहते हैं। इन लताओं में अधिकांश पान की हैं, जिनके अनेक स्थलोंपर जंगल ही निकल आये हैं। जंगलों में स्वतंत्र घूमने वाले हाथियों के झुंड हैं, भैंसे हैं, शेर, कालेचीते, रीछ और बनैले सुअर हैं। वहाँ की सरकार ने पेरियर झील के पास

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

हजार एकड़ जंगल घेरकर शिकारगाह बना दिया है, वहाँ झील में पानी पर तैरती नावोंसे यात्री जंगली जानवरों को पानी पीते बहुत पास से देख लेते हैं।

राज्य की राजधानी त्रिवेन्द्रम् आधुनिक नगर है और समुद्र से दो मील के भीतर ही बसा हुआ है। उसके नीचे की भूमि पठार है और ऊँची-नीची पहाड़ियोंपर आलीशान इमारतें, आकर्षक पार्क, बगीचे और चौड़ी सड़कें बनी हुई हैं। नगर में एक बड़ा संग्रहालय है। उस संग्रहालय और महल की चित्रशालामें अनेक सुंदर और बहुमूल्य चित्र हैं। पूरबी और पच्छिमी चित्रकला के संग्रह वहाँ बड़े महत्व के हैं।

त्रिवेन्द्रमसे करीब सात मील दखिन कोयलम् है, सागर-तट का नगर ! जहाँ सागर-स्नान की बड़ी सुविधा है। सागर-स्नान के शौकीन वहाँ अक्सर जाया करते हैं। वहाँ से तेंतीस मील दखिन पद्मनाभपुरम् है, त्रावणकोर की अनेक प्राचीन राजधानियों में से एक। महल की दीवारों पर उच्च स्तर के भित्तिचित्र हैं। पद्मनाभपुरम् से केवल बीस मील दखिन भारत वसुन्धरा का अन्तिम छोर प्रसिद्ध कुमारी अन्तरीप है, हिन्दुओं का प्रसिद्ध तीर्थ। इस प्रकार कश्मीर के शिखर कराकोरम से दक्षिणके चरण कुमारीवर्ती महासागर तक फैला हिन्द एक देश है।

त्रिवेन्द्रम् के उत्तर त्रिवलन् का प्राचीन बन्दर है, और उत्तर व्यापार-व्यस्त अलेप्पे का प्रसिद्ध बन्दरगाह है, जहाँ

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सामने से नहीं पीछे से सागर का पानी घूमकर आ गया है, वहाँ नाव या मोटर से पहुँचते हैं। अलेप्पे से भी उत्तर कोचीन का प्रसिद्ध बन्दर है, जहाँ से रबड़, लकड़ी, काली मिर्च, नारियल, हाथीदाँत और मालावार और पच्छिमोघाट की दूसरी चीज़ें देशावर भेजी जाती हैं। कोचीन के सामने ही सुंदर खाड़ी के पार समुद्र के द्वार पर ही एरणाकुलम् बसा है। एरणाकुलम् पहले की रियासत कोचीन की राजधानी था और अब त्रावणकोर-कोचीन राज्य का दूसरे नम्बर का नगर है।

और उत्तर कालीकट, माही और प्रायः मंगलोर गोआ तक मालावार की यह भूमि अपनी सुधराई निखारती चली गई है। कालीकट का राजा पहले समुद्रिन था, जिसे पुर्तगालियोंने जमूरिन कहा और वह नाम इतिहास में चल पड़ा। कालीकट में ही समुद्री राह से भारत का पता लगाने वाले वास्को दा गामा ने। अपने थके जहाज़ों के लंगर डाले थे वहीं के राजा से प्राचीन अरब सौदागरोंने इस देशके साथ व्यापार करने के परवाने लिये थे। उसी मालावार में भारतीय दर्शन और पाण्डित्य के परम गौरव स्वामी शंकराचार्य हुये।

भारत अपने इन्हीं विविध प्रान्तों से ऋद्ध महादेश है। उसके भूमाग पर हिम-धवल उन्नत पहाड़ों से लेकर सुरभित नीची घाटियाँ भी हैं, उर्वर सोना उगलते खेतों से लेकर रेगिस्तान के जलते मैदान भी हैं। इसी से इसकी जलवायु में यूरोप और सहारा दोनों की जलवायु का सम्मिलन है।

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

इसके इतिहास को संसार की अनेक जातियोंके पराक्रम और प्रयास का श्रेय मिला है पर इसकी सर्वांगीण संस्कृति एक है, इसकी विविधता में असाधारण एकता है ।

State Museum, Library, Lko.
3238
23.7.61
लखनऊ

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

हमारा शिक्षण-साहित्य

नाम पुस्तक	लेखक	मूल्य
१—बाल मनोविज्ञान और शिक्षा	डा० सीताराम जायसवाल	२-००
२—शिक्षा मनोविज्ञान दीपिका	,, ,, ,,	५-००
३—विज्ञान-शिक्षण	संपादित (रामरेणु लाहिड़ी)	०-५०
४—भारतीय-बाल-चित्रांकन	सुरेशचंद्र गर्ग	३-००
५—शिल्प निरूपण	,, ,,	२-५०
६—नयी तालीम में मौखिक निबन्ध-रचना	तरुण भाई	१-००
७—शिक्षा-दर्शन	संकलन	१-००
८—बेसिक-शिक्षा	चाँदनारायण हांगल	२-००
९—शिक्षा में खेलखिलौना	ब्रह्मदत्त दीक्षित	१-५०
१०—पाश्चात्य शिक्षा-शास्त्री	,, ,,	३-००
११—सरल व्याकरण और निबन्ध-रचना	सावित्री देवी वर्मा	१-००
१२—बेसिक एजूकेशन (अंग्रेजी)	यू० ए० आसरानी	२-५०
१३—बेसिक एजूकेशन (हिन्दी)	प्रेस में	
१४—बेसिक शिक्षा-सिद्धांत की रूपरेखा	नरेन्द्रबहादुरलाल श्रीवास्तव	५-००

सर्वोदय-साहित्य-प्रकाशन,

गोलघर, वाराणसी

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow